ISSN 2278-1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन

अंतिम जन

वर्ष-6, अंकः 9, संख्या-47 फरवरी 2024 मूल्यः ₹20

'बा'

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय

समिति के दो परिसर हैं- गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों से जुड़े दुर्लभ चित्र, जानकारियाँ और मल्टीमीडिया संग्रहालय (Museum) है। जिसमें प्रवेश निःशुल्क है।

दूसरा परिसर गांधी दर्शन राजघाट पर स्थित है। यहाँ 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' प्रदर्शनी, डोम थियेटर और राष्ट्रीय स्वच्छता केंद्र संग्रहालय (Museum) है।

दोनों परिसर के संग्रहालय प्रतिदिन प्रातः 10 से शाम 6:30 तक खुलते हैं।
(सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़ कर)

ISSN 2278A 1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-6, अंक: 9, संख्या-47
फरवरी 2024

संरक्षक
विजय गोयल
उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रधान सम्पादक
डॉ. ज्वाला प्रसाद

सम्पादक
प्रवीण दत्त शर्मा
पंकज चौबे

परामर्श
वेदाभ्यास कुंडू

प्रबन्ध सहयोग
शुभांगी गिरधर

रेखांकन
संजीव शाश्वती,

मूल्य : ₹ 20
वार्षिक सदस्यता : ₹ 200
दो साल : ₹ 400
पांच साल : ₹ 500

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23392796
ई-मेल : antimjangsds@gmail.com
2010gsds@gmail.com

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट,
नई दिल्ली-110002, की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के नहीं।
समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में ही विचाराधीन।

मुद्रक
पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092

इस अंक में

उपाध्यक्ष की कलम से... 2
सम्पादकीय 3
आपके खत 4
धरोहर
'बा' की दृढ़ता - *मोहनदास करमचंद गांधी* 5
भाषण
2047 तक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य- *नरेन्द्र मोदी* 9
विमर्श
बापू का रास्ता- *सोफिया वाडिया* 14
कर्मवीर गांधी- *गणेश शंकर विद्यार्थी* 19
अहिंसक खेती: कृषि परमो कर्म उत्तम खेती- *दिलीप चिंचालकर* 23
'बा' पर विशेष
कस्तूरबा गांधी: स्त्री प्रश्नों की अहिंसक यात्री- *डॉ. सुप्रिया पाठक* 27
स्मरण
बापू के अवसान की स्मृतियाँ- *संतोष बंसल* 32
सामयिक
मनोवृत्ति को बदलें- *सुबोध कुमार वर्मा* 36
खादी और गांधी- *डॉ. योगिता जोशी* 41
स्त्री विमर्श
भारत के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण जरूरी- *रंजना मिश्र* 43
कविता
नित्यानंद तिवारी की कविताएं 46
फोटो में गांधी 49
चित्रकारी 50
बाल कविता
बंदर की चल पड़ी दुकान- *लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव* 52
बचपन
रजनीकांत शुक्ल के पहेली गीत 54
बाल कहानी
जिज्ञासा- *भगवती प्रसाद द्विवेदी* 57
कुक्कू और अप्पू- *डॉ. सुधा जगदीश गुप्त* 60
गतिविधियाँ 62

धैर्यवान, शांत और आत्मनिर्भर-कस्तूरबा

महात्मा गांधी आजीवन भारत के लिए अहिंसक लड़ाई लड़ते रहे। इस लड़ाई में कस्तूरबा बराबर की भागीदार बनी रही। कस्तूरबा की मृत्यु पर सुभाष चंद्र बोस ने कहा, 'इस (कस्तूरबा) महान महिला को जो हिंदुस्तानियों के लिए एक मां की तरह थी, मैं अपनी विनम्र श्रृद्धांजलि अर्पित करता हूँ। इस शोक की घड़ी में मैं गांधी जी के प्रति गहरी संवेदना जाहिर करता हूँ। मेरा ये सौभाग्य था कि मैं कई बार श्रीमती कस्तूरबा के संपर्क में आया और इन कुछ शब्दों से मैं उनके प्रति अपनी श्रृद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा। वे भारतीय स्त्रीत्व की आदर्श थीं, शक्तिशाली, धैर्यवान, शांत और आत्मनिर्भर। कस्तूरबा हिंदुस्तान की लाखों बेटियों के लिए एक प्रेरणास्रोत थीं जिनके साथ वो रहती थीं और जिनसे वो अपनी मातृभूमि के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मिली थीं।'... 'दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के बाद से ही वो अपने महान पति के साथ परीक्षाओं और कष्टों में शामिल थीं। ऐसा करीब 30 साल तक चला। कई बार जेल जाने के कारण उनका स्वास्थ्य प्रभावित हुआ लेकिन अपने 74वें साल में भी जेल जाने से उन्हें जरा-सा भी डर नहीं लगा। महात्मा गांधी ने जब भी सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया, उस संघर्ष में कस्तूरबा पहली पंक्ति में उनके साथ खड़ी रहीं। हिंदुस्तान की बेटियों के लिए चमकते हुए उदाहरण के रूप में और हिंदुस्तान के बेटों के लिए एक चुनौती के रूप में कि वो भी हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई में अपनी बहनों से पीछे नहीं रहें।' सुभाष चंद्र बोस ने कस्तूरबा को ठीक ढंग से समझा था। कस्तूरबा की समर्पण भावना को आज हमें समझने की आवश्यकता है।

कस्तूरबा का व्यक्तित्व बहुआयामी था। गांधी ने जब भी सत्याग्रह किया उसमें कस्तूरबा बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। समन्वय का ऐसा उदाहरण विरले ही देखने को मिलता है। परिस्थिति ऐसी बनती कि एक तरफ अपने बच्चों को देखना, दूसरी तरफ सत्यग्रह में शामिल हो रहे स्त्री पुरुष को हौसला देने का काम भी करती रही। उनकी मजबूत भागीदारी दूसरे सत्याग्रहियों को प्रेरणा देती रही। गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया, '1906 में जब मैंने राजनीतिक क्षेत्र में इसकी शुरुआत की तो यह और अधिक व्यापक एवं विशेष रूप से गढ़े गए सत्याग्रह के नाम से जाना जाने लगा। जब भारतीय कैद के दौरान दक्षिण अफ्रीका में कस्तूरबा सिविल सत्याग्रहियों में से एक थी। उस दौरान उसने कठिन से कठिन शारीरिक जुल्म सहे, हालांकि वह कई बार कैद में रही थी, पर उसने उस दौरान सभी कैदियों की तरह असुविधा में रहने का विकल्प चुना। कस्तूरबा के समर्पण और त्याग की विवेचना करें तो हम महसूस करते हैं कि राष्ट्र उनका ऋणी है। कस्तूरबा को विनम्र श्रद्धाजंली।

विजय गोयल

कस्तूरबा की त्याग भावना

महात्मा गांधी ने पूरी दुनिया को अहिंसा का मार्ग दिखाया। अहिंसा उनके लिए धर्म स्वरूप था। जिस पर उन्होंने आजीवन चलाकर लोगों को इसके लिए प्रेरित किया। परंतु बहुत कम लोगों को पता है कि उनके इस पथ पर उनकी पत्नी कस्तूरबा भी निरंतर चलते हुए सहयोग करती रही। कस्तूरबा के बिना संभवत महात्मा गांधी के जीवन भर यह व्रत पालन करना संभव नहीं होता। काका साहब कालेलकर लिखते हैं, 'महात्मा गांधी जैसे महान पुरुष की सह धर्मचारिणी तौर पर पूज्य कस्तूरबा के बारे में राष्ट्र को आधार मालूम होना स्वाभाविक है। राष्ट्र ने महात्मा जी को बापूजी के नाम से राष्ट्रपिता के स्थान पर कायम किया ही है। इसलिए कस्तूरबा 'बा' के एककाक्षरी नाम से राष्ट्र माता बन सकी हैं। किंतु सिर्फ महात्मा जी के के संबंध के कारण नहीं बल्कि अपने आंतरिक सद्गुणों और निष्ठा के कारण भी कस्तूरबा माता बन पाई है।... आश्रम में कस्तूरबा हम लोगों के लिए मां के समान थी। सत्याग्रह श्रम यानी तत्व निश्चित महात्मा जी की संस्था उग्र शासन मगनलाल भाई उसे चलाते थे। ऐसे स्थान पर अगर वात्सल्य की आद्रता हमें मिलती थी तो वह कस्तूरबा से ही। कई बार 'बा' आश्रम के नियमों को तक पर रख देती । आश्रम के बच्चों को जब भूख लगती थी तब उनकी 'बा' ही सुनती थी।' गांधी और कस्तूरबा को अलग-अलग करके नहीं समझा जा सकता है। इन दोनों महान विभूतियों को समग्रता में समझना होगा। कस्तूरबा के व्यापक विचारों की वजह से गांधी ने भारतीय राजनीति और सामाजिक कार्यों में महिलाओं की भागीदारी को समझा। गांधी जी ने महिलाओं को अपने सत्याग्रह कार्यक्रम से जोड़ा। जिसका परिणाम सुफल रहा।

इस अंक में महात्मा गांधी, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, दिलीप चिंचालकर आदि के विचारों से हम लाभान्वित होंगे। बच्चों के लिए बाल कविताएं कहानियां और चित्रकारी का विशेष आकर्षण है।

'अंतिम जन' का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है यह अंक बा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपके बीच है।

इस अंक के बारे में अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें जरूर अवगत करवाएं।

डॉ. ज्वाला प्रसाद
निदेशक

आपके ख़त

बच्चों के लिए विशेष

गांधीवादी पत्रिका 'अंतिम जन' की आज के समय में विशेष महत्व है। यह पत्रिका समाज को नई दिशा देता है। गांधी की सामाजिक स्वीकार्यता पूरी दुनिया में है। वे दुनिया के प्रमुख महान लोगों में सर्वश्रेष्ठ हैं। विचार की प्रगाढ़ता गांधी में सबसे ज्यादा है। सत्य और अहिंसा के रास्ते से दुनिया को मार्ग दिखाना गांधी की सबसे बड़ी देन है। 'अंतिम जन' पत्रिका गांधी विचार को प्रचारित-प्रसारित करने का कार्य कर रही है। इसमें शामिल आलेख समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक है।

बच्चों पर सामग्री पहले के मुकाबले ज्यादा दी जा रही है। स्कूल और प्रत्येक आयु वर्ग के बच्चों को अवश्य पढ़ना चाहिए। एक अभियान चलाकर इसे घर-घर पहुंचाना चाहिए। बच्चों को संस्कारवान बनाने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

टिंकू कुमार
पुलिस कॉलनी, झारखंड

एक दिन ऐसा भी आयेगा

एक दिन शांति के
ऊपर जो बहुत गहरे
बर्फ जमी है ..
वो
जमी बर्फ
पिघल जायेगी !
युद्ध घुटनों के बल
मुड़ा होगा ..!

युद्ध से पुते सारे ..चेहरों पर
दु:ख की जमी गर्द
झड़ चुकी होगी ..!

एक दिन गैर-बराबरी
खत्म हो जायेगी ..
और
सारे आण्विक हथियारों
पर बर्फ जम जायेगी ..

या वो किसी खोह में बिला जायेंगें
तब उन्हीं हथियारों को पिघलाकर
हल बनाई जायेगी ..

फिर से हँसुआ बनेगा ...
और उससे काटी जायेंगीं...
फसलें..
तब किसान युद्ध के बारे में

नहीं सोचेंगे ...

माँएँ, नहीं सोचेंगीं
बेटे के सही सलामती
के साथ युद्ध से लौटने
की बात

तब एक आश्वसति होगी ..
लोगों के दिलों में

तब युद्ध के बाद बच्चे बाहें
फैलाये अपने पिता को
अपनी बाजुओं में
समेट लेंगें

एक दिन बारूद वाली जमीन पर
फसलें लहलहायेंगी...
तब बहुत शांति होगी ...!
देख, लेना वो समय एक दिन
जरूर आयेगा ..!

महेश कुमार केशरी
मेघदूत मार्केट फुसरो
बोकारो झारखंड
पिन -829144

'बा' की दृढ़ता

मोहनदास करमचंद गांधी

कस्तूरबाई पर रोग के तीन घातक हमले हुए और तीनों में वह केवल घरेलू उपचारों से बच गई। उनमें पहली घटना उस समय घटी जब सत्याग्रह का युद्ध चल रहा था। उसे बार-बार रक्तस्राव हुआ करता था। एक डॉक्टर मित्र ने शस्त्रक्रिया करा लेने की सलाह दी थी। थोड़ी आनाकानी के बाद पत्नी ने शस्त्रक्रिया कराना स्वीकार कर लिया। उसका शरीर बहुत ही क्षीण हो गया था। डॉक्टर ने बिना क्लोरोफार्म के शस्त्रक्रिया की। शस्त्रक्रिया के समय पीड़ा बहुत हो रही थी, पर जिस धीरज से कस्तूरबाई ने उसे सहन किया उससे मैं आश्चर्यचकित हो गया। शस्त्रक्रिया निर्विघ्न पूरी हो गयी। डॉक्टर ने और उनकी पत्नी ने कस्तूरबाई की अच्छी सार-संभाल की।

यह घटना डरबन में हुई थी। दो या तीन दिन के बाद डॉक्टर ने मुझे निश्चिन्त होकर जोंहानिसबर्ग जाने की अनुमति दे दी। मैं चला गया। कुछ ही दिन बाद खबर मिली कि कस्तूरबाई का शरीर बिलकुल सुधर नहीं रहा है और वह बिछौना छोड़कर उठ बैठ भी नहीं सकती। एक बार बेहोश भी हो चुकी थी। डॉक्टर जानते थे कि मुझसे पूछे बिना औषधि या अन्न के रूप में कस्तूरबाई को शराब अथवा माँस नहीं दिया जा सकता। डॉक्टर ने मुझे जोहानिसबर्ग में टेलीफोन किया: ''मैं आपकी पत्नी को माँस का शोरवा अथवा 'बीफ-टी' देने की जरूरत समझता हूँ। मुझे इजाजत मिलनी चाहिए।'' मैंने उत्तर दिया, ''मैं यह इजाजत नहीं दे सकता। किन्तु कस्तूरबाई स्वतंत्र है। उससे पूछने-जैसी स्थिति हो तो पूछिये और वह लेना चाहे तो जरूर दीजिए।''

''ऐसे मामलों में मैं बीमार से कुछ पूछना पसन्द नहीं करता। स्वयं आपका यहाँ आना जरूरी है। यदि आप मैं जो चाहूँ सो खिलाने की छूट मुझे न दें, तो मैं आपकी स्त्री के लिए जिम्मेदार नहीं।'' मैंने उसी दिन डरबन की ट्रेन पकड़ी। डरबन पहुँचा। डॉक्टर ने मुझसे कहा, ''मैंने तो शोरवा पिलाने के बाद ही आपको टेलीफोन किया था!''

मैंने कहा, ''डॉक्टर, मैं इसे दगा समझता हूँ।'' डॉक्टर ने दृढ़ता-पूर्वक उत्तर दिया, ''दवा करते समय मैं दगा-वगा नहीं समझता। हम डॉक्टर लोग ऐसे समय रोगी को अथवा उसके संबंधियों को धोखा देने में पुण्य समझते हैं। हमारा धर्म तो किसी भी तरह रोगी को बचाना है!''

''ऐसे मामलों में मैं बीमार से कुछ पूछना पसन्द नहीं करता। स्वयं आपका यहाँ आना जरूरी है। यदि आप मैं जो चाहूँ सो खिलाने की छूट मुझे न दें, तो मैं आपकी स्त्री के लिए जिम्मेदार नहीं।'' मैंने उसी दिन डरबन की ट्रेन पकड़ी। डरबन पहुँचा। डॉक्टर ने मुझसे कहा, ''मैंने तो शोरवा पिलाने के बाद ही आपको टेलीफोन किया था!''

मुझे बहुत दु:ख हुआ। पर मैं शान्त रहा। डॉक्टर मित्र थे, सज्जन थे। उन्होंने और उनकी पत्नी ने मुझ पर उपकार किया था। पर मैं उक्त व्यवहार सहन करने के लिए तैयार न था।

''डॉक्टर साहब, अब स्थिति स्पष्ट कर लीजिए। कहिये, आप क्या करना चाहते हैं? मैं अपनी पत्नी को उसकी इच्छा के बिना माँस नहीं खिलाने दूँगा। माँस न लेने के कारण उनकी मृत्यु हो जाय, तो मैं उसे सहने के लिए तैयार हूँ।''

डॉक्टर बोले, ''आपकी फिलासफी मेरे घर में तो हरगिज नहीं चलेगी। मैं आपसे कहता हूँ कि जब तक अपनी पत्नी को आप मेरे घर में रहने देंगे, तब तक मैं उसे अवश्य ही माँस अथवा जो कुछ भी देना उचित होगा, दूँगा। यदि यह स्वीकार न हो तो आप अपनी पत्नी को ले जाइए। मैं अपने ही घर में जान-बूझकर उसकी मृत्यु नहीं होने दूंगा।''

''तो क्या आप यह कहते हैं कि मैं अपनी पत्नी को इसी समय ले जाऊँ?'' ''मैं कब कहता हूँ कि ले जाइए? मैं तो यह कहता हूँ कि मुझ पर किसी प्रकार का अंकुश न रखिये। उस दशा में हम दोनों उसकी जितनी हो सकेगी उतनी सार-संभाल करेंगे और आप निश्चिन्त होकर जा सकेंगे। यदि यह सीधी-सी बात आप न समझ सकें, तो मुझे विवश होकर कहना होगा कि आप अपनी पत्नी को मेरे घर से ले जाइए।''

मेरा खयाल है कि उस समय मेरा एक लड़का मेरे साथ था। मैंने उससे पूछा। उसने कहा, ''आपकी बात मुझे मंजूर है। बा को माँस तो दिया ही नहीं जा सकता।''

फिर मैं कस्तूरबाई के पास गया। वह बहुत अशक्त थी। उससे कुछ भी पूछना मेरे लिए दु:खदायी था, किन्तु धर्म समझकर मैंने उसे थोड़े में ऊपर की बात कह सुनाई। उसने दृढ़ता-पूर्वक उत्तर दिया: ''मैं माँस का शोरवा नहीं लूँगी। मनुष्य की देह बार-बार नहीं मिलती। चाहे आपकी गोद में मैं मर जाऊँ, पर अपनी इस देह को भ्रष्ट तो नहीं होने दूँगी।''

जितना मैं समझा सकता था, मैंने समझाया और कहा, ''तुम मेरे विचारों का अनुसरण करने के लिए बँधी हुई नहीं हो।''

हमारी जान-पहचान के कई हिन्दू दवा के लिए माँस और मद्य लेते थे, इसकी भी मैंने बात की। पर वह टस से मस न हुई और बोली: ''मुझे यहाँ से ले चलिये।''

मैं बहुत प्रसन्न हुआ। ले जाने के विचार से घबरा गया। पर मैंने निश्चय कर लिया। डॉक्टर को पत्नी का निश्चय सुना दिया। डॉक्टर गुस्सा हुए और बोले: ''आप तो बड़े निर्दय पति मालूम पड़ते हैं। ऐसी बीमारी में उस बेचारी से इस तरह की बातें करने में आपको शरम भी नहीं आयी? मैं आपसे कहता हूँ कि आपकी स्त्री यहाँ से ले जाने लायक नहीं है। उसका शरीर इस योग्य नहीं है कि वह थोड़ा भी धक्का सहन करे। रास्ते में ही उसकी जान निकल जाय, तो मुझे आश्चर्य न होगा। फिर भी आप अपने हठ के कारण बिलकुल न मानें, तो आप ले जाने के लिए स्वतंत्र हैं। यदि मैं उसे शोरवा न दे सकूँ, तो अपने घर में एक रात रखने का भी खतरा मैं नहीं उठा सकता।''

रिमझिम रिमझिम मेह बरस रहा था। स्टेशन दूर था। डरबन से फीनिक्स तक रेल का और फीनिक्स से लगभग ढाई मील का पैदल रास्ता था। खतरा काफी था, पर मैंने माना कि भगवान मदद करेगा। एक आदमी को पहले से फीनिक्स भेज दिया। फीनिक्स में हमारे पास 'हैमक' था। जालीदार कपड़े की झोली या पालने को हैमक कहते हैं। उसके सिरे बाँस से बाँध दिये जाएँ, तो बीमार उसमें आराम से झूलता रह सकता है। मैंने वेस्ट को खबर भेजी थी कि वे हैमक, एक बोतल गरम दूध, एक बोतल गरम पानी और छह आदमियों को साथ लेकर स्टेशन पर आ जाएँ।

दूसरी ट्रेन के छूटने का समय होने पर मैंने रिक्शा मँगवाया और उसमें, इस खतरनाक हालत में, पत्नी को बैठाकर मैं रवाना हो गया। मुझे पत्नी को हिम्मत नहीं बँधानी पड़ी; उलटे उसीने मुझे हिम्मत बँधाते हुए कहा, ''मुझे कुछ नहीं होगा, आप चिन्ता न कीजिए।''

हड्डियों के इस ढाँचे में वजन तो कुछ रह ही नहीं गया था। खाया बिलकुल नहीं जाता था। ट्रेन के डिब्बे तक पहुँचने में स्टेशन के लंबे-चौड़े प्लेटफार्म पर दूर तक

चलकर जाना पड़ता था। वहाँ तक रिक्शा नहीं जा सकता था। मैं उसे उठाकर डिब्बे तक ले गया। फीनिक्स पहुँचने पर तो वह झोली आ गयी थी। उसमें बीमार को आराम से ले गये। वहाँ केवल पानी के उपचार से धीरे-धीरे कस्तूरबाई का शरीर पुष्ट होने लगा।

फीनिक्स पहुँचने के बाद दो-तीन दिन के अंदर एक स्वामी पधारे। हमारे 'हठ' की बात सुनकर उनके मन में दया उपजी और वे हम दोनों को समझाने आये। जैसा कि मुझे याद है, स्वामीजी के आगमन के समय मणिलाल और रामदास भी वहाँ मौजूद थे। स्वामीजी ने माँसाहार की निर्दोषता पर व्याख्यान देना शुरू किया। मनुस्मृति के श्लोकों का प्रमाण दिया। पत्नी के सामने इस तरह की चर्चा मुझे अच्छी नहीं लगी। पर शिष्टता के विचार से मैंने उसे चलने दिया। माँसाहार के समर्थन में मुझे मनुस्मृति के प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। मैं उसके श्लोकों को जानता था। मैं जानता था कि उन्हें प्रक्षिप्त माननेवाला भी एक पक्ष है। पर वे प्रक्षिप्त न होते तो भी अन्नाहार के विषय में मेरे विचार तो स्वतंत्र रीति से पक्के हो चुके थे। कस्तूरबाई की श्रद्धा काम कर रही थी। वह बेचारी शास्त्र के प्रमाण को क्या जाने? उसके लिए तो बाप-दादों की रूढ़ि ही धर्म थी। लड़कों को अपने पिता के धर्म पर विश्वास था। इसलिए वे स्वामीजी से मजाक कर रहे थे। अन्त में कस्तूरबाई ने इस संवाद को यह कहकर बंद किया: ''स्वामीजी, आप कुछ भी क्यों न कहें, पर मुझे माँस का शोरवा खाकर स्वस्थ नहीं होना है। अब आप मेरा सिर न पचायें, तो आपका मुझ पर बड़ा उपकार होगा। बाकी बातें आपको लड़कों के पिताजी से करनी हों, तो कर लीजिएगा। मैंने अपना निश्चय आपको बतला दिया।''

घर में सत्याग्रह

मुझे जेल का पहला अनुभव सन् 1908 में हुआ। उस समय मैंने देखा कि जेल में कैदियों से जो कुछ नियम पलवाये जाते हैं, संयमी अथवा ब्रह्मचारी को उनका पालन स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए। जेल के मेरे अनुभव भी पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुके हैं। मूलत: वे गुजराती में लिखे गये थे और वे ही अंग्रेजी में प्रकाशित हुए हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, दोनों पुस्तकें मिल सकती हैं। जैसे, कैदियों को सूर्यास्त से पहले पाँच बजे तक खा लेना होता है। उन्हें - हिन्दुस्तानी और हब्शी कैदियों को - चाय या कॉफी नहीं दी जाती। नमक खाना हो तो अलग से लेना होता है। स्वाद के लिए तो कुछ खाया ही नहीं जा सकता।

जब मैंने जेल के डॉक्टर से हिन्दुस्तानियों के लिए 'करी पाउडर'? (पिसा हुआ मसाला) माँगा और नमक बनती हुई रसोई में ही डालने की बात कही, तो वे बोले, "यहाँ आप लोग स्वाद का आनन्द लूटने के लिए नहीं आये हैं। आरोग्य की दृष्टि से 'करी पाउडर' की कोई आवश्यकता नहीं है। आरोग्य के विचार से नमक ऊपर से लें या पकाते समय रसोई में डालें, दोनों एक ही बात है।''

वहाँ तो बड़ी मेहनत के बाद हम आखिर जरूरी परिवर्तन करा सके थे। पर केवल संयम की दृष्टि से देखें, तो दोनों प्रतिबंध अच्छे ही थे। ऐसा प्रतिबन्ध जब जबरदस्ती लगाया जाता है, तो वह सफल नहीं होता। पर स्वेच्छा से पालन करने पर ऐसा प्रतिबन्ध बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। अतएव जेल से छूटने के बाद मैने ये परिवर्तन भोजन में तुरन्त किये। भरसक चाय पीना बंद किया और शाम को जल्दी खाने की आदत डाली, जो आज स्वाभाविक हो गयी है।

वामीजी के आगमन के समय मणिलाल और रामदास भी वहाँ मौजूद थे। स्वामीजी ने माँसाहार की निर्दोषता पर व्याख्यान देना शुरू किया। मनुस्मृति के श्लोकों का प्रमाण दिया। पत्नी के सामने इस तरह की चर्चा मुझे अच्छी नहीं लगी। पर शिष्टता के विचार से मैंने उसे चलने दिया। माँसाहार के समर्थन में मुझे मनुस्मृति के प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। मैं उसके श्लोकों को जानता था। मैं जानता था कि उन्हें प्रक्षिप्त माननेवाला भी एक पक्ष है। पर वे प्रक्षिप्त न होते तो भी अन्नाहार के विषय में मेरे विचार तो स्वतंत्र रीति से पक्के हो चुके थे।

किन्तु एक ऐसी घटना घटी, जिसके कारण मैंने नमक का त्याग किया, जो लगभग दस वर्ष तक अखण्ड रूप से कायम रहा। अन्नाहार-संबंधी कुछ पुस्तकों में मैंने पढ़ा था कि मनुष्य के लिए नमक खाना आवश्यक नहीं है और न खानेवाले को आरोग्य की दृष्टि से लाभ ही होता है।

यह तो मुझे सूझा ही था कि नमक न खाने से ब्रह्मचारी को लाभ होता है। मैंने यह भी पढ़ा और अनुभव किया था कि कमजोर शरीरवाले को दाल न खानी चाहिए। किन्तु मैं उन्हें तुरन्त छोड़ न सका था। दोनों चीजें मुझे प्रिय थीं। यद्यपि उक्त शस्त्रक्रिया के बाद कस्तूरबाई का रक्तस्राव थोड़े समय के लिए बंद हो गया था, पर अब वह फिर शुरू हो गया और किसी प्रकार बंद ही न होता था। अकेले पानी के उपचार व्यर्थ सिद्ध हुए। यद्यपि पत्नी को मेरे उपचारों पर विशेष श्रद्धा नहीं थी, तथापि उनके लिए तिरस्कार भी नहीं था। दूसरी दवा करने का आग्रह न था। मैंने उसे नमक और दाल छोड़ने के लिए मनाना शुरू किया। बहुत मनाने पर भी, अपने कथन के समर्थन में कुछ-न-कुछ पढ़कर सुनाने पर भी, वह मानी नहीं। आखिर उसने कहा: ''दाल और नमक छोड़ने को तो कोई आपसे कहे, तो आप भी न छोड़ेंगे।'' मुझे दुःख हुआ और हर्ष भी हुआ। मुझे अपना प्रेम उँड़ेलने का अवसर मिला। उसके हर्ष में मैंने तुरन्त ही कहा, ''तुम्हारा यह खयाल गलत है। मुझे बीमारी हो और वैद्य इस चीज को या दूसरी किसी चीज को छोड़ने के लिए कहे, तो मैं अवश्य छोड़ दूँ। लेकिन जाओ, मैंने तो एक साल के लिए दाल और नमक दोनों छोड़े। तुम छोड़ो या न छोड़ो, यह अलग बात है।'' पत्नी को बहुत पश्चात्ताप हुआ। वह कह उठी, ''मुझे माफ कीजिए। आपका स्वभाव जानते हुए भी मैं कहते कह गयी। अब मैं दाल और नमक नहीं खाऊँगी, लेकिन आप अपनी बात लौटा लें। यह तो मेरे लिए बहुत बड़ी सजा हो जाएगी।''

मैंने कहा, ''अगर तुम दाल और नमक छोड़ोगी, तो अच्छा ही होगा। मुझे विश्वास है कि उससे तुम्हें लाभ होगा। पर मैं ली हुई प्रतिज्ञा वापस नहीं ले सकूँगा। मुझे तो इससे लाभ ही है। मनुष्य किसी भी निमित्त से संयम क्यों न पाले, उसमें उसे लाभ ही है। अतएव तुम मुझसे आग्रह न करो। फिर मेरे लिए भी यह एक परीक्षा हो जाएगी और इन दो पदार्थों को छोड़ने का जो निश्चय तुमने किया है, उस पर दृढ़ रहने में तुम्हें मदद मिलेगी।'' इसके बाद मुझे उसे मनाने की जरूरत तो रही ही नहीं। ''आप बहुत हठीले हैं। किसीकी बात मानते ही नहीं।'' कहकर और अंजलि भर आँसू बहाकर वह शान्त हो गयी। मैं इसे सत्याग्रह का नाम देना चाहता हूँ और इसको अपने जीवन की मधुर स्मृतियों में से एक मानता हूँ।

इसके बाद कस्तूरबाई की तबीयत खूब संभली। इसमें नमक और दाल का त्याग कारणरूप था या वह किस हद तक कारणरूप था, अथवा उस त्याग से उत्पन्न आहार-संबंधी अन्य छोटे-बड़े परिवर्तन कारणभूत थे, या इसके बाद दूसरे नियमों का पालन कराने में मेरी पहरेदारी निमित्तरूप थी, अथवा उपर्युक्त प्रसंग से उत्पन्न मानसिक उल्लास निमित्तरूप था- सो मैं कह नहीं सकता। पर कस्तूरबाई का क्षीण शरीर फिर पनपने लगा, रक्तस्राव बंद हुआ और 'वैद्यराज' के रूप में मेरी साख कुछ बढ़ी।

स्वयं मुझ पर तो इन दोनों के त्याग का प्रभाव अच्छा ही पड़ा। त्याग के बाद नमक अथवा दाल की इच्छा तक न रही। एक साल का समय तो तेजी से बीत गया। मैं इन्द्रियों की शान्ति का अधिक अनुभव करने लगा और मन संयम को बढ़ाने की तरफ अधिक दौड़ने लगा। कहना होगा कि वर्ष की समाप्ति के बाद भी दाल और नमक का मेरा त्याग ठेठ देश लौटने तक चालू रहा। केवल एक बार सन् 1914 में विलायत में नमक और दाल खायी थी। पर इसकी बात और देश वापस आने पर ये दोनों चीजें फिर किस तरह लेनी शुरू की इसकी कहानी आगे कहूँगा।

नमक और दाल छुड़ाने के प्रयोग मैंने दूसरे साथियों पर भी काफी किये हैं और दक्षिण अफ्रीका में तो उनके परिणाम अच्छे ही आये हैं। वैद्यक दृष्टि से दोनों चीजों के त्याग के विषय में दो मत हो सकते हैं, पर इसमें मुझे कोई शंका ही नहीं कि संयम की दृष्टि से तो इन दोनों चीजों के त्याग में लाभ ही है। भोगी और संयमी के आहार भिन्न होने चाहिए, उनके मार्ग भिन्न होने चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करने की इच्छा रखनेवाले लोग भोगी का जीवन बिताकर ब्रह्मचर्य को कठिन और कभी-कभी लगभग असंभव बना डालते हैं।

आत्मकथा से साभार।

2047 तक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य

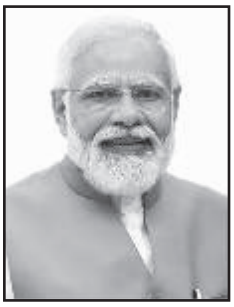

नरेन्द्र मोदी

अभी मैं पीयूष जी को सुन रहा था, वो कह रहे थे कि आप आए तो हमारा हौसला बढ़ जाता है। लेकिन मैं देख रहा था यहां तो सारे हॉर्स पॉवर वाले लोग बैठे हैं। तब तय हो गया है कि किसको कहाँ से हौसला मिलने वाला है। सबसे पहले तो मैं Automotive Industry को इस शानदार आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं आज हर स्टॉल पर तो नहीं जा पाया, लेकिन जितने भी स्टॉल्स मैंने देखे, वो बहुत ही प्रभावित करने वाले थे। हमारे देश में ये सब हो रहा है, देखते हैं तो और आनंद हो जाता है। मैंने तो कभी गाड़ी खरीदी नहीं है, इसलिए मुझे कोई अनुभव नहीं है, क्योंकि मैंने कभी साइकिल भी नहीं खरीदी है। मैं दिल्ली के लोगों को भी कहूंगा कि इस एक्सपो को आकर जरूर देखें। ये आयोजन Mobility Community और पूरी Supply Chain को एक मंच पर लाया है। मैं आप सभी का Bharat Mobility Global Expo में अभिनंदन करता हूं, और आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूं। शायद आप में से कुछ लोगों को स्मरण होगा कि जब मेरी पहली टर्म थी, उस समय मैंने एक ग्लोबल लेवल की mobility conference प्लान की थी। और उस समय की चीजें अगर आप निकालकर देखोगे तो बैटरी पर हमारा फोकस क्यों होना चाहिए, Electric Vehicle की तरफ हमें कैसे जल्दी जाना चाहिए, इन सारे विषयों पर बहुत विस्तार से वो समिट हुआ था, ग्लोबल एक्सपर्टस आए थे। और आज मैं मेरी दूसरी टर्म में देख रहा हूं कि अच्छी खासी मात्रा में प्रगति हो रही है। और मुझे विश्वास है कि तीसरी टर्म में.. चलिए समझदार को इशारा काफी होता है। और आप लोग तो mobility की दुनिया में है, तो ये इशारा देश में जल्दी से पहुंचेगा।

साथियो,

आज का भारत, 2047 तक विकसित भारत बनाने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में मोबिलिटी सेक्टर एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करने वाला है। और मैंने लाल किले से कहा था- मैं आज दोबारा उसका पुन:स्मरण करा रहा हूं। उसमें मेरा एक विजन भी था, मेरा विश्वास भी था और वो विश्वास मेरा अपना नहीं था। 140 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य के कारण वो विश्वास शब्दों में प्रकट हुआ था। और उस दिन मैंने कहा था लालकिले से – यही समय है, सही समय है। ये मंत्र

आज का भारत, 2047 तक विकसित भारत बनाने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में मोबिलिटी सेक्टर एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करने वाला है। और मैंने लाल किले से कहा था-मैं आज दोबारा उसका पुन:स्मरण करा रहा हूं। उसमें मेरा एक विजन भी था, मेरा विश्वास भी था और वो विश्वास मेरा अपना नहीं था। 140 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य के कारण वो विश्वास शब्दों में प्रकट हुआ था।

आपके सेक्टर पर बिल्कुल फिट बैठता है। एक प्रकार से India is on the move, and is moving fast. भारत के मोबिलिटी सेक्टर के लिए ये एक तरह से गोल्डन पीरियड का प्रारंभ है। आज भारत की अर्थव्यवस्था का तेजी से विस्तार हो रहा है। और जैसा मैंने पहले कहा हमारी सरकार के तीसरे टर्म में भारत का दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना तय है। हमारी सरकार के प्रयासों से पिछले 10 वर्षों में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। और जब वो गरीबी से बाहर निकलता है न तब उसके सपनों में पहली पांच चीजों में क्या होता है? एक आप होते हैं। चाहे वो साइकिल खरीदना चाहेगा, चाहे scooty खरीदना चाहेगा, चाहे scooter और हो सके तो four wheeler! उसका पहला ध्यान आप ही पर जाने वाला है। और ये 25 करोड़ लोग गरीबी से आए हैं। आज भारत में बड़ी संख्या में नियो मीडिल क्लास बना है, जिसकी अपनी आशाएं हैं, अपनी आकांक्षाएं हैं। शायद aspiration का लेवल उस सोसायटी में होता है, उस economical startup में होता है, वो शायद ही कहीं और होता है जी। जैसे व्यक्ति के जीवन में 14 से 20 साल का कालखंड जैसे एक प्रकार से अलग ही होता है, वैसा ही इनके जीवन में होता है। और इसको अगर हम एड्रेस करते हैं तब कल्पना कर सकते हैं हम कहां से कहां पहुंच सकते हैं जी। ये Neo middle class उसके aspirations और दूसरी तरफ आज भारत में मिडिल क्लास का दायरा भी बहुत तेजी से बढ़ रहा है, मिडिल क्लास की इनकम भी बढ़ रही है। ये सारे फैक्टर्स भारत के मोबिलिटी सेक्टर को नई ऊंचाई देने वाले हैं। बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था और बढ़ती हुई आय के बीच, बढ़ते हुए कुछ आंकड़े, आपके सेक्टर का हौसला बढ़ाने वाले हैं, मोदी नहीं ये आंकड़े। साल 2014 के पहले के दस सालों में भारत में 12 करोड़ के आसपास गाड़ियों की बिक्री हुई थी। जबकि 2014 के बाद से देश में 21 करोड़ से ज्यादा गाड़ियों की बिक्री हो चुकी है। दस साल पहले भारत में साल भर में दो हजार तक इलेक्ट्रिक गाड़ियां बिक रही थीं। वहीं अब भारत में करीब 12 लाख इलेक्ट्रिक गाड़ियां हर साल बिक रही हैं। पिछले 10 साल में passenger vehicles की बिक्री में 60 परेंसट की वृद्धि हुई है। भारत में टू-व्हीलर सेल्स भी 70 परसेंट से ज्यादा बढ़ी है। अभी कल ही जो आंकड़े आए हैं वो बताते हैं कि जनवरी के महीने में कारों की बिक्री ने अपने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। जिनकी बिके हैं, वो यहां बैठे है ना। आप चिंता मत कीजिए income tax वाले नहीं सुन रहे हैं, घबराओ मत। यानि आप सभी के लिए मोबिलिटी सेक्टर में अभूतपूर्व Positive वातावरण आज धरती पर नजर आ रहा है। आपको आगे बढ़कर इसका लाभ उठाना है।

साथियो,

आज का भारत, भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नई नीतियां बना रहा है। और इसमें निश्चित तौर पर मोबिलिटी सेक्टर के लिए विशेष जगह है। कल जो बजट पेश हुआ है, उसमें भी इस विजन को आप देख पाते होंगे, ये तो इंटरिम बजट है, पूरा तो आएगा जब हम तीसरी बार आएंगे तब। 2014 में भारत का Capital Expenditure 2 लाख करोड़ से भी कम था, 2 लाख करोड़ से भी कम था, आज ये 11 लाख करोड़ से भी ज्यादा हो गया है। Capital Expenditure पर 11 लाख करोड़ रुपए के खर्च का ऐलान, भारत के मोबिलिटी सेक्टर को अनेक विविध opportunity लेकर के आया है। ये ना सिर्फ अर्थव्यवस्था को ताकत देगा, बल्कि इससे रोजगार के भी नए अवसर बनेंगे। इस अभूतपूर्व इंवेस्टमेंट की वजह से आज भारत में रेल-रोड-एयरवे-वॉटरवे ट्रांसपोर्ट यानि हर क्षेत्र का कायाकल्प हो रहा है। हम समुद्र और पहाड़ों को चुनौती देते हुए एक के बाद एक engineering marvel तैयार कर रहे हैं, वो भी रिकॉर्ड समय में। अटल टनल से लेकर अटल सेतु तक, भारत का infrastructural development नए रिकॉर्ड बना रहा है। बीते 10 वर्षों में भारत में 75 नए एयरपोर्ट बनाए गए हैं। करीब 4 लाख किलोमीटर ग्रामीण सड़कों का निर्माण हुआ है। 90 हजार किलोमीटर नेशनल हाइवे बने हैं। 3500 किलोमीटर के हाईस्पीड कॉरिडोर विकसित किए गए हैं। 15 नए शहरों में मेट्रो रेल और 25 हजार किलोमीटर के रेल रूट्स का निर्माण हुआ है। इस बार के बजट में, 40 हजार रेल कोचेज को वंदे भारत ट्रेन के डिब्बों जैसा आधुनिक बनाने का ऐलान किया गया है। ये 40 हजार कोच, सामान्य रेल गाड़ियों में लगाए जाएंगे। इससे भारतीय रेलवे की तस्वीर बदलना तय है।

साथियो,

हमारी सरकार की इस Speed और Scale ने भारत में मोबिलिटी की परिभाषा को भी बदल दिया है। हमारी सरकार का जोर रहा है कि प्रोजेक्ट समय पर पूरे हों, अटके नहीं, भटके नहीं, लटके नहीं। Transportation को आसान बनाने के लिए, Logistics से जुड़ी चुनौतियां कम करने के लिए भी हमारी सरकार ने ऐतिहासिक बदलाव किए। पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान के तहत आज देश में Integrated Transport को बढ़ावा दिया जा रहा है। Aircraft और Ship Leasing के लिए GIFT CITY में Regulatory Framework बनाया गया है। Logistics Chain को आधुनिक बनाने के लिए सरकार ने National Logistics Policy बनाई है। सामान की ढुलाई में समय कम लगे, पैसा कम लगे, इसके लिए Dedicated Freight Corridor विकसित किए गए हैं। कल बजट में जिन तीन railway economic corridors की घोषणा की गई है, वो भी भारत में Ease of Transportation को बढ़ाने का एक काम करेंगे।

साथियो,

आज भारत में National Highways और आधुनिक एक्सप्रेसवे के निर्माण के जरिए Connectivity को निरंतर मजबूत किया जा रहा है। GST ने ना सिर्फ सामानों की आवाजाही को तेज किया है, बल्कि राज्यों के बॉर्डर्स पर जो Check Posts होते थे, उन्हें भी खत्म किया है। फास्ट-टैग टेक्नोलॉजी भी इंडस्ट्री के ईंधन और समय, दोनों की बचत करा रही है। एक स्टडी के मुताबिक, फास्टटैग से अर्थव्यवस्था को हर साल 40 हजार करोड़ रुपए का फायदा हो रहा है।

साथियो,

भारत आज विश्व का Economic Powerhouse बनने के मुहाने पर है। Auto और Automotive Component Industry की बहुत इसमें भूमिका रहने वाली है। आपकी Industry का देश के Total Exports में बड़ा प्रतिनिधित्व है। भारत आज Passenger Vehicles के मामले में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा मार्केट है। हम पूरी दुनिया में Commercial Vehicles बनाने वाले तीसरे सबसे बड़े देश हैं। हमारी Components Industry भी Globally Competitive बन रही है। अब अमृतकाल में हमें इन सभी क्षेत्रों में दुनिया में टॉप पर आना है। हमारी सरकार, आपके हर प्रयास में आपके साथ खड़ी है। ये मैं आपके लिए कह रहा था। आपकी Industry के लिए सरकार ने 25 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की Production Linked Incentive Scheme बनाई है। ये हमारी पूरी वैल्यू चेन को आत्मनिर्भर बनाने और MSMEs को शक्ति देने में बड़ी भूमिका निभा रही है। Battery Storage के लिए सरकार ने 18 हजार करोड़ रुपए की PLI Scheme दी है। और जब Battery Storage की बात आती है तब मैं आपको बताता हूं, मैं क्या सौच रहा हूं। अगर मैं clean cooking movement को आगे बढ़ाऊं। मान लीजिए देश में 25 करोड़ घर हैं और rooftop solar और battery storage की व्यवस्था और उससे cooking की व्यवस्था clean cooking की व्यवस्था 25 करोड़ battery की जरूरत, मतलब आपकी गाड़ियों से सैंकड़ों गुना बैटरी की आवश्यकता जो अपने आप में गाड़ी की battery को एकदम सस्ता कर देगी। अभी आप आराम से इस फील्ड में आइये, पूरा पैकेज लेकर के आइये और कल सरकार ने घोषित किया है बजट में हम पहले तबके में एक करोड़ परिवारों को roof top solar से उसकी तीन सौ यूनिट तो कम से कम मुफ्त बिजली, और मेरी तो योजना है कि roof top से उसके electric vehicle का चार्जिंग व्यवस्था उसके घर में ही हो, उसकी गाड़ी रात को आए, स्कूटी आए,

*अभी आप आराम से इस फील्ड में आइये, पूरा पैकेज लेकर के आइये और कल सरकार ने घोषित किया है बजट में हम पहले तबके में एक करोड़ परिवारों को **roof top solar** से उसकी तीन सौ यूनिट तो कम से कम मुफ्त बिजली, और मेरी तो योजना है कि **roof top** से उसके **electric vehicle** का चार्जिंग व्यवस्था उसके घर में ही हो, उसकी गाड़ी रात को आए, स्कूटी आए, स्कूटर आए, चार्ज हो जाए, सुबह अपना चलता चले। यानि एक प्रकार से **decentralize** व्यवस्था पूरी तरह **roof top solar system** के साथ जोड़ने की कल्पना है।*

स्कूटर आए, चार्ज हो जाए, सुबह अपना चलता चले। यानि एक प्रकार से decentralize व्यवस्था पूरी तरह roof top solar system के साथ जोड़ने की कल्पना है। ये सारी चीजें आप भविष्य की योजनाओं में दिमाग में रखकर के प्लान कीजिए, मैं आपके साथ हूं। Research और Testing को और बेहतर करने के लिए National Project को 3200 करोड़ रुपये दिए गए हैं। National Electric Mobility Mission की मदद से भारत में Electric Vehicles के निर्माण को नई गति मिली है। EV की डिमांड को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने करीब १० हजार करोड़ रुपये का निवेश किया है। हमारी सरकार की Fame Scheme भी बहुत सफल रही है। इसी स्कीम के तहत आज राजधानी दिल्ली समेत कई शहरों में हजारों इलेक्ट्रिक बसें चलनी शुरू हुई हैं। सरकार, EV Charging Stations बनाने के लिए भी Subsidy दे रही है।

साथियो,

रिसर्च और इनोवेशन को प्रोत्साहित करने के लिए कल के बजट में जैसे मैंने कहा 1 लाख करोड़ रुपये के फंड की घोषणा की है। स्टार्ट अप्स को मिल रही टैक्स छूट को और विस्तार देने का भी निर्णय लिया है। इन फैसलों से भी Mobility Sector में नई संभावनाएं पैदा होंगी। EVs के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती उसकी Cost और batteries की है। इस फंड का इस्तेमाल इस क्षेत्र में रिसर्च के लिए हो सकता है। हमारी Rooftop Solar Scheme में भी EV Manufacturing से जुड़ा Component है, जिससे Auto Sector को भी मदद मिलेगी। जब सोलर रूफ टॉप की संख्या बढ़ेगी, तो स्वभाविक है कि बड़ी संक्या में बैटरीज की भी जरूरत होगी। आपके लिए इस सेक्टर में भी विकास की बहुत बड़ी संभावना है। और मैं तो एक और बात कहूंगा। क्यों नहीं हमारी इंडस्ट्री ऐसी रिसर्च करती, जिससे भारत में मौजूद Raw Materials से ही नई तरीके की Batteries बनाई जाएं? क्योंकि दुनिया को चिंता है कि ये Raw Material कितने लंबे अर्से तक चलेगा और तब क्या होगा। हम अभी से क्यों न alternate लें। मैं समझ सकता हूं कि देश देश दे सकता है काफी लोग सोडियम पर काम कर भी रहे हैं। और सिर्फ Batteries ही नहीं, Auto Sector को Green Hydrogen और Ethanol के क्षेत्र में भी नई रिसर्च को बढ़ावा देना चाहिए। हमारे स्टार्टअप्स ने Drone Sector को भारत में नई उड़ान दी है। इस फंड का इस्तेमाल क्तवदमे से जुड़ी रिसर्च में भी हो सकता है। आज हमारे Waterways, Transport के बहुत ही Cost Effective माध्यम बनकर उभरे हैं। भारत की Shipping Ministry अब स्वदेशी टेक्नॉलजी का इस्तेमाल करके Hybrid vessels बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। आपको भी इस दिशा में जरूर आगे आना चाहिए।

साथियो,

आज इंडस्ट्री के आप सभी दिग्गजों के बीच, मार्केट की इतनी सारी चर्चाओं के बीच, मैं एक मानवीय पहलू की तरफ भी आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। हमारे लाखों Drivers साथी इस Mobility Sector का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं। जो ट्रक चलाते हैं, जो टैक्सी चलाते हैं, वो ड्राइवर हमारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का एक अभिन्न हिस्सा हैं। अक्सर ये ड्राइवर्स घंटों-घंटों लगातार ट्रक चलाते हैं, और मालिक भी क्या, समय पर क्यों नहीं आया वहीं से शुरू करता हैं, कहां रूक गया था, इनके पास आराम का समय नहीं होता। ऐसी मुश्किल परिस्थितियों में कई बार ये लोग सड़क हादसों का भी शिकार हो जाते हैं। ट्रक ड्राइवर्स की इस चिंता, उनके परिवार की इस चिंता को भी हमारी सरकार भली-भांति समझती है। मुझे आपको ये बताते हुए खुशी है कि ड्राइवर्स को बीच सफर में आराम देने के लिए केंद्र सरकार ने एक नई योजना पर काम शुरू किया है। इस योजना के तहत सभी नेशनल हाईवेज पर ड्राइवरों के लिए नई सुविधाओं वाले आधुनिक भवनों का निर्माण होगा। इन भवनों में ड्राइवरों के लिए भोजन, पीने के साफ पानी, शौचालय, पार्किंग और आराम करने की पूरी व्यवस्था होगी। सरकार की तैयारी इस योजना के पहले चरण में देशभर में ऐसे एक हजार भवन बनाने से शुरुआत करने की है। ट्रक और टैक्सी ड्राइवर्स के लिए बनाए गए ये भवन, ड्राइवर्स की Ease of Living और Ease of Traveling, दोनों बढ़ाएंगे। इससे उनकी सेहत भी ठीक रहेगी और दुर्घटनाओं को रोकने में भी बहुत मदद मिल सकेगी।

साथियो,

अगले 25 वर्षों में Mobility Sector में असीम संभावनाएं बनने वाली हैं। लेकिन इन संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल हो, इसके लिए Industry पर भी यह जिम्मेदारी है कि वो खुद को भी तेजी से Transform करे। Mobility Sector को Technical Workforce और प्रशिक्षित Drivers की जरूरत है। आज देश में 15 हजार से अधिक ITIs इस इंडस्ट्री को मैन पावर देते हैं। क्या इंडस्ट्री के लोग इन आईटीआई के साथ मिलकर कोर्सेज को और ज्यादा relevant नहीं बना सकते? आप जानते हैं कि सरकार ने एक scrappage policy बनाई है। इसके तहत पुरानी गाड़ियों को Scrapping के लिए देने पर, नई गाड़ियां खरीदने के दौरान रोड Tax में छूट दी जाती है। क्या Auto Industry भी लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे इंसेन्टिव नहीं दे सकती क्या?

साथियो,

इस एक्सपो को आपने टैगलाइन दी है- Beyond Boundaries...-ये शब्द भारत की भावना को दिखाते हैं। हम आज पुरानी बंदिशों को तोड़कर, पूरी दुनिया को साथ लाना चाहते हैं। हम ग्लोबल सप्लाई चेन में भारत की भूमिका का विस्तार करना चाहते हैं। Indian Auto Industry के सामने संभावनाओं का पूरा आसमान है। आइए, अमृतकाल के विजन पर आगे बढ़ें। आइए, भारत को इस क्षेत्र का Global Leader बनाएं। और मैं टॉयर वालों की क्षेत्र में अभी चक्कर काटकर आया हूँ। और मेरा पहले दिन से ही इन टॉयर वाली दुनिया से झगड़ा रहता है। मुझे अभी भी समझ नहीं आता है कि भारत जो खेती प्रधान देश है। उसको रबर इम्पोर्ट क्यों करना पड़े? क्या टायर इंडस्ट्री का जो association है, वे मिलकर के किसानों के साथ बैठकर के जो भी technology के intervention कर रहे हैं, जो भी उनको guidance देना है और जो उनको assure market देना है। मैं पक्का मानता हूं हिन्दुस्तान का किसान आपकी रबर की आवश्यकता को पूरी कर सकता है। आज रिसर्च करके genetically modified किए हुए रबर ट्री पर बहुत काम हुआ है। भारत में अभी उसका उतना इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। मैं टॉयर बनाने वालों से आग्रह करूंगा, rubber industry के साथ जुड़े हुए जो industry हैं, उनसे आग्रह करूंगा कि जरा किसानों के साथ जुड़िये तो सही। हम integrated comprehensive holistic approach के साथ आगे बढ़ें। हम टुकड़ों में न सोचें। Rubber बाहर से मिल जाता है चलो यार अपन बनाएंगे दोहराएंगे, अरे कभी ये भी तो सोचों कि अपना किसान मजबूत होगा तो मेरे देश में चार गाड़ी और खरीदेगा। और गाड़ी कोई भी खरीदे टॉयर तो आप ही का लगने वाला है। मेरा कहने का तात्पर्य है कि साथियों आप लोग पहली बार जब इतनी बड़ी मात्रा में एक साथ आए हैं, नए सिरे से कैसे सोच सकते हैं, एक दूसरे को helping hand बनकर के नए innovative ideas के साथ आप कैसे आगे बढ़ सकते हैं। और आज हम एक ऐसे स्टेज पर हैं, हम जितने मिलकर साथ काम करेंगे, हमारी ताकत अनेक गुना बढ़ जाएगी और हम दुनिया में छाने का मौका नहीं जाने देंगे।

साथियो!

डिजाइन के क्षेत्र में भी आज दुनिया में जितने भी बड़े-बड़े क्षेत्र हैं, शायद ही कोई ऐसा होगा, जिसकी रिसर्च लैब हिन्दुस्तान में ना हो। भारत के पास एक टैलेंट है, डिजाइनिंग की टैलेंट है। अब हमें हमारे लोगों के दिमाग से निकले हुए डिजाइन लेकर के आना चाहिए, दुनिया को लगे यार गाड़ी तो हिन्दुस्तान की चाहिए, आवाज वो उठनी चाहिए। गर्व से वो कहें कि रास्ते में जाता है कोई भी, अरे ये हमारी मेड इन इंडिया है, जरा देखिए गाड़ी तो देखिए जरा। मैं मानता हूं ये मिजाज पैदा करना चाहिए। और अगर आपका आप पर भरोसा होगा ना तो दुनिया आप पर भरोसा करेगी। मैं जब दुनिया के सामने योग की बात लेकर के गया था, यूएन में मैंने योग की बात कही थी तो मैं वापस हिन्दुस्तान आया तो मुझे कई लोग कह रहे थे, क्या मोदी जी यूएन में पहला भाषण करने गए और आप ये करके आए, लेकिन आज पूरी दुनिया नाक पकड़कर के बैठ गई है। अपने आप पर भरोसा करिए, सामर्थ्य के साथ खड़े हो जाइये, विश्व का कोई ऐसा रास्ता न हो, जहां आप नजर न आए दोस्तों। जहां से नजरें तुम्हारी गुजरें वहां पर तुम्हें गाड़ी तुम्हारी नजर आए। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं! धन्यवाद।

बापू का रास्ता

सोफिया वाडिया

क्या हम भारतवासी उनके दिखाये हुए रास्ते पर, सत्य और अहिंसा, सेवा और बलिदान के रास्तेपर चल रहे हैं ? यदि हमारे राष्ट्रपिता बापूजी इस समय हमारे बीच आ जाते तो वे क्या कहते ? क्या वे हमारा अनैक्य, हमारी असहिष्णुता, हमारा स्वार्थ और अनुशासन- होनता देखकर खून के आँसू न रोने लगते ? हम उनकी स्मृतिके प्रति श्रद्धांजलि अर्पितकर रहे हैं, एक शताब्दी पूर्व भारत की इस धरती पर उनके परम आह्लादकारी अवतरण के उपलक्ष्य में बड़े उत्साह से समारोहों की तैयारी कर रहे हैं किन्तु क्या हमारे दिल साफ है, हमारा अन्त:करण पवित्र और स्वच्छ है? यदि हममें ईमानदारी है तो हमारे सामने गांधीजी के प्रति सम्मान प्रकट करने का एक ही सार्थक तरीका हो सकता है और वह है उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रयत्न करना-एक ऐसे ऐक्यबद्ध भारतका निर्माण करना जो आत्मशक्ति से सम्पन्न और सुदृढ़ हो ।

गांधीजी ने कहा था : मैं भारत को स्वतन्त्र और शक्तिशाली देखना चाहता हूँ जिससे वह स्वेच्छा- पूर्वक संसार के उन्नयन और कल्याण के लिए अपना बलिदान कर सके । इस तरह मैं एक साथ ही दु:खी भी हूँ और नहीं भी हूँ। दु:खी इसलिए हूँ कि हम लोग सत्य और अहिंसा के मार्ग से विचलित हो गये है; और फिर यह सोचकर मेरा दु:ख दूर हो जाता है कि यह भारत कैसा अद्‌भुत देश है जहाँ गांधीजी जैसे व्यक्ति पैदा होते हैं। उनके जीवनका सौरभ कभी पूरी तरह लुस नहीं हो सकता। उन्होंने हमारे सामने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है उसे कोई मिटा नहीं सकता । हम आशा करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारी यह निष्ठा अविचल वनी रहे कि आज जो बादल घिरे हुए हैं वे एक दिन अवश्य छँट जायेंगे और वह प्रकाश फिर प्रकट हो जायगा जो आज के निविड़ अंधकार के पीछे भी जल रहा है। भगवान की कृपा से हम शीघ्र ही सत्य के प्रकाश का दर्शन करें। इस बीच हमें अपना साहस बनाये रखना है और उस स्वर्णिम विहान को शीघ्रता से लाने में लग जाना है। इस कार्य में प्रत्येक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है-प्रत्येक व्यक्ति की अपेक्षा है और उसे अपनी भूमिका अदा करनी है। देश का कोई भी ऐसा छोटा-से-छोटा व्यक्ति नहीं है जो इस महान् कार्यमें अपना योगदान न कर- सकता हो ।

मैं भारत को स्वतन्त्र और शक्तिशाली देखना चाहता हूँ जिससे वह स्वेच्छा-पूर्वक संसार के उन्नयन और कल्याण के लिए अपना बलिदान कर सके। इस तरह मैं एक साथ ही दु:खी भी हूं और नहीं भी हूँ। दु:खी इसलिए हूँ कि हम लोग सत्य और अहिंसा के मार्ग से विचलित हो गये है; और फिर यह सोचकर मेरा दु:ख दूर हो जाता है कि यह भारत कैसा अद्‌भुत देश है जहाँ गांधीजी जैसे व्यक्ति पैदा होते हैं। उनके जीवनका सौरभ कभी पूरी तरह लुस नहीं हो सकता।

इस तरह नयी शक्ति और साहस प्राप्त कर हमें बापू की ओर मुड़ना चाहिये जिन्हें पुरानी पीढ़ी के हम लोगों को व्यक्तिगत रूप से, इतना करीब से जानने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। किन्तु हममें से कितने लोग उन्हें वस्तुत: जान पाये थे ?

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में दो तरह की धाराएँ होती हैं–उसके दो स्वरूप होते हैं –बाह्य और आन्तरिक । उनका बाह्य जीवन वस्तुगत तथ्यों और बाहरी घटनाओं का इतिहास होता है जिसमें उसकी वंश परंपरा, परिवार, धर्म, पर्यावरण, शिक्षा, जीवन आदिका विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उसका यह इतिहास उसके जन्मकी तिथि और जन्म–स्थान से शुरू होकर उसके शरीरान्त की तिथि और स्थान का उल्लेख कर समाप्त हो जाता है। इस प्रकार इसके अन्तर्गत उसकी सत्ताके बाह्य स्तर पर मिलने वाली उसकी उपलब्धियों एवं विफलताओं का ब्योरा दिया जाता है और उसके द्वारा निर्मित उस बाह्य प्रतिरूपकी चर्चा होती है जिसे उससे सम्बद्ध सभी लोग जानते रहते हैं।

इस ज्ञात प्रतिरूप के साथ–साथ चलने वाला अथवा इसके पीछे रहने वाला उसका वह दूसरा प्रतिरूप भी होता है जो अधिकांशत: अज्ञात हो रह जाता है और उसके शाश्वत आन्तरिक व्यक्तित्व में ही वह उज्ज्वल अक्षरों में अङ्कित रहता है। इसे हम चाहें आत्मिक जीवन का रहस्य कहें, चाहे जीवन को चिन्तन पद्धति कहें : यह उसके मनोलोक के तन्तुओं में अन्तनिहित होता है और उसके बाह्य–जीवन की गाथा से कहीं अधिक सत्य और वास्तविक होता है। यह तथ्य प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है किन्तु महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति के संबंध में तो इसका सर्वाधिक महत्त्व होता है। वे इतने महान् थे कि उन्हें केवल उनके बाह्य जीवन के आधार पर समझा ही नहीं जा सकता। इसीलिए वे अपने समकालीन लोगों के बीच अधिकांशत: अज्ञात रूप में ही जीवित रहे और लोगों ने उन्हें प्राय: गलत समझा क्योंकि वे उनके बाह्य व्यक्तित्व के आवरण में छिपे उनके आन्तरिक स्वरूप को देखपाने में असमर्थ थे और सोचते थे कि वह कोई दूसरी ही वस्तु है। सभी महान् पुरुषों के जीवन के संबंध में यह एक अत्यन्त

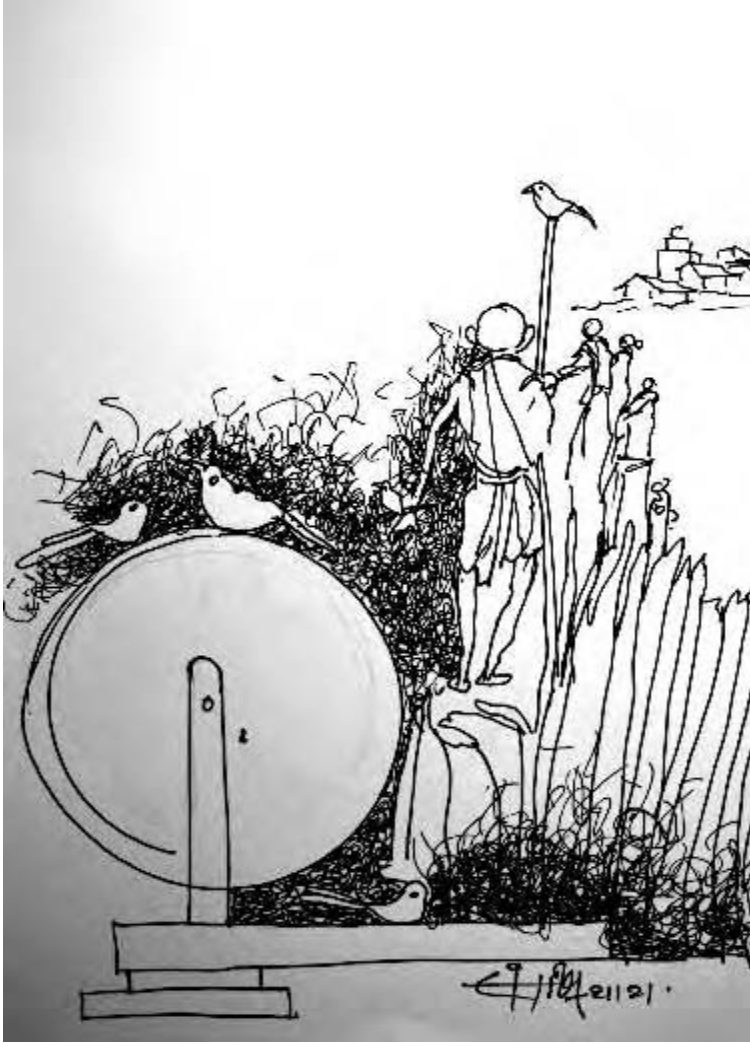

मार्मिक और कष्टकारक तथ्य होता है कि लोग उनके वास्तविक स्वरूप को पहचान ही नहीं पाते और मानवीय स्तरपर वह एकाकी बना रह जाता है और उसकी वाणी प्रायश: अरण्यरोदन बनकर रह जाती है किन्तु फिर भी यह एक बड़े आश्चर्य की वात है कि ऐसे महापुरुषों– के हो जीवन में कभी–कभी अत्यन्त नाटकीय रूप से किसी घटना में उनके आन्तरिक और बाह्य स्वरूप का ऐसा युगपद् सम्मिलन हो जाता है जो उनकी आत्मा–की महानता का शाश्वत साक्ष्य प्रस्तुत कर देता है जिससे भावी पीढ़ियाँ उन्हें पहचानने में समर्थ हो जाती हैं।

गांधीजी का महाप्रयाण एक ऐसी ही घटना थी। इसीलिए आज बीस वर्षों के बाद भी इसकी इतनी अधिक चर्चा होती रहती है और हाल में ही 'लाइफ' पत्रिका (एशियाई संस्करण) में मनोहर मालगाँव करने ''गांधी का निधन : कैसे और क्यों ?'' शीर्षक लेख में इस पर विचार किया है।

एक हत्यारे के हाथ से होने वाली गांधी की हत्या उनकी शहादत का सबूत थी और उसमें उनके अन्तिम बलिदान का आदर्श ही साकार हो उठा था। उन्होंने एक बार कहा था कि : सत्याग्रह की विजय सत्य का अनुसरण करते हुए मृत्यु का वरण कर लेने में ही निहित है।

वे मरकर विजयी हो गये और उनकी ओजस्विनी वाणी, जिसे आज उनकी सन्तानें नहीं सुन पा रही हैं, सारे संसार में प्रतिध्वनित हो रही है और सभी साधनारत व्यक्तियों के हृदय में वह नयी झंकार पैदा करती जा रही है क्योंकि जीवन एक बड़ी महत्त्वाकांक्षा है इसका उद्देश्य परिपूर्णता प्राप्त करना–आत्म–साक्षात्कार की महती उपलब्धि है ।

हमें इस समय यह स्मरण करना चाहिए कि महात्मा गांधीने हमें उस परमात्मा के सम्बन्ध में क्या बताया जो स्वयं सत्य का ही रूप है और हमें उन्होंने उस मनुष्य के संबंध में क्या जानकारी दी जो युग-युग से एक रहस्य बना हुआ है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लें तो हमें परमात्मा और मानव मात्र के साथ अपने वास्तविक संबंध का ज्ञान हो जाय। हमें क्या होना चाहिए इस ओर बढ़ने के लिए पहला कदम निश्चय ही यह है कि पहले हम यह जान लें कि हम क्या है ? आत्मज्ञान के आधार पर ही हम अपने भावी आदर्श जीवन की प्रतिष्ठा कर सकते हैं।

गांधीजी का जीवन आरंभ से लेकर अन्त तक एक उच्च महत्त्वाकांक्षा से ही अनुप्रेरित होता रहा है। इसी ने उन्हें इतना महान् बना दिया था। उनकी महानता केवल इस वातमें नहीं है कि उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग से भारतको स्वतन्त्रता दिला दी। उनको वास्तविक महानता इस तथ्य में निहित है कि वे स्वयं सत्य के प्रकाश में विकसित होते गये । वे निरन्तर सत्यका संघान करते रहे और अन्ततः उसे उपलब्ध कर उन्होंने घोषित कर दिया कि : सत्य परमात्मा का ही अंग है, वही परमात्मा है और प्रत्येक व्यक्ति सत्य की उपलब्धि के लिए प्रयास करने– में समर्थ है।

हमें इस समय यह स्मरण करना चाहिए कि महात्मा गांधीने हमें उस परमात्मा के सम्बन्ध में क्या बताया जो स्वयं सत्य का ही रूप है और हमें उन्होंने उस मनुष्य के संबंध में क्या जानकारी दी जो युग–युग से एक रहस्य बना हुआ है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लें तो हमें परमात्मा और मानव मात्र के साथ अपने वास्तविक संबंध का ज्ञान हो जाय। हमें क्या होना चाहिए इस ओर बढ़ने के लिए पहला कदम निश्चय ही यह है कि पहले हम यह जान लें कि हम क्या है ? आत्मज्ञान के आधार पर ही हम अपने भावी आदर्श जीवन की प्रतिष्ठा कर सकते हैं।

गांधीजी निरन्तर परमात्मा के साहचर्य का अनुभव करते थे। वे अपनी जीवन– यात्रा परमात्मा के साथ कर रहे थे। परमात्मा की सेवा करना और इसीलिए मानवता की सेवा करना ही उनका परम धर्म था। वे हमें यही शिक्षा देते हैं:

अहिंसा में अपनी निष्ठा कायम रखने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि हम किसी ऐसी अति लौकिक अपार्थिव शक्ति में विश्वास करें जिसे परमात्मा कहा जाता है किन्तु परमात्मा आकाश में रहने वाली कोई शक्ति नहीं है। परमात्मा तो वह अदृश्य शक्ति है जो हम सबमें निवास करती है। हमारी उँगलियों के नाखून त्वचा के जितने करीब हैं परमात्मा हमसे उससे भी अधिक निकट है। हममें ऐसी छिपी हुई अनेक शक्तियाँ हैं जिन्हें हम सतत साधना से प्रकट करते हैं। इसी तरह से हम उस सर्वोच्च शक्ति को भी प्राप्त कर सकते हैं यदि हम उसकी प्राप्ति के लिए दृढ़ सङ्कल्प कर लें और अध्यवसाय पूर्वक उसका अनुसंधान करते रहें । अहिसा भगवान को प्राप्त करने का एक ऐसा ही मार्ग है। यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि परमात्मा हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति में निवास करता है इसलिए हमें निरपवाद रूप से मानवमात्र के साथ तादात्म्य स्थापित करना होगा । वैज्ञानिक भाषा में इसे संश्लेषण या आकर्षण कहते हैं। सामान्य भाषामें इसे प्रेम कहते हैं । प्रेम हमें एक दूसरेसे और परमात्मासे आबद्ध कर देता है । अहिसा और प्रेम एक ही वस्तु है।

एक दूसरे स्थान पर वे कहते हैं: परमात्मा का साक्षात्कार करना ही मनुष्य का चरम लक्ष्य है। उसके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी प्रकार के क्रियाकलापों को इसी चरम लक्ष्य द्वारा निर्दिष्ट होना चाहिए। मानव मात्र की तात्कालिक सेवा इस प्रयास का आवश्यक अंग बन जाती है क्योंकि परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग यहीं है कि हम उसका दर्शन उसकी सृष्टि में करें और उसके साथ एकाकार हो जायें। यह केवल सबकी सेवा करने से ही संभव है। मैं समग्र का ही अविच्छेद्य अंग हूँ। मैं अपने से भिन्न शेष मानव जाति- से अलग होकर उसे नहीं प्राप्त कर सकता। मेरे देशवासी मेरे सबसे करीब के पड़ोसी हैं। वे इतने असहाय, इतने साधनहीन और इतने निष्क्रिय एवं जड़ बन गये हैं कि मुझे उनकी सेवा में लगना होगा। यदि मैं अपने को यह समझा पाता कि मैं भगवान को हिमालय को किसी गुफा में पा सकता हूँ तो मैं तत्काल वहाँ चला जाता किन्तु मैं जानता हूँ कि मैं उसे मानवता के अतिरिक्त और कहीं नहीं प्राप्त कर सकता।

गांधीजी के लिए मानव मात्र की एकता एक वास्तविक तथ्य थी : मैं परमात्मा के एकान्त ऐक्य में विश्वास करता हूं अत एव मेरा विश्वास मानवता के ऐक्यमें भी है। यदि हमारे शरीर अलग-अलग हैं तो इससे क्या हुआ ? हमारी आत्मा तो एक ही है। सूर्य को किरणें असंख्य होती है किन्तु उनका स्रोत तो एक ही होता है।

इस तरह यह अनुभव कि हम सभी एक ही आत्मा को किरणें हैं हमें प्रत्यक्षत: इस अनुभूति पर पहुँचा देता है कि निखिल मानवता एक और अविभाज्य है। भगवद्गीता का, जिसके प्रति बापू का इतना अनुराग था, भी यही उपदेश है। बापू भगवद्गीता को माता कहकर पुकारते थे और एक अबोध शिशु की तरह वे बराबर सहायता और मार्ग दर्शन के लिए उसी के पास जाते थे। गीताने कहा है: ''हे भारत ! जिस तरह एक ही सूर्य सारे संसार को प्रकाशित कर रहा है इसी तरह एक ही आत्मा प्रत्येक व्यक्तिको प्रकाशित कर रही है।'' **बापू कहते है :** हमें अपनी शक्ति का नियम निर्धारित करके उसे अपनी शक्ति के अनुसार आचरण में लाने का प्रयास प्रारम्भ कर देना चाहिए।

हमारी अपनी सत्ता का नियम हमें यह निर्देश करता है कि जैसे एक ही आत्मा की किरणें हम सबमें निवास करती है उसी तरह हम भी उसी एक आत्मा में हो निवास करें और अपने बंधुजनों में भी हम वैसे ही निवास करें जैसे वे किरणें उनमें रहती हैं। एक बार जब हमारे सामने यह आदर्श प्रस्तुत हो गया तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने इस आदर्श में अपनी निष्ठा अविचल बनाये रखें। बापू ने हमें बताया है कि अपने आदर्शों में निष्ठा ही मनुष्य का वास्तविक सच्चा जीवन है। वस्तुत: यही मनुष्य का ''सारसर्वस्व'' है। हमें कभी अपने जीवन- में निराशा को स्थान नहीं देना चाहिये । अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रयत्न करते रहना हो महत्त्वपूर्ण है। सतत प्रयत्न करते रहना ही सफलता है-प्रयत्न का रुक जाना ही एकमात्र विफलता है:

परमात्मा का साक्षात्कार करना ही मनुष्य का चरम लक्ष्य है। उसके सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी प्रकार के क्रियाकलापों को इसी चरम लक्ष्य द्वारा निदिष्ट होना चाहिए। मानव मात्र की तात्कालिक सेवा इस प्रयास का आवश्यक अंग बन जाती है क्योंकि परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग यहीं है कि हम उसका दर्शन उसकी सृष्टिमें करें और उसके साथ एकाकार हो जायें। यह केवल सबकी सेवा करने से ही संभव है। मैं समग्र का ही अविच्छेद्य अंग हूँ। मैं अपने से भिन्न शेष मानव जाति- से अलग होकर उसे नहीं प्राप्त कर सकता।

जब तक हमारे प्रयत्न में शिथिलता नहीं आती हमारा लक्ष्य प्राप्त हुआ या नहीं इसका महत्त्व नगण्य है।

हमें अपने आदर्शों से कभी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है और हमें उसे अधिक से अधिक अपने आचरणों में लाने में भी नहीं डरना चाहिये । प्रयत्न करने में ऐसे किसी गुण की अपेक्षा नहीं है जिसे हममें से छोटे से छोटे व्यक्ति भी न प्राप्तकर सकते हों क्योंकि सत्याग्रह तो आन्तरिक आत्मा का ही गुण है । यह प्रत्येक व्यक्ति में अन्तनिहित होता है।

उपर्युक्त शब्द विवेक और ज्ञान के शब्द हैं। उनमें सुनहले उपदेश भरे हुए हैं। हम गांधी साहित्य से ऐसे न जाने कितने अंशोंका उद्धरण दे सकते हैं। ये एक ऐसी जीवन्त शक्तिसे परिपूर्ण हैं कि इनसे बराबर, शान्ति, सान्त्वना, विश्राम, साहस और धैर्य का संचार होता रहता है। अब बापूकी समस्त रचनाओं का संक- लन प्रकाशित हो चुका है। हमें उनकी जन्मशती के अवसर पर इनका अनुशीलन करते हुए उनके मस्तिष्क और हृदय के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना चाहिये । किन्तु हम यहीं रुक न जायें बल्कि उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलनेका भी सङ्कल्प ले लें । हमें उनके सत्य और अहिंसाके सन्देशों को जीवनमें लागू करने का प्रयत्न करना चाहिये ।

भारत और संसार को आज कल्पना सम्पन्न, ईमानदार, चरित्रवान, निष्ठावान् एवं नि:स्वार्थ नर-नारियोंकी अपेक्षा है। गांधीजी के प्रिय शब्दोंमें कहें तो हमें "शत प्रतिशत विश्वसनीय व्यक्ति" अपेक्षित हैं ।

हम जन्मशती के इस समारोह के अवसर पर अपने ऐसे दिव्य गुणों को विकसित करने का व्रत लें जिससे हम "शत प्रतिशत विश्वसनीय व्यक्ति" बन सकें। इसके लिए सच्ची लगन और आत्मानुशासन की दिशा में सतत अध्यवसाय करते रहने की आवश्यकता होगी । आत्मानुशासन के बिना व्यक्ति अपने निम्नतर स्वभाव पर विजय नहीं प्राप्त कर सकता और अपने पर नियन्त्रण स्थापित किये बिना आत्म- साक्षात्कार असंभव है।

गांधीजीने लिखा है कि व्यक्ति पर ध्यान देना सबसे महत्त्व की बात है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति समूचे समाज के साथ एकाकार है: मैं इस बातमें विश्वास नहीं करता कि किसी एक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास से उसके आस-पास रहनेवाले लोग अप्रभावित रह सकते हैं और उनका कुछ भी विकास नहीं हो सकता है। मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ। मुझे मनुष्य के आधारिक ऐक्यमें विश्वास है अतएव सभी प्राणियोंम भी मेरी स्वाभाविक निष्ठा है। इसीलिए मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि आध्यात्मिक दृष्टि से एक व्यक्ति के विकास करने पर सारा संसार उससे लाभान्वित होता है और एक व्यक्ति का भी पतन होने पर सारे संसार का उसी अनुपात में पतन होता है।

मानवता के प्रति हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपना चरित्र सुधारने और अपना मन पवित्र बनाने का प्रयत्न करें और "न्यायपूर्वक व्यवहार और नम्रता- पूर्वक आचरण" की कोशिश करें ।

मेरी यही प्रार्थना है कि महात्मा गांधी के व्यक्तित्व से नि:सूत होने वाली शक्ति हममे से प्रत्येक के हृदय में निरन्तर प्रेरणा की स्रोत बनी रहे और हम उनके अनुग्रह और आशीर्वाद के योग्य अधिकारो बन सकें ।

1. इस बाखीने रेवरेण्ड मार्टिन लूथर किंग के हृदय में झंकार पैदा कर दी थी। उन्होंने अमेरिकी इन्शियों को जैसा नेतृत्व प्रदान किया था उसमें गांधीजी के लक्ष्यों और साधनों की पवित्रता ही परिलक्षित होती है। यह कितने दु:ख की बात है कि गांधीजी के रास्ते पर चलकर उन्हें मी गांधी के समान ही मृत्यु का वरण करना पड़ा ! यह समाचार मुझे करीब-करीब उसी समय मिला जब मैं यह लेख लिख रही थी। उनकी स्मृति के प्रति हमारी अद्धांजलियाँ समर्पित है !
2. सेवा ग्राम के 1 जून, 1642 के एक निजी पत्र से।
3. हरिजन, 26 अगस्त 1636 ।
4. यंग इण्डिया, 25 सितम्बर 1624 ।
5. वही, 5 फरवरी 11625। महात्मा गांधी : सौ वर्ष
6. गांधीजी च करेस्पाण्डेंस विद द गवर्नमेण्ट, 1642044 (नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण, 1682), 74 ।
7. स्पीचेत एण्ड राइटिंग्स आव महात्मा गांधी (बी० ए० नटेसन ऐण्ड कम्पनी, मद्रास, चतुर्थ संस्करण), पृ० 355 ।।
8. यंग इण्डिया, 56 दिसम्बर 1924 ।
9. वही, 4 दिसंबर 1624।

(महात्मा गांधी 100 वर्ष से साभार)

कर्मवीर गांधी

गणेश शंकर विद्यार्थी

संग्राम–घोर! न्याय और अन्याय का! मनुष्य के सर्वोच्च भावों और उसके सबसे नीचे भावों का। पशुता मनुष्यता के मुकाबले में है। एक ओर विकराल शक्ति और दूसरी ओर सौम्य शान्ति! एक ओर पशु–बल और दूसरी ओर धैर्य और दृढ़ता! एक ओर प्रकृति के स्वयंनिर्मित ठेकेदार और दूसरी ओर प्रकृति की स्वाभाविकता के साथ उपासना करने वाली बीसवीं शताब्दी! उसकी रँगरेलियों से संसार की आँखें झप गईं। मोहनी मूर्ति–और संसार मोह गया। विकट जाल–मोह गये, फँस गये और सो गये! सुंदर रूप बदला। चंडिका ने अपनी भयंकर आकृति धारण की। चोट लगी – और बड़ी भारी। नींद उचट गयी। सज्जनता, समता, भ्रातृत्व और मनुष्यता की शान्तिमय अमृत–धारा में हलाहल विष की रेख देख पड़ी। लावण्यता में कुरुपता घुली मिली। सरलता से भरी हुई हँसी में घृणा, अपमान और तिरस्कार से भरी हुई मुस्कुराहट नजर आई। अमृत और विष! मिष्टता और कटुता!

घोर संग्राम! सभ्यता और उस पर भी बढ़ी हुई, लेकिन घटिया सभ्यता ने इतना विष नहीं उगला था। न्याय और स्वतंत्रता की भूमि से नाता जोड़ने वाले, लेकिन हृदय इतना छोटा कि मनुष्य और मनु में फर्क निकालने वाले! सफेद चमड़े के हृदय में कालापन आ गया। गोरा संसार और काला संसार। काले में सभ्यता नहीं। काले में तमीज नहीं। काली खोपड़ी में अक्ल कहाँ? काले रंग से सद्गुणों को घृणा है। योग्यता, सभ्यता, सौम्यता, सत्यता और विज्ञता सब गोरे रंगे लिए प्रकृति ने सुरक्षित रख छोड़े हैं। काले रंग का उन पर दावा नहीं। भूमि–वह भी सुरक्षित है। छि: काले! पवित्र भूमि पर पैर मत रख, यह भूमि गोरे खुदाई फौजदारों की है। दक्षिण अफ्रीका, कनाडा और आस्ट्रेलिया मेरे राजा के झंडे तले हैं। लेकिन भारत से बाहर होते ही तू अपने राजा के झंडे से बाहर हो जाता है। संसार में, काले आदमी, तेरा कहीं भी ठिकाना नहीं।

(2)

बीसवीं शताब्दी के इस घोर संग्राम की छटा देखोगे? भयंकर रूप! पूरा बल! अथाह वेग! सामना करना अति कठिन! संसार के मजबूत से मजबूत हाथ ढीले हैं। फौलाद हैं, जो नहीं कटता। हवा है, जो नहीं दबती। जल है, जो नहीं पकड़ा जाता। इंग्लैण्ड की लम्बी भुजाएँ शिथिल हैं। लाड़ले

सभ्यता और उस पर भी बढ़ी हुई, लेकिन घटिया सभ्यता ने इतना विष नहीं उगला था। न्याय और स्वतंत्रता की भूमि से नाता जोड़ने वाले, लेकिन हृदय इतना छोटा कि मनुष्य और मनु में फर्क निकालने वाले! सफेद चमड़े के हृदय में कालापन आ गया। गोरा संसार और काला संसार। काले में सभ्यता नहीं। काले में तमीज नहीं। काली खोपड़ी में अक्खल कहाँ? काले रंग से सद्गुणों को घृणा है। योग्यता, सभ्यता, सौम्यता, सत्यता और विज्ञता सब गोरे रंगे लिए प्रकृति ने सुरक्षित रख छोड़े हैं।

बेटे–और अब वे बिगड़ गये। हाथ से जाते रहे। मानने से मानते नहीं। दूसरों की परवा ही क्या? जिन्हें परवा है, वे कठोर शक्ति की कठोरता का शिकार हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के निवासी, लेकिन इससे क्या? तुम एशिया के रंगदार आदमी हो। एक दोषी की तरह रजिस्टर में अपनी उँगलियों की छाप दो और यह लो सर्टिफिकेट, जो तुम्हारी हीनता, दीनता और दुर्दशा की सनद है। अच्छी तरह रखना, अफ्रीका का छोटा अफसर तुमसे इसे माँगेगा। दिखाना, नहीं तो 1500 जुर्माना या तीन मास के लिए जेल जाओगे। व्यापार करना हो तो लाइसेंस लो। तुम किसी खास जायदाद के मालिक नहीं हो सकते। नेटाल के काले हिन्दुस्तानियों! तुम पैतालीस रुपये साल का टैक्स दो! कोई रियायत नहीं, चाहे गरीब हो या अमीर। यदि तुम पुरुष हो और तुम्हारी उम्र सोलह से अधिक है, और यदि तुम लड़की हो और तुम्हारी उम्र तेरह वर्ष की है, और चाहे तुम दोनों कुछ भी न करते हो, लेकिन तुम्हें यह टैक्स देना ही पड़ेगा। नहीं तो जेल। अपमान – और बात–बात पर। फुटपाथ पर न चलने पाओगे। ट्राम में न बैठने पाओगे। होटलों से निकाले जाओगे, और रेल के उच्च दर्जों में तुम काले आदमियों के लिए जगह नहीं। तुम्हारी स्त्री – छि:, कैसी स्त्री और कैसे पुत्र? होश की बातें करो। तुम्हारी स्त्री दक्षिण अफ्रीका में वेश्या है और तुम्हारे बच्चे, दोगले लड़के!

(3)

देवासुर संग्राम! आधुनिक सभ्यता के पशु–भाग का विकास! चंडिका परमाणुवादिता का विजय–हास्य से भरा गगनभेदी–नाद! देश–भक्ति और जाति–भक्ति नहीं, नैतिक कर्तव्य की प्रेरणा नहीं, नागरिकों की नागरिकता नहीं, किन्तु नीचातिनीच स्वार्थ, धूर्तता और सांसारिक सुख और वह भी व्यक्तिगत ही। बढ़ती हुई भीषणता, और चढ़ी हुई निर्दयता! लेकिन, इधर हृदय और सच्चे हृदय। अन्याय, अत्याचार, स्वार्थ और अविवेक की बड़ी से बड़ी शक्ति के सामने न झुकने वाले। इधर हिरण्यकश्यप की रुद्रता और कठोरता। इधर प्रहलाद की निर्मल, कोमल और सबल अटलता। राम और रावण, कृष्ण और कंस एक दूसरे के लिए परमावश्खक। और वह भूमि–राम, कृष्ण और प्रहलाद की भूमि–संसार के सामने आई। बढ़ती हुई भयंकर, तामसिक और क्रूर लहरों को चट्टान का सामना करना पड़ा। सतयुग में देवासुर संग्राम के समय समुद्र मथा गया। चौदह रत्न निकले। कलियुग में भी यह संग्राम पेश है। समुद्र की शान्ति भंग की गयी। देवताओं ने नहीं, असुरों ने की। फल? रत्न निकले और ऐसे, जिन पर किसी एक देश के देतवा ही नहीं, संसार भर के देवता न्योछावर हो जायँ। शान्ति की अनन्त राशियों ने पशुबल के सूखे जंगल में चिंगारी लगाने के लिए आत्मबल की ज्योतिर्मयी, स्थिर, दिव्य अग्निशिखा को जन्खम दिया। प्राचीन भूमि अभी उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट नहीं हुई। मुर्झाया हुआ हृदय। खिल उठा! अभी तेरी भूमि की मिट्टी, हवा और पानी में वृत्रासुर के लिए दधीचि के पैदा करने की शक्ति है। गिरी हुई आत्मा! अधिक नीचे मत गिर! अभी तेरे आकश में सहस्त्रो कर्मवरी नक्षत्र के साथ कर्मवरी चन्द्र के उदय करने की बल है। आह! मातृभूमि! तेरी शक्ति पर अविश्वास नहीं और तेरी भक्ति में निराशा नहीं। पशु–बल! उसकी परवा नहीं, जब तक तू अपने पुत्रों के हृदयों में आत्म–बल का संदेश पहुँचा सकती है।

(4)

पहिली चोट! आकाश ने चंद्र और उसके साथी नक्षत्रों का आवाहन किया। कर्मवीर मोहनदास कर्मचंद गांधी और उसके साथी कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हुए। अफ्रीका का समुद्रतट! गांधी का जहाज! गांधी अपने साथ बहुत से हिन्दुस्तानी कारीगर ला रहा है। अब गोरे कारीगरों का रोजगार मारा गया। गोरों के हृदय काँप उठे। गांधी को जीता न छोड़ो। गांधी, जहाज से अभी मत उतरो! लेकिन, नहीं मानते तो देखो, तुम्हारे ऊपर चोट होना ही चाहती है। लो, वे तुम्हारे ऊपर टूट पड़े। एक नहीं, दो नहीं, कितने ही एक साथ! बचाओ! कोई बचाओ। लेकिन कौन आगे बढ़े? कोई पुरुष नहीं। एक देवी, और वह भी उस रंग की, जिस रंग के लोग जमीन पर पैर नहीं रखते। जान बची, और बड़ी मुश्किल से। किसी पुरुष की दया से नहीं, बल्कि एक देवी की कृपा से। दक्षिण अफ्रीका के पुरुषत्व–विहीन पुरुषों की मरुभूमि में इस देवी की दिव्य शान्त छाया! गनीमत!

भीषण बोअर युद्ध! गोलियाँ चल रहीं हैं। तोपें गोले उगल रही हैं। लाशें गिर रही हैं और रणक्षेत्र में ये कौन हैं? सैनिक नहीं, सादे भेष वाले। एक हजार आदमी। गोरे भी नहीं और अफ्रीका के काले भी नहीं। ये हैं गांधी के साथी।

देखो, वे घायलों को रणक्षेत्र में से उठाते फिरते हैं, उनके घावों को धोते हैं और उनकी सेवा-सुश्रूषा करते हैं। गोलियाँ बरस रही हैं, और इनको जान की परवा नहीं। सेनापति लार्ड राबर्ट्स का इकलौता पुत्र रणक्षेत्र की गोली का शिकार होता है और वह देखो, गांधी के काले साथे उसके गोरे शरीर को गोलियों के मेह से उठाकर ला रहे हैं। एक वह सुलूक, जो सभ्य गोरों ने असभ्य काले हिन्दुस्तानियों के नेता गांधी के साथ जहाज पर से उतरते समय किया था, और एक यह।

(5)

1906। काले रंग के धब्बे से दक्षिण अफ्रीका को सुरक्षित रखने की गोरी तरकीब का आगमन हुआ। सतियाँ और झिड़कियाँ, उपेक्षा और अपमान के बादल घिर आये। खैरियत और केवल इसी में, कि पशु-बल का आत्म-बल से मुकाबला किया जाय। प्रार्थनाएँ लेकिन, गांधी ये देवता प्रार्थनाओं के लिए बहरे है। इंग्लैण्ड जाओ, चाहे और जगह, होगा कुछ नहीं। जातीय मान और जातीय पुरुषत्व का दाँव है। अस्तित्व के लिए बल को प्रकट करने की जरूरत है। परीक्षा में दृढ़ता की परख है। तुम्हारा परिश्रम, तुम्हारी लेखनी का बल और तुम्हारे बोलने की शक्ति देखो, सब दम की दम में व्यर्थ हो गयी, क्योंकि इंग्लैण्ड भी अनुदारता के कठोर चंगुल में फँस गया है।

दूसरी चोट! गांधी जेल में और कितने ही हिन्दुस्तानियों के साथ! भयंकर दोष! उन्होंने अफ्रीका की धींगाधींगी का विरोध किया। सजाएँ हुई और ज्यादा से ज्यादा। जेल में कड़े काम, नाना प्रकार की तकलीफें, अफ्रीका के असभ्यपन की तरंग और कैदियों का मरण। गांधी को दो मास की सजा और साथियों को छह-छह मास की। दो ही मास की? नहीं, उतनी ही सजा दीजिए जितनी मेरे साथियों की है। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। नेता का हृदय अपने साथियों के इस अधिक कष्ट से फट गया। आँसू बह चले। सिर झुक गया। मुँह मुर्झा गया। अच्छा भोजन, गांधी, अच्छा भोजन लो! लेकिन मेरे साथियों को? उनको अफ्रीका के आदिवासियों का भोजन मिलेगा। मेरे लिए यह विष है। दृढ़ता ने स्वेच्छाचारिता के पैर डगमगा दिये। लो, छोड़े जाते हो और यह कानून भी थोड़े ही दिनों में रद्द हो जायेगा। जब तक नहीं होता, तब तक उसके अनुसार अपने नाम रजिस्टर करा लो। अच्छा, लेकिन एक दल-विरोधी उठ खड़ा हुआ। वीर नेता इस नियम के अनुसार काम करने के लिए आगे बढ़ता है, और उसकी पीठ पर अपने ही एक देश-बंधु पठान की छुरी पड़ती है। क्यों? गांधी अपने पथ से हट गया है। लेकिन नहीं। पठान, तू भूल करता है। गांधी तुझसे अधिक दृढ़ है और अंत में, देख, तुझे उसके बल के सामने सिर झुकाना पड़ता है, क्योंकि उसका हृदय इतना बड़ा है कि उसने अपने हत्यारे को क्षमा कर दिया और साथ ही, बेहोश रहते हुए भी उस काम को पूरा ही करके छोड़ा जिसके रोकने के लिए तू उनकी हत्खया करने को आगे बढ़ा था।

1906। काले रंग के धब्बे से दक्षिण अफ्रीका को सुरक्षित रखने की गोरी तरकीब का आगमन हुआ। सतियाँ और झिड़कियाँ, उपेक्षा और अपमान के बादल घिर आये। खैरियत और केवल इसी में, कि पशु-बल का आत्म-बल से मुकाबला किया जाय। प्रार्थनाएँ लेकिन, गांधी ये देवता प्रार्थनाओं के लिए बहरे है। इंग्लैण्ड जाओ, चाहे और जगह, होगा कुछ नहीं। जातीय मान और जातीय पुरुषत्व का दाँव है।

लेकिन अफ्रीका के गोरे शासक झूठे निकले। गांधी इंग्लैण्ड में फिर जेल में। नेता और साथी दोनों। मासों कारागार की कठिन तकलीफ! कपड़े ठीक नहीं, भोजन ठीक नहीं, साथियों के बच्चे और स्त्रियाँ भूखीं। पहरेदारों का अत्याचार और अधिकारियों का स्वेच्छाचार! लेकिन न चन्द्र की ज्योति घटी और न तारों ही की। चन्द्र के तेज के सामने राहु के छक्के छूट गये। हजारों नक्षत्रों में से शायद ही किसी ने टूटने का नाम लिया हो। जेल एक ही बार नहीं, कई-कई बार! अत्याचार एक ही बार नहीं, कई-बार! नहीं डिगे और नहीं डिगे।

पत्तियाँ हरी हैं और जड़ उन्हें पानी पहुँचाती है। तारे चमकते हैं और सूर्य से उन्हें प्रकाश मिलता है। अफ्रीका की मरुभूमि में अमृत वर्षा हुई और वर्षा की इन्द्र गांधी ने! शुष्क भूमि में आत्म-शक्ति की अर्चा हुई, और अर्चा की राम गांधी ने। दया शून्य हृदयों में दृढ़ता और बल का सिक्का जमा और सिक्का जमाया भीष्म गांधी ने। और गांधी को किस जड़ ने रस पहुँचाया? उस माता ने जिसके

स्तन-पान से उसका शरीर पला। गांधी! बैरिस्टरी के लिए विलायत जाओ, लेकिन शपथ खाओ कि तुम मांस-मदिरा और स्त्री का सेवन नहीं करोगे। माता, नहीं करूँगा। और अक्षर-अक्षर शपथ निबाही गयी। और इस वीरा माता को किस माता ने जन्मा? मेरी और तुम्हारी माता ने, मेरी और तुम्हारी जननी ने, मेरी और तुम्हारी जननी ने, मेरी और तुम्हारी पालन-पोषण कत्रीं देवी ने! बालक गांधी और अब पुरुष गांधी। साथियों के ऊपर दोष लगाया जाता है, लेकिन नहीं, मैं ही दोषी हूँ। मुझी को सजा दो। हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही माता के पुत्र हैं। आप मुझे सराहते हैं और चीजें भेंट करते हैं, लेकिन मैंने किया ही क्या? सेवा का भाव हृदय को उच्च करता है और जो आदमी जितनी ही सेवा करता है, वह अपने को उतना ही उच्च बनाता है। प्लेग फैला और गांधी अपने देश-भाइयों की सेवा में दत्त-चित्त। अपने तन-बदन की सुध नहीं। हजारों रुपया मासिक की आय, लेकिन अब कुछ नहीं जो थी, वह सब सेवा की बेदी पर भेंट। युद्ध! गोरे असभ्य लोगों के खून से पृथ्वी को रँग रहे हैं। गोरों का पशुवत् हाथ बेदर्दी से रोका नहीं जा सकेता। लेकिन, वह देखो! गांधी गोरे हाथों की काली बेदर्दी का शिकार अफ्रीका के काले आदमियों के घावों की मरहम-पट्टी कर रहा है। देश की मान-रक्षा के लिए धन की जरूरत है। लो, सब अर्पण। देश-भाइयों की दुख-भरी आवाज का मार्ग यह लो-'इंडियन ओपीनियमन'। सारा खर्च - लाखों रुपये-अपने पास से 100 एकड़ भूमि यह भी लो, देश-भाइयों के लिए। कैदी के भेष में, हथकड़ियाँ पड़ी हुई - गठरी लादे हुए शहर के बीच में से होकर निकलना पड़ा, लेकिन यह भी कुछ नहीं। स्खत्री बीमार है और लड़का अस्वस्थ। गांधी! देख आओ, देखो, अधिकारी लोग भी कहते हैं। लेकिन स्त्री की बीमारी से कर्तव्यपालन ज्यादा महत्व का है। पूरा और पक्का बैरिस्टर, लेकिन स्याह का सफेद और सफेद का स्याह बनाने वाला नहीं। मुअक्किल झूठ बोला और कचहरी में, जज के सामने पहुँचने पर झूठ जानते ही मुअक्किल से सूखा सलाम। शत्रु भी सज्जनता के इतने कायल कि हथकड़ी भरे हुए हाथों और गठरी लादे हुए शहर से निकाले जाने पर गोरे 'नेटाल मरकरी' के हृदय में भी न्याय की लहरों ने हिलोरें मारी थीं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, गोरे और काले, सभ्य और असभ्य सभी बराबर क्योंकि सभी परमपिता के हाथ की मूर्तियाँ हैं। सादगी और वह भी हद से बढ़ी हुई। कहा जाता है कि कभी पच्चीस लाख का आदमी, लेकिन अब पास एक हजार भी नहीं। सब सेवा-भाव की नजर। पत्नी वीरा। पुत्र वीर। पत्नी जेल गयी और पुत्र हो आया और अब फिर तैयार!

(6)

शान्ति हुई थी, लेकिन अशान्ति की अग्नि भभक उठी। वही संग्राम और ओज से। कर्मवीर तैयार है, सिर हथेलियों पर। मातृभूमि और जाति की मान-मर्यादा की बेदी पर तन, मन और धन अर्पण। गांधी जेल में और नौ मास के लिये। और भी दो हजार वीरों पर चंगुल है। वीरा नारियाँ भी पीछे नहीं। घरे तपस्या! और इस तपस्या, इस महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं और अब देवगण देख रहे हैं कि यज्ञ के मुख्य पात्र, भारत मही की गोद में सुख-निद्रा लेने वाले, अपना यज्ञ-भाग लेने के लिये किस तरह आगे बढ़ते हैं? प्राणों की माँग नहीं, और न शरीर ही की। हाथ के मैल की जरूरत है और वह भी दूसरों के लिए नहीं, अपने भाइयों के बच्चों को कुछ दिन खिलाने के लिए। नहीं, बल्कि अपनी और अपने देश की मान-रक्षा के काम को जारी रखने के लिए। सभ्य संसार देख रहा है, नहीं, सभ्य संसार से क्या मतलब, क्योंकि उसे गोरे और काले रेग के सवाल ने बावला कर रखा है। हमारे पूर्व-पुरुष जिन्होंने अपने उच्च भावों पर कोड़ी को, नहीं हड्डी की कोडी को ही नहीं, अपने सब कुछ तक को आन की आन में न्योछावर कर दिया, आज आकाश से देख रहे हैं कि हम उनकी संतान अपने उच्च भावों की रक्षा के लिए कितने त्याग से काम ले सकते हैं। कपूत? कदापि नहीं, जब तक हमारे शरीर में अक्ल है और अक्ल में तमीज करने की शक्ति, जब तक हमारे हृदय में भाव है और भावों में आगे बढ़ने का बल, जब तक हमें अपनी मातृभूमि का ज्ञान है और हमारी मातृभूमि में हमें उत्साहित करने की शक्ति, जब तक हमारे नेत्र संसार की ओर हैं और संसार में आगे बढ़ने के लिए रास्ते, तब तक हम कदापि पीछे नहीं देखेंगे, पीछे कदम नहीं रखेंगे, और पीछे नहीं मुड़ेंगे।

अहिंसक खेती : कृषि परमो कर्म उत्तम खेती

दिलीप चिंचालकर

मध्यम व्यापार/नीच नौकरी भीख निदान। जीवनयापन के चार तरीकों में खेती को सर्वोत्तम बताया गया है। इसमें न धंधेबाजी है न नौकरी बजाने की विवशता। बंधीबंधाई पगार और गैर अनुपातिक लाभ का मोह भी नहीं है। खेती एक स्वस्थ जीवन शैली है, जिसमें पूरे समाज का हित है बशर्ते यह प्राकृतिक या अहिंसक तरीके से की जाए अर्थात किसान अपनी परंपराओं का ध्यान रखते हुए कृषक धर्म का पालन करें। प्रथम दृष्टया दकियानूसी लगने वाली इस बात पर कम कहा अधिक समझना वाली भावना के साथ विचार करना आवश्यक है। व्यापार और नौकरी में गृहस्थ धर्म धन कमाने, परिवार का हित साधने और आय का कुछ हिस्सा समाज को लौटाने की बात कहता है। भीख इन सबसे पल्ला झाड़कर निकृष्टतम बनी रहती है। परंतु खेती धन के बजाए पुण्य कमाने, परिवार से ज्यादा समाज-कल्याण करने और आय का कुछ ही हिस्सा उसे लौटाने से बेहतर उसे सक्षम-स्वावलंबी बनाने का आग्रह रखती है। यही भावना इसे सर्वोत्कृष्टता का दर्जा देती है।

जब किसान परंपरागत तरीके से खेती करता है तो वह अनायास ही उन सभी बातों का ध्यान रखता है जो आने वाले समय में समस्या का रुप ले सकती है। सबसे पहले है फसलचक्र के अनुसार स्थानीय फसलों की बुवाई। साल-दर-साल बोई एक ही फसल जमीन से चुनिंदा तत्त्व खींचकर उसे उजाड़ती जाती है। फसलों की अदला-बदली, उदाहरण के लिए कपास के ज्वार या मूंगफली का चक्र, इस प्रभाव को कम करती है। पुरानी कही जाने वाली खेती यह ध्यान रखती थी कि कतार में खड़ी फसल के साथ घना बोया हुआ बारीक अनाज (रागी, कोदो, कुटकी) और आसपास फैलते मटर परिवार के पौधे (मूंग, अरहर) हों, जिससे जमीन की गुणवत्ता और भुरभुरापन बना रहे। वर्षों से उसी प्रदेश में उगती पनपती स्थानीय किस्में अपने को वहां की जलवायु से अभ्यस्त कर चुकी होती हैं, इसलिए कीटों और बीमारियों का उन पर हमला इतना अकस्मात नहीं होता कि उनकी जड़ें उखड़ जाएं।

जब किसान परंपरागत तरीके से खेती करता है तो वह अनायास ही उन सभी बातों का ध्यान रखता है जो आने वाले समय में समस्या का रुप ले सकती है। सबसे पहले है फसलचक्र के अनुसार स्थानीय फसलों की बुवाई। साल-दर-साल बोई एक ही फसल जमीन से चुनिंदा तत्त्व खींचकर उसे उजाड़ती जाती है। फसलों की अदला-बदली, उदाहरण के लिए कपास के ज्वार या मूंगफली का चक्र, इस प्रभाव को कम करती है।

फिर पूरे प्रदेश में अधिकाधिक फसलों की मिश्रित खेती ऐसे हमलों में पूरी तरह चौपट होने से बची रहती हैं। इससे आवश्यक अनाज, प्रोटीनयुक्त दलहन और तेलबीजों की आपूर्ति सुनिश्चित रहती है। खेतों के आसपास की जमीन पर उगी घास की अपनी भूमिका होती है–मिट्टी को बांधने और मवेशियों के लिए चारा उपलब्ध करवाने की। प्रदेश की मिट्टी और आबोहवा के कारण फसलों का अपना विशिष्ट स्वाद होता है। जैसे मालवा मध्यप्रदेश के पिस्सी मालवी गेहूं का। यह परंपरा से बाफला या बाटी जैसे पकवानों के खास स्वाद का आधार रहा है। इन बीजों ने देहातों के खानपान को स्वाद संपन्न रखा। किसानों ने इन्हें मौसम दर मौसम, पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित बनाए रखा।

यह उसी प्रकृति की देन है कि दुख के बगैर सुख का भान नहीं होता और हिंसा के बिना अहिंसा समझ में नहीं आती। अहिंसक कही जा सकने वाली खेती देश में हरित क्रांति के साथ पूरी तरह खत्म हो गई। पहले ज्यादा खाद-पानी मांगने वाला लाल गेहूं आया, जिसने तमाम देशी किस्मों को खेतों से खदेड़ बाहर किया। उसके साथ आई गाजर घास जो देश के ग्रामीण और शहरी इलाकों में फैलकर लहलहाने लगी। सोयाबीन ने जुबान से मूंगफली और तिल्ली के तेल का स्वाद ही भुला दिया। बीटी कपास की मांग तो प्राणों से कम कुछ नहीं है। देश की भूख मिटाने का वादा करने वाली फसलों की अपनी भी भूख थी-पानी और रासायनिक उर्वरकों की। विदेशी फसलों की यह मांग किसानों को अंततः भारी पड़ी।

खेती कामों में किसान का पूरा परिवार और गांव के भूमिहीन रोजगार पाते हैं। बढ़ई हल–बैलगाड़ियों की मरम्मत का, कुम्हार मटके–घड़े बनाने का और इसी तरह जुलाहे, मोची वगैरा। जिनके पास हुनर नहीं है, वे श्रमिकों का काम पाते हैं। मेहनत में हिस्सेदारी गोवंश की भी है। गाय और बैल अपने–अपने ढंग से किसान के दाहिने और बाएं हाथ होते हैं। फसल कट जाने के बाद गांव के पुजारी, वैद्य इत्यादि का बोरी–दो बोरी का हिस्सा होता है। खेत में बिखरी बालियों पर भी बीनने वाले मजदूरों का हक और डण्ठल–पत्तियां कट कर चौपायों का भोजन बनता है। यहां हिसाब बराबर नहीं होता। जितना लिया उसे लौटाने में चार पैर आगे ही रहते हैं मूक पशु। गोबर–गोमूत्र खाद के रुप में जमीन का उपजाऊपन बनाए रखते हैं। धुआं और गंध रहित गोबर गैस का ईंधन देते हैं। मरने के बाद खाल से बनती है मशक जो कुंए से पानी खींचकर खेती की सिंचाई करती है।

परंपरागत खेती की स्वस्थ दिनचर्या ने किसान को मुंह अंधेरे उठाकर रात को जल्दी सोने को भेजा। शाम को चौपाल पर बैठाकर सामाजिक बनने और हरिनाम के साथ आत्मिक संतोष भी दिया। इस दौर में पर्यावरण सुरक्षित रहा। जंगल बने रहे और नदियां बहती रही। खेती ने प्रकृति की निकटता नहीं खोई और खेती के निमित्त मनुष्य की प्रकृति से आत्मीयता बनी रही। भारत तब विकसित देशों की जमात में बैठने के लिए आतुर नहीं, एक कृषि प्रधान देश था और गांवों में बसता था। देहातों की पहुंच शहरों तक नहीं थी और शहरों की दृष्टि देहातों पर नहीं। विकास की चमक–दमक गांवों तक पहुंची नहीं थी, फिर भी वे मन से संपन्न थे। खेती और देहाती समाज में अहिंसा थी।

यह उसी प्रकृति की देन है कि दुख के बगैर सुख का भान नहीं होता और हिंसा के बिना अहिंसा समझ में नहीं आती। अहिंसक कही जा सकने वाली खेती देश में हरित क्रांति के साथ पूरी तरह खत्म हो गई। पहले ज्यादा खाद–पानी मांगने वाला लाल गेहूं आया, जिसने तमाम देशी किस्मों को खेतों से खदेड़ बाहर किया। उसके साथ आई गाजर घास जो देश के ग्रामीण और शहरी इलाकों में फैलकर लहलहाने लगी। सोयाबीन ने जुबान से मूंगफली और तिल्ली के तेल का स्वाद ही भुला दिया। बीटी कपास की मांग तो प्राणों से कम कुछ नहीं है। देश की भूख मिटाने का वादा करने वाली फसलों की अपनी भी भूख थी–पानी और रासायनिक उर्वरकों की। विदेशी फसलों की यह मांग किसानों को अंततः भारी पड़ी।

प्रकृति अपने संसार की निरंतरता बनाए रखने के लिए उसमें लगातार संतुलन बनाए रखती है। आम के पेड़ पर भरभरा कर छाया बौर यदि प्रकृति की उदारता है तो

आंधी वर्षा में उसका बड़ा हिस्सा झड़ जाना भी प्रकृति की कृपा है। ऐसा न हो तो सारे फूलों को फलों में बदलना पेड़ को कमजोर डालेगा। बहुलता और फिर उसका विनाश प्रकृति का अपना तरीका है। उत्पादन बढ़ाने और कीट-पतंगों को खत्म करने की मनुष्य की सोच इकतरफा है। इसमें असंतुलन है। एक ही पौधे में चार तरह के फल लगाना यदि जीव जगत के लिए कल्याणकारी होता तो सृष्टि में उसकी व्यवस्था लाखों वर्षों पहले हो चुकी होती। इसलिए उत्पादन बढ़ाने के लिए कोशिकाओं के साथ छेड़खछाड़ करना अप्राकृतिक है और आखिर में नुकसानदायी ही होगा।

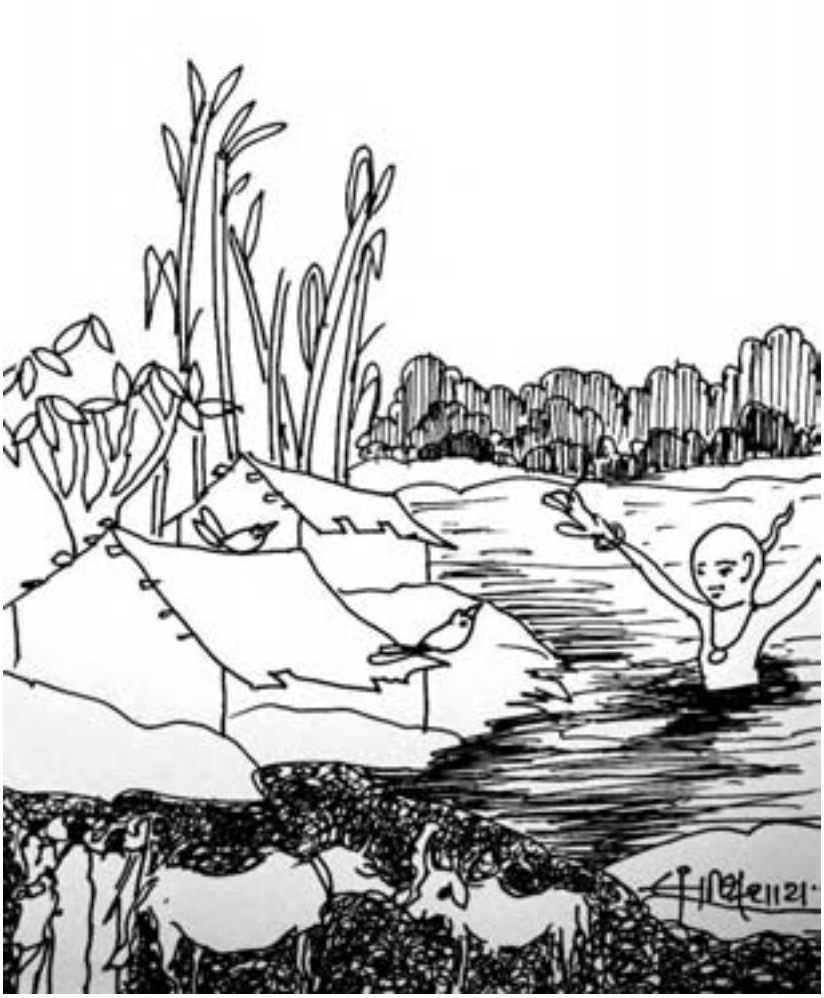

सिद्ध धरती को माता का दर्जा देने वाले किसान अधिक पैदावार के मोह में पड़कर यह भूल गए कि रासायनिक खाद का प्रयोग पृथ्वी की उर्वरा शक्ति की अवमानना है। हर जमीन का अपना एक स्वभाव होता है और उसके अनुरुप एक सी एन रेशो- कार्बन नाइट्रोजन का अनुपात। यानी वह कितने कार्बन कणों पर कितने नाइट्रोजन की मात्रा सोख पाएगी। फसल का कचरा, सूखी पत्तियां, गोबर की खाद जमीन में कार्बन की मात्रा बढ़ाती है। इसके बगैर उर्वरकों के जरिए डाले हुए तत्त्व व्यर्थ हैं। इस वैज्ञानिक तथ्य की अनदेखी करने पर जमीन रूठकर अपने हाथ खींच लेती है। तब हर वर्ष अधिकाधिक उर्वरकों की आवश्यकता पड़ती जाती है। उसकी भी एक सीमा है। इस बीच जमीन को हालत बगैर भोजन लिए लगातार भारी दवाइयां निगल रहे मरीज की तरह बिगड़ती जाती है।

विदेशी बीजों ने न केवल स्थानीय देशी दलहन और तिलहन फसलों को खत्म किया, मिली जुली फसलों का चलन और फसल चक चौपट किए, खेतों की मिट्टी पलीद की। पौधों पर हरे पत्तों की जगह हरे नोट उगाने वाली नकदी फसलों को सींचने में किसानों ने कुंए और नदियां रीती कर दी। महंगे बीज और खाद खरीदने में कर्जे ऊंचे चढ़ गए। मोनोकल्चर या मीलों तक एक ही फसल की खेती की संस्कृति ने कीट-पतंगों को बुलावा दिया। फसलें उजड़ीं। जो ठगीं, उनके बीज दोबारा बोने लायक नहीं पाए गए। ऐसे में हताश किसानों को एक ही विकल्प नजर आया-जमीन फट जाए और वे उसमें समा जाएं।

वैज्ञानिक कही जाने वाली खेती विफल होने पर इतनी हिंसक हो सकती है। सफल होने पर भी वह कम खतरनाक नहीं है। नकदी फसलों की नकदी जितनी मूसलधार बरस कर आती है, उतनी तेजी से विवेक बहा ले जाती है। संपन्नता की मोटरगाड़ियों पर

सवार होकर फसलें, सब्जियां, दूध और युवा पीढ़ी शहर की ओर जाती है। बदले में विलासिता की गैर-जरुरी वस्तुएं ट्रकों में लदकर गांवों में पहुंचती हैं। बढ़े हुए जीवन स्तर पर लहराती है उच्च रक्तचाप, मधुमेह और हृदय विकार जैसी बीमारियों की पताका। खेती में अहिंसा की शर्त की जो बात शुरुआत में अटपटी लगती है, इसके वर्तमान विद्रूप स्वरुप के कारण पर्याप्त स्पष्ट हो जाती है। अब खेती में व्यापार, नौकरी और भीख सब शामिल हो गए हैं। रासायनिक खेती के आदी किसानों को डर है कि इसका उपयोग बंद करने पर कीट और रोगों का प्रकोप बढ़ जाएगा। लेकिन यह अल्पकालिक होता है। तीसरे वर्ष तक खेती सामान्य की ओर लौटने लगती है। ठीक समय पर बोवनी इस समस्या का निदान है। देर से बोई गई या उस क्षेत्र के लिए असामान्य फसलें जो पकने में ज्यादा समय लेती हैं, अक्सर कीटों का शिकार होती हैं। मिश्रित फसलों से पूरी खेती चौपट होने की संभावना कम होती है। यह अपने आप में फसल बीमा है। फसल में लगने वाले कीड़ों पर काबू पाने के लिए जैविक नियंत्रण अक्सर स्थिति पर नियंत्रण खोने की शुरुआत सिद्ध होती है। यह हिंसा है, जिसका प्रमाण समय के साथ बढ़ता जाता है। अधिकांश मामलों में बाहरी कीड़े शक्तिशाली बनकर इतना उपद्रव खड़ा कर देते हैं कि एक बड़ी समस्या बन जाते हैं। नीम की पत्तियां एक देशी और सक्षम कीटनाशक है। संपन्नता के प्रतीक ट्रेक्टरों ने बैलों की जगह लेकर उन्हें बूचड़खाने का रास्ता दिखाया। यह वही गोधन था किसान जिसकी साल में चार बार पूजा करते थे। सारा काम अकेले कर लेने का दम भरने वाले ट्रेक्टर के जीवन में ऐसा कोई दिन शायद ही आता जब किसान उस पर स्नेह लुटाए। खेती में इस तरह का भावनात्मक जुड़ाव प्राणियों से ही नहीं कटी हुई फसल से भी देखा जा सकता है। देश के कुछ भागों में कटी हुई बालियों के पूलों को उल्टा कर रखा जाता है जिससे डंठलों में शेष बचा सैप या प्राणरस भी बहकर बालियों को ही मिले और अचानक कट जाने के धक्के में राहत मिले। सन् 1924 ई० में इंदौर यात्रा के दौरान गांधीजी ने कंपोस्ट खाद बनाने की जग प्रसिद्ध इंदौर विधि में विशेष रुचि दिखाई थी। यह प्राकृतिक खेती पद्धति को अहिंसक होने का प्रमाण था।

अधिकांश मामलों में बाहरी कीड़े शक्तिशाली बनकर इतना उपद्रव खड़ा कर देते हैं कि एक बड़ी समस्या बन जाते हैं। नीम की पत्तियां एक देशी और सक्षम कीटनाशक है। संपन्नता के प्रतीक ट्रेक्टरों ने बैलों की जगह लेकर उन्हें बूचड़खाने का रास्ता दिखाया। यह वही गोधन था किसान जिसकी साल में चार बार पूजा करते थे। सारा काम अकेले कर लेने का दम भरने वाले ट्रेक्टर के जीवन में ऐसा कोई दिन शायद ही आता जब किसान उस पर स्नेह लुटाए।

भारत की मुख्य फसल खरीफ है। इसका मौसम के साथ तालमेल आश्चर्यकारक है। जेठ में खेत तैयार करते समय मौसम गर्म और सूखा रहता हैं। कड़ी धूप मिट्टी को तपाकर कीट-कृमियों से मुक्त कर देती है। आषाढ़ में बीज जमीन में पड़ते समय मिट्टी गर्म और नम होती है जिससे अंकुरण को बढ़ावा मिलता है। फिर लगातार वर्षा के बीच फसल बड़ी होती है। सावन की रूकरूक कर गिरती बारिश और धूप के बीच फूल खिलते हैं और दाने भरते हैं। अगहन की कड़ी धूप फसल को पूरी तरह पकने में सहायक होती है। यह खेती पारंपरिक है, पुरानी है, लेकिन अहिंसक है और वैज्ञानिक भी। सभी कृषि कार्यों के पीछे ठोस तर्क हैं जो मौसम की मार के आगे भी लंबे समय से खरे उतरते आए हैं। आज की शब्दावली में ये इकोफ्रेंडली हैं। सौर और वायु ऊर्जा का भरपूर उपयोग करते हैं। पश्चिमी देश चाहें तो इस प्राकृतिक-अहिंसक खेती पर पेटेंट ले सकते हैं। दुनिया में इससे एक बेहतर जीवनशैली का ही प्रसार होगा।

कस्तूरबा गांधी : स्त्री प्रश्नों की अहिंसक यात्री

डॉ. सुप्रिया पाठक

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महिलाओं से जुड़े प्रश्न एक राजनीतिक प्रश्न के रूप में प्रमुखता से विमर्श के केंद्र में लाने में महात्मा गांधी का नाम लिया जाता है। भारत में स्त्रियाँ पहली बार सार्वजनिक जीवन में राजनीतिक रूप से गांधी जी के प्रयासों के कारण सक्रिय हुई । यह स्त्री आंदोलन एवं स्त्री चेतना का लिए भी प्रस्थान बिंदु था। नारीवादी विमर्श गांधी जी को महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने का श्रेय देता है। गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जिन दो मूल्यों को अपनाया वे थे 'सत्य' एवं 'अहिंसा'। बकौल गांधी जी, ये दोनों ही मूल्य पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ ज्यादा बेहतर ढंग से आगे बढ़ा सकती थीं। उन्होंने भारतीय स्त्रियों को संबोधित करते हुए कहा था कि उन्हें विक्टोरियन स्त्री की तरह बनने की आवश्यकता नहीं थी बल्कि पूरे विश्व की स्त्रियों को भारतीय स्त्रियाँ बहुत कुछ सिखा सकती थीं। यह तथ्य गांधी जी के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने रणनीतिक रूप से भी राष्ट्रीय आंदोलन का स्त्रीकरण कर दिया। उन्होंने आंदोलन का धार्मिक रूप कायम रखते हुए उसे अहिंसात्मक बनाया जिसमें धैर्य, त्याग, पीड़ा, सत्य और अहिंसा इत्यादि सर्वोपरि थे, जो महिलाओं के गुण माने जाते हैं। उन्होंने महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि देश को उनके नेतृत्व की आवश्यकता है एवं उनकी भागीदारी के बिना देश की आजादी संभव नहीं। गांधी जी ने समाज सुधारकों एवं पुनरुत्थानवादियों की स्त्री विषयक चिंता की दिशा बदलते हुए भारतीय स्त्री की एक नई परिभाषा दी जो अबला, शोषित, सुधार किए जाने योग्य की समझ से विपरीत आत्मबल से भरपूर नैतिक व्यक्तित्व थी। परंतु महात्मा गांधी ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलने की प्रेरणा अपनी मां और पत्नी से मिली। उनकी पत्नी कस्तूरबा उस काल की परंपरागत पत्नियों से अलग थीं। पुरुषों की दासता उन्हें पसंद नहीं थी, इसी वजह से मोहनदास को दबंग पति से ज्यादा उन्होंने समझदार पति बनने में सहायता की।

उन्होंने महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि देश को उनके नेतृत्व की आवश्यकता है एवं उनकी भागीदारी के बिना देश की आजादी संभव नहीं। गांधी जी ने समाज सुधारकों एवं पुनरुत्थानवादियों की स्त्री विषयक चिंता की दिशा बदलते हुए भारतीय स्त्री की एक नई परिभाषा दी जो अबला, शोषित, सुधार किए जाने योग्य की समझ से विपरीत आत्मबल से भरपूर नैतिक व्यक्तित्व थी। परंतु महात्मा गांधी ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग पर चलने की प्रेरणा अपनी मां और पत्नी से मिली।

कस्तूरबा के मन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर कोई संकोच की स्थिति नहीं थी। वह बहुत ही स्पष्ट तौर पर इन दोनों को बखूबी निभाती थी। कस्तूरबा की सरलता और अधिक से अधिक सीखने की प्रवृत्ति उन्हें एक अलग अलग किस्म की महिला बनाती है। बा के जीवन में कोई औपचारिक शिक्षा की स्थिति नहीं बन पाई फिर भी शिक्षाविहीन महिला होने के बाबजूद उन्होंने ऐसे कई निर्णय और कार्य किए जो आज की पढ़ी-लिखी महिलाएं भी नहीं कर पाती। खासकर उस युग में जब स्त्रियों की शिक्षा कोई बड़ा मुद्दा नहीं था। सुशीला नैयर ने बा के बारे में लिखा है कि-

''बा को नई चीजें सीखने का बहुत शौक था। आगाखाँ महल में उन्होंने पढ़ाई शुरू की, बैडमिंटन और पिंगपाँग सीखने का प्रयास किया। कैरम तो वे बहुत अच्छा खेलने लगी थीं और लगभग आखिर तक खेलती रहीं। जब वे बहुत दुर्बल हो गईं तो अपनी खाट पर लेटकर डा. गिल्डर और मीरा बहन इत्यादि का खेल देखा करती थीं और उसमें अपनी बीमारी भूल जाती थीं।''

कस्तूरबा गांधी का जन्म 11 अप्रैल सन 1869 में काठियावाड़ के पोरबंदर नगर में हुआ था। कस्तूरबा के पिता 'गोकुलदास मकनजी' एक साधारण व्यापारी थे और कस्तूरबा उनकी तीसरी संतान थी। उस जमाने में ज्यादातर लोग अपनी बेटियों को पढ़ाते नहीं थे और विवाह भी छोटी उम्र में ही कर देते थे। कस्तूरबा के पिता महात्मा गांधी के पिता के करीबी मित्र थे और दोनों मित्रों ने अपनी मित्रता को रिश्तेदारी में बदलने का निर्णय कर लिया था। कस्तूरबा बचपन में निरक्षर थीं और मात्र सात साल की अवस्था में उनकी सगाई 6 साल के मोहनदास के साथ कर दी गई और तेरह साल की छोटी उम्र में उन दोनों का विवाह हो गया। कस्तूरबा का शुरूआती गृहस्थ जीवन बहुत ही कठिन था। उनके पति मोहनदास करमचंद गांधी उनकी निरक्षरता से अप्रसन्न रहते थे। मोहनदास को कस्तूरबा का सजना, संवरना और घर से बाहर निकलना बिलकुल भी पसंद नहीं था। उन्होंने 'बा' पर आरंभ से ही अंकुश रखने का प्रयास किया पर ज्यादा सफल नहीं हो पाए।

सन 1906 में भरी जवानी में बापू ने ब्रह्मचर्य-व्रत ग्रहण किया, जिसके निर्वहण में बा ने पूरा-पूरा साथ दिया और अद्वितीय त्याग किया। गांधीजी के शब्दों में-

''ब्रह्मचर्य का गुण मेरी अपेक्षा बा के लिए बहुत अधिक स्वाभाविक सिद्ध हुआ। शुरू में बा को इसका ज्ञान भी न था। मैंने विचार किया और बा ने उसको उठाकर अपना बना लिया। परिणामस्वरूप हमारा संबंध सच्चे मित्र का बना। मेरे साथ रहने में बा के लिए सन् 1906 से, असल में सन् 1901 से, मेरे काम में शामिल हो जाने के सिवा या उसके भिन्न और कुछ रह ही न गया था। वे अलग रह ही नहीं सकती थीं। अलग रहने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती, लेकिन उन्होंने मित्र बनने पर स्त्री के नाते और पत्नी के नाते मेरे काम में समा जाने में ही अपना धर्म माना। इसमें बा ने मेरी निजी सेवा को अनिवार्य स्थान दिया। इसलिए मरते दम तक उन्होंने मेरी सुविधा की देखरेख का काम छोड़ा ही नहीं।''

कस्तूरबा गांधी का जन्म 11 अप्रैल सन 1689 में काठियावाड़ के पोरबंदर नगर में हुआ था। कस्तूरबा के पिता 'गोकुलदास मकनजी' एक साधारण व्यापारी थे और कस्तूरबा उनकी तीसरी संतान थी। उस जमाने में ज्यादातर लोग अपनी बेटियों को पढ़ाते नहीं थे और विवाह भी छोटी उम्र में ही कर देते थे। कस्तूरबा के पिता महात्मा गांधी के पिता के करीबी मित्र थे और दोनों मित्रों ने अपनी मित्रता को रिश्तेदारी में बदलने का निर्णय कर लिया था। कस्तूरबा बचपन में निरक्षर थीं और मात्र सात साल की अवस्था में उनकी सगाई ६ साल के मोहनदास के साथ कर दी गई और तेरह साल की छोटी उम्र में उन दोनों का विवाह हो गया।

कस्तूरबा गांधी का अपना एक दृष्टिकोण था, उन्हें आजादी का मोल और महिलाओं में शिक्षा की महत्ता का पूरा भान था। स्वतंत्र भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना उन्होंने भी की थी। उन्होंने हर कदम पर अपने पति मोहनदास करमचंद गांधी का साथ निभाया था। 'बा' जैसा आत्म-बलिदान का प्रतीक व्यक्तित्व उनके साथ नहीं होता तो गांधी जी के सारे

अहिंसक प्रयास इतने कारगर नहीं होते। जी. रामचंद्रन ने कस्तूरबा के बारे में लिखते हुए कहा है कि–

"भारत और विश्व के इतिहास के पन्नों पर बापू के पद-चिन्ह अंकित हैं। पर इन पद- चिन्हों के पीछे और इनकी अतल गहराई में बा की मूरत समाई हुई है। बापू और बा अभिन्न थे, दोनों एक-दूसरे के बिना अपने आरोहण में बे इअतने ऊँचे नहीं उठ पाते, जिस कारण उनकी एक तेजोमय विरासत भारत और दुनिया को मिली।''

सनातनी व वैष्णव हिंदू होने के नाते शुरूआत में कस्तूरबा के मन में भी अस्पृश्यता को लेकर संकोच था। शुरुआत में वे छुआछूत को मानती भी थीं, लेकिन दक्षिण अफ्रीका में बा का बापू के मेहमानों का मल-मूत्र भी साफ करना पड़ता था, रोगियों की सेवा-सुश्रूषा तो आम बात थी। भारत आने के बाद के दिनों में उन्होंने हरिजनों को भी सहृदयों की तरह अपना लिया था। लक्ष्मी नाम की एक हरिजन कन्या तो उनके साथ अपनी पुत्री की तरह ही रहती थीं। बापू अब अश्वेत लोगों के लिए किए गए सत्याग्रह और आंदोलन में जेल गए तो बा ने बाहर रहकर भोजन ग्रहण करने का संकल्प लिया जो जेल में कैदियों को मिलता था- मक्के का दलिया और सूखी डबल रोटी। इस दौरान दूध या धी को उन्होंने हाथ तक नहीं लगाया था। इसके चलते वे सख्त बीमार पड़ गई, लेकिन उन्होंने अपना संकल्प नहीं छोड़ा।

गांधीजी की 'विवाह' संस्था में गहरी आस्था थी एवं वे इसे समाज के नैतिक व्यवस्था के लिए आवश्यक मानते थे परंतु उन्होंने स्त्रियों से इस बात की पुरजोर अपील की कि वे वैवाहिक संबंधों में स्वंय को कमजोर तथा यौन संबंधों के लिए प्रस्तुत नायिका के रूप में न देखें। गांधीजी ने कस्तुरबा से सीखा कि पत्नी पति की दासी नहीं, बल्कि उसकी संगिनी, मित्र और सहकर्मी होती है। वैवाहिक व्यवस्था के अंदर उसे भी समान अधिकार प्राप्त हैं। कस्तुरबा ने महात्मा गांधी को भारतीय स्त्रियों को उनकी वर्तमान स्थिति के प्रति जागरुक होने, स्वतंत्रता आंदोलन में कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होने के लिए लगातार प्रेरित किया। हालांकि, भारतीय समाज की संरचना में महिलाएं सदियों से घरों के अंदर रहती आई थीं। उनके स्वामी पिता, पति और पुत्र के रूप में घर के पुरुष थे जिनकी अनुमति के बिना सार्वजनिक दुनिया में कदम रखना उन्होंने सीखा ही नहीं था। यह एक मानसिक चारदिवारी थी जिसके अंदर स्त्रियां स्वयं कैद थीं।

कस्तूरबा के प्रभाव के कारण गांधीजी ने महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में अपनी भूमिका को समझा। उन्होंने अपनी परंपरा एवं व्यक्तिगत धारणाओं से

बाहर जाकर स्त्री- पुरुष संबंधों को यौन संबंधों से इतर स्वस्थ मानसिक धरातल पर नए सिरे से परिभाषित किया। कस्तूरबा के कारण ही गांधी ने स्त्रियों को सशक्त करने के लिए प्रयास किया एवं बाहरी दुनिया से उनका साक्षात्कार कराया। कई नारीवादी विदुषियों ने गांधी जी के विचार, उनकी रणनीति, प्रविधि एवं उनके परिणामों का अध्ययन किया है, जो मानती हैं कि कस्तुरबा के कारण ही गांधी जी ने तार्किक रूप से घर एवं बाहर की दुनिया का स्पष्ट विभाजन किया एवं स्त्रियों के लिए भूमिकाएं निर्धारित कीं।

1930 में दांडी और धरासणा के बाद जब बापू जेल चले गए तब बा ने उनका स्थान लिया और लोगों का मनोबल बढाती रहीं। आंदोलनकारी गतिविधियों के कारण 1932 और 1933 में उनका अधिकांश समय जेल में ही बीता। सन 1939 में उन्होंने राजकोट रियासत के राजा के विरोध में भी सत्याग्रह में भाग लिया। भारत छोडो आंदोलन के दौरान बापू के गिरफ्तार होने के बाद बा ने आंदोलन की कमान संभालने का निर्णय लिया और इस गिरफ्तारी के विरोध में बम्बई जाकर विरोध प्रदर्शन करने की योजना बनाने लगीं।

गांधी जी के प्रति कस्तूरबा का समर्पण और भरोसा इतना अधिक था, कि उन्होंने गांधीजी के हर सत्याग्रह में कंधे से कंधा मिला कर खड़ी रहीं। चाहे वह उनकी चंपारण यात्रा हो, खेड़ा सत्याग्रह रहा हो अथवा दांडी मार्च। वे हर समय गांधी जी के साथ रहीं और लोगों में उत्साह जताया। दक्षिण अफ्रीका में आंदोलन के दौरान कस्तूरबा ने गांधीजी का बखूबी साथ दिया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दशा के विरोध में जब गांधी जी के साथ कस्तूरबा भी आन्दोलन में शामिल हुई तब उन्हें गिरफ्तार कर तीन महीनों की कड़ी सजा के साथ जेल भेज दिया गया। जेल में मिला भोजन उनके लिए अखाद्य था। अत: उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया पर अधिकारियों द्वारा उनके अनुरोध पर ध्यान नहीं दिए जाने पर उन्होंने उपवास किया जिसके पश्चात अधिकारियों को झुकना पड़ा। सन 1915 में महात्मा गांधी के साथ कस्तूरबा भी भारत लौट आयीं। कस्तूरबा ने हर कदम पर उनका साथ दिया। कई बार जन गांधीजी जेल गए तब उन्होंने उनका स्थान लिया। चंपारण सत्याग्रह के दौरान वो भी गांधी जी के साथ वहां गयीं और लोगों को सफाई, अनुशासन, पढाई आदि के महत्व के बारे में बताया। इसी दौरान वो गाँवों में घूमकर दवा वितरण करती रहीं। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान भी कस्तूरबा ने घूम-घूम कर स्त्रियों का उत्साहवर्धन किया। सन 1922 में गांधी के गिरफ्तारी के पश्चात उन्होंने वीरांगनाओं जैसा वक्तव्य दिया और इस गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के परित्याग का आह्वान किया। उन्होंने गांधीजी का संदेश प्रसारित करने के लिए गुजरात के गाँवों का दौरा भी किया। 1930 में दांडी और धरासणा के बाद जब बापू जेल चले गए तब बा ने उनका स्थान लिया और लोगों का मनोबल बढाती रहीं। आंदोलनकारी गतिविधियों के कारण 1932 और 1933 में उनका अधिकांश समय जेल में ही बीता। सन 1939 में उन्होंने राजकोट रियासत के राजा के विरोध में भी सत्याग्रह में भाग लिया। भारत छोडो आंदोलन के दौरान बापू के गिरफ्तार होने के बाद बा ने आंदोलन की कमान संभालने का निर्णय लिया और इस गिरफ्तारी के विरोध में बम्बई जाकर विरोध प्रदर्शन करने की योजना बनाने लगीं। ब्रिटिश सरकार को इस बात की भनक लग गई। उस समय देश की जनता बापू के साथ थी। एक छोटा सा प्रदर्शन सरकार के सारे इंतजाम पर भारी पड़ सकता था इसलिए कस्तूरबा को आनन-फानन में गिरफ्तार करके बापू के पास आगा खाँ पैलेस में ला दिया गया। यहाँ आकर बा ने राहत की सांस ली क्योंकि पिछली तीन रातें उन्होंने इस तनाव में गुजार दी थीं कि बापू आखिर हैं कहाँ ? अब सभी एक साथ थे और पूरा देश उनके साथ। अचानक इस बीच 1944 के फरवरी में कस्तूरबा गांधी का स्वास्थ्य खराब होने लगा । धीरे-धीरे उनकी स्थिति और बिगड़ रही थी । वे मानसिक रूप से अवसादग्रस्त रहने लगीं थीं । पैलेस के वर्तमान सुप्रिटेंडेंट से अनुरोध करके जेल के अंदर के

माहौल को खुशनुमा रखने के लिए बैडमिंटन और कैरमबोर्ड की व्यवस्था की गई । कभी-कभी बा भी इन खेलों में रुचि दिखातीं लेकिन अफसोस कि तमाम कोशिशों के बावजूद भी बा की स्थिति में कोई परिवर्तन होता हुआ नहीं दिख रहा था । वे लगातार खाना-पीना छोड़ रही थीं । बापू को उनके अंतिम समय का अंदाजा हो गया था इसलिए वे अपना अधिकांश समय बा की देखभाल में बिताते और उनके पास बैठे रहते। कस्तूरबा को ब्रॉन्काइटिस की शिकायत थी। फिर उन्हें दो दिल के दौरे पड़े और इसके बाद निमोनिया हो गया। इन तीन बीमारियों के चलते बा की हालत बहुत खराब हो गई।

डॉक्टर चाहते थे बा को पेंसिलिन का इंजेक्शन दिया जाए. गांधी इसके खिलाफ थे। गांधी इलाज के इस तरीके को हिंसा मानते थे और प्राकृतिक तरीकों पर ही भरोसा करते थे। बा ने कहा कि अगर बापू कह दें तो वो इंजेक्शन ले लेंगी। गांधी ने कहा कि वो नहीं कहेंगे, अगर बा चाहें तो अपनी मर्जी से इलाज ले सकती हैं। गांधी के बेटे देवदास गांधी भी इलाज के पक्ष में थे वो पेंसिलिन का इंजेक्शन लेकर भी आए। तब बा बेहोश थीं और गांधी ने उनकी मर्जी के बिना इंजेक्शन लगाने से मना कर दिया। 22 फरवरी 1944 को बापू की बाहों में बा ने अंतिम सांस ली। वे चिरनिद्रा में विलीन हो गईं । बापू इस बार भी हमेशा की तरह शांत थे और बा की अगली यात्रा के लिए लोगों को निर्देश दे रहे थे। अंतिम संस्कार से कुछ घंटे पूर्व वे बंद कमरे में बा के मृत शरीर के पास अकेले बैठे रहे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे बा से मौन संवाद कर रहे थे। गांधी चाहते थे कि उनके बेटों की उपस्थिति में जेल के बाहर कस्तूरबा का अंतिम संस्कार परिवार और रिश्तेदारों के बीच हो लेकिन सरकार ने उनके इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया । बा के पार्थिव शरीर को स्नान कराकर एक खाली कमरे में लिटा दिया गया । एक बार फिर मीराबेन ने बगीचे के रंग बिरंगे फूलों से बा का श्रृंगार किया । धूपबत्ती जलाई गई और गीता का पाठ शुरु हो गया । बा की चिता को भी महादेव भाई के बगल में अग्नि दी गई ।

कस्तूरबा की मृत्यु पर सुभाष चंद्र बोस ने एक शोक पत्र गांधी जी को लिखा जिससे कस्तुरबा के बारे में लिखते हुए सुभाष चंद्र बोस ने कहा कि- श्रीमती कस्तूरबा गांधी नहीं रहीं। कस्तूरबा की मृत्यु पर देश के अड़तीस करोड़ अस्सी लाख और विदेशों में रहने वाले मेरे देशवासियों के गहरे शोक में मैं उनके साथ शामिल हूं। उनकी मृत्यु दुखद परिस्थितियों में हुई। लेकिन एक गुलाम देश के वासी के लिए कोई भी मौत इतनी सम्मानजनक और इतनी गौरवशाली नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान को एक निजी क्षति हुई है।...इस महान महिला को जो हिन्दुस्तानियों के लिए मां की तरह थी, मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मेरा यह सौभाग्य था कि मैं अनेक बार श्रीमती कस्तूरबा के संपर्क में आया और इन कुछ शब्दों से मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा। वे भारतीय स्त्रीत्व का आदर्श थीं, शक्तिशाली, धैर्यवान, शांत और आत्मनिर्भर कस्तूरबा हिन्दुस्तान की उन लाखों बेटियों के लिए एक प्रेरणास्रोत थीं जिनके साथ वे रहती थीं और जिनसे वे अपनी मातृभूमि के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मिली थीं। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के बाद से ही वे अपने महान पति के साथ परीक्षाओं और कष्टों में शामिल थीं और यह सामिप्य तीस साल तक चला। अनेक बार जेल जाने के कारण उनका स्वास्थ्य प्रभावित हुआ लेकिन अपने चौहत्तरवें वर्ष में भी उन्हें जेल जाने से जरा भी डर न लगा। महात्मा गांधी ने जब भी सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया, उस संघर्ष में कस्तूरबा पहली पंक्ति में उनके साथ खड़ी थीं। हिन्दुस्तान की बेटियों के लिए एक चमकते हुए उदाहरण के रूप में और हिन्दुस्तान के बेटों के लिए एक चुनौती के रूप में कि वे भी हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में अपनी बहनों से पीछे नहीं रहीं।

संपर्कः
सह आचार्य, स्त्री अध्ययन विभाग
क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
6-I/3, झुंसी, प्रयागराज 211019 (उत्तर-प्रदेश)

स्मरण

बापू के अवसान की स्मृतियाँ

संतोष बंसल

महात्मा गांधी को 30 जनवरी 1948 को गोली मारी गयी, लेकिन वह उन के नश्वर शरीर की हत्या थी । उससे बापू मरे नहीं, बल्कि देह से मुक्त होकर विचार रूप में सर्वत्र संसार में पहुँच गए। तब से अब तक उन्हें मारने का लगातार उपक्रम जारी है, किन्तु वे इन सबकी पहुँच से बाहर निकलकर आगामी पीढ़ी तक पहुँच रहे हैं। वैसे महात्मा गांधी की शहादत हुए पच्चहत्तर वर्ष हो गये हैं, ऐसे में उनके देहांत के समय की अनेक स्मृतियाँ कौंध रही हैं। जैसे उनकी अंत्येष्टि में लाखों लोग सड़कों पर जुट गए थे एवं आलम यह था कि कौन, किसको, क्या दिलासा दे ? सभी लोग दुखी और व्याकुल थे, ऐसी दुर्दात खबर की किसी को अपेक्षा नहीं थी। आग की तरह जब यह खबर फैली तो लोग सन्न रह गए। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि इस कठिन स्थिति से कैसे निबटा जाए? प्रशासन जांच में जुटा हुआ सबूत बटोर रहा था और वहां लोगों की गवाही ले रहा था। साक्ष्य इकट्ठे किये जा रहे थे, सूत्रों को एकत्र कर आपस में जोड़ा जा रहा था। परन्तु यह बात किसी के गले नहीं उतर रही थी कि आजादी प्राप्त होने के महज छह महीने बाद ही यह हत्याकांड हो गया। वे लोग जिनका बापू से कोई निजी सम्बन्ध था या उनसे किसी भी तरह का कोई मेलजोल नहीं था, सभी हैरान और अवाक थे। फिर जिन लोगों की बापू की नीतियों से सहमति थी अथवा जो उनकी नीतियों से असहमत थे, वे सभी शोक संतप्त थे। उनके अनुगामियों के साथ –साथ, उस दिन उनके विरोधी भी रो पड़े। क्योंकि मतभेद होना एक स्वाभाविक और सहज बात है, जो प्रत्येक क्रियाकलाप में होती ही है। किन्तु उस संत सरीखे महामानव से मनभेद तो किसी का न था। फिर यह सवाल बार–बार उठ रहा था कि हत्यारे नाथूराम गोडसे ने ऐसा क्यों किया? उसे इससे क्या हासिल हुआ? सब लोग समझ नहीं पा रहे थे कि किस बात का बदला बापू से लिया है? यह एक ऐसी घटना थी, जिस पर किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात् अचानक वक्त ठहर सा गया था, लोग पाषाण से बने विमूढ़ नजर आ

महात्मा गांधी की शहादत हुए पच्चहत्तर वर्ष हो गये हैं, ऐसे में उनके देहांत के समय की अनेक स्मृतियाँ कौंध रही हैं। जैसे उनकी अंत्येष्टि में लाखों लोग सड़कों पर जुट गए थे एवं आलम यह था कि कौन, किसको, क्या दिलासा दे ? सभी लोग दुखी और व्याकुल थे, ऐसी दुर्दात खबर की किसी को अपेक्षा नहीं थी। आग की तरह जब यह खबर फैली तो लोग सन्न रह गए। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि इस कठिन स्थिति से कैसे निबटा जाए? प्रशासन जांच में जुटा हुआ सबूत बटोर रहा था और वहां लोगों की गवाही ले रहा था।

रहे थे। न किसी से कुछ कहते बनता था, न कुछ सुनते। दु:ख के अतिरेक से सबका गला रुँध हुआ और आँखे डबडबायी सी थी। लोगों की वाणी मूक हो गई थी तथा शरीर शिथिल। अंहिसा का पुजारी हिंसा की गोलियों से देहातीत हो गया था और सब जगह शमशान घाट की सी मृत शान्ति पसरी हुई थी।

इन हालातों में शासनस्थ नए नेतागण उनकी अंतिम यात्रा की तैयारी में जुटे थे और अपने-अपने कार्यों को अंजाम दे रहे थे। सारे देश से उनके अनुयायी राजधानी में उमड़ पड़े थे और दर्शनार्थ स्थल पर अपेक्षा से अधिक जमावड़ा हो गया था। अंतत: प्रयागराज के त्रिवेणी संगम पर बापू के पार्थिव शरीर की अंत्येष्टि के उपरान्त देश -दुनिया के नेताओं में कुछ कहने की जागृति आई और अनेक गणमान्य नेताओं ने महात्मा गांधी के लिए शोक सन्देश दिए। उनकी अंतिम यात्रा के बाद संवेदना सन्देश भेजने और उन्हें श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा रहा, जिनमें उनके अपने और गैर सभी शामिल थे। बापू का अपना निजी परिवार भी बहुत बड़ा था, जिसमें पुत्र -पौत्र इत्यादि से भरापूरा कुटुंब था । शहादत के छह दिन बाद 6 फरवरी 1948 को महात्मा गांधी के कनिष्ठ पुत्र श्री देवदास गांधी ने अखिल भारतीय रेडियो स्टेशन पर बोलते हुए कहा, ''आज मैं आपके सामने एक अनाथ की तरह बोल रहा हूँ, .रेडियों पर बोलने को उद्धत मैं इसीलिए हुआ कि मैं चाहता हूँ, मेरे ही समान जो दूसरे लोग अनाथ हुए हैं, उन्हें भी अपने शोक और चिंतन में भागीदार बना सकूं। अन्धकार हम पर छाया है, उसने सबको समान रूप से ग्रसित किया है और मैं जानता हूँ कि मैं अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार की जो अनुभूति कर रहा हूँ, वह अकेली मेरी ही अनुभूति नहीं है।'' लोगों के शोक सन्देश मिलने पर देवदास गांधी ने आभार जताया कि संवेदना के जो सन्देश मुझे और परिवार वालों को मिल रहे हैं, उनसे हमको बड़ी सांत्वना मिल रही है। लेकिन हम मानते हैं कि संवेदना भेजने वाले हमसे अधिक दुखी और संतप्त है। कौन किसकी दिलासा दे? अपने और बापू के बीच सहज स्वाभाविक-पिता-पुत्र के प्रेम के साथ ही उन्होंने आगे कहा कि मैं इस बात पर भार देना चाहता हूँ कि, ''गांधीजी

की गणना पारिवारिक व्यक्तियों में नहीं हो सकती। मैंने बहुत पहले ही यह ख्याल छोड़ दिया था कि वह अकेले मेरे पिता हैं। मेरे लिए वह वैसे ही ऋषि थे, जितने कि आप में से किसी के लिए, जो मेरी आवाज सुन रहे हैं। मैं आपकी तरह ही उनका आभाव महसूस कर रहा हूँ। मैं इस भयंकर विपत्ति को ऐसे प्राणी की तटस्थ भावना से देखता हूँ, जो मानों उत्तरी धरुव में रहता हो और जिसका उस महापुरुष से रक्त या जाति का कोई सम्बन्ध न हो। उनकी हानि का तो हमको अभी धुंधला सा ही आभास हो रहा है।''

परन्तु अहिंसा के पुजारी को मौत भले ही हिंसक मिली थी, लेकिन उन्हें मिली श्रद्धांजलि अहिंसक थी। महात्मा गांधी की हत्या विश्व का एकमात्र ऐसा अध्याय है, जब हत्या के बाद दंगा-फसाद तो दूर, किसी ने जमीन पर फूंक तक नहीं मारी। चूँकि महात्मा गांधी की सात पुश्तों ने पोरबंदर और राजकोट की रियासतों में दीवान का पद

सम्भाला था, इसीलिए सभी रियासतों से उनके सम्बन्ध मधुर रहे। इसीलिए इन के शासकों ने महात्मा गांधी के देहावसान या हत्या के उपरान्त उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। जम्मू और कश्मीर के महाराजा ने बापू के निधन पर भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को निम्न तार भेजा – ''महात्मा जी की मृत्यु के दुखद समाचार को सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। गांधी जी का निधन भारत की महानतम हानि है। उन पर किया गया नीचतापूर्ण हमला अत्यधिक निंदनीय है। मैं इस अवसर पर अपनी रानी, अपनी जनता की ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ। कृपया महात्मा जी के परिवार व् भारतीय पार्लिमेंट को हमारे शोक से अवगत करा दें।'' जयपुर महाराजा ने भी नेहरूजी, सरदार पटेल व् श्री देवदास गांधी को संवेदना सन्देश भेजे। जयपुर सरकार ने बापू की मृत्यु के शोक में तीन दिन के लिए अपने सभी दफ्तर बंद कर दिए और राज्य भर में मातम मनाया गया। रामपुर रियासत में गांधीजी की मृत्यु पर भारी शोक मनाया गया, जिसके लिए नवाब और युवराज के साथ हजारों व्यक्ति कोसी नदी के किनारे दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए मूक प्रार्थना करने हेतु एकत्रित हुए। इसी तरह पटियाला में लगभग दो मील लंबा जुलुस निकला एवं लगभग पचास हजार व्यक्तियों ने गांधीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। नाभा में भी गांधीजी की मृत्यु के समाचार से शोक की घटाएं छायी। महाराजा ग्वालियर ने बापू की मृत्यु के शोक में तीन दिन के लिए सरकारी दफ्तर व् संस्थाएं बंद कर दी और झंडे झुका दिए। महाराजा ने अपने अर्थ व् विदेश मंत्रियों को शोक समारोह में भाग लेने दिल्ली भेजा और उनकी मृत्यु को 'देश के लिए विपत्ति' कहा। मैसूर सरकार ने भी गांधीजी की मृत्यु पर अपनी सारे रियासत में तेरह दिन तक शोक मानाने की घोषणा की, जिसमें भारतीय संघ के झंडे झुके रहेंगे रहे। महाराजा त्रवणकोर ने पंडित नेहरू को एक संवेदना सूचक सन्देश भेजा। इस प्रकार जगह –जगह शोक सभाएं आयोजित की गयी और कहीं –कहीं हड़ताल भी रही।

उपरोक्त शोक संदेशों के अतिरिक्त पाकिस्तान में भी बजट अधिवेशन से पूर्व महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। यधपि विभाजन का दर्द और विस्थापन की पीड़ा दोनों देशों के आम लोगों में बनी हुई थी एवं दंगों की आग अभी ठंडी न हुई थी। परन्तु लोगों में महात्मा गांधी के प्रति आदर भाव कहीं कम न था, वहां के हुक्मरान भी उनके विचारों और भावनाओं की कद्र करते थे। प्रधानमंत्री लियाकत अली खान ने अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वे पाकिस्तान की जनता की ओर से भारत की जनता को सहानुभूति का सन्देश भेज दें। उन्होंने कहा,'' कि दुःख के साथ मुझे महात्मा की हत्या के सम्बन्ध में यहाँ कहना पड़ रहा है। निस्संदेह वे इस युग के एक महापुरुष थे। गत तीस वर्षों से भारत की राजनीति में उनका प्रमुख स्थान था।

उपरोक्त शोक संदेशों के अतिरिक्त पाकिस्तान में भी बजट अधिवेशन से पूर्व महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। यधपि विभाजन का दर्द और विस्थापन की पीड़ा दोनों देशों के आम लोगों में बनी हुई थी एवं दंगों की आग अभी ठंडी न हुई थी। परन्तु लोगों में महात्मा गांधी के प्रति आदर भाव कहीं कम न था, वहां के हुक्मरान भी उनके विचारों और भावनाओं की कद्र करते थे। प्रधानमंत्री लियाकत अली खान ने अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वे पाकिस्तान की जनता की ओर से भारत की जनता को सहानुभूति का सन्देश भेज दें। उन्होंने कहा,'' कि दुःख के साथ मुझे महात्मा की हत्या के सम्बन्ध में यहाँ कहना पड़ रहा है। निस्संदेह वे इस युग के एक महापुरुष थे। गत तीस वर्षों से भारत की राजनीति में उनका प्रमुख स्थान था, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस दल का वर्तमान संगठन और प्रभाव उनके ही नेतृत्व का फल है। तीस वर्षों से वे अहिंसा का पाठ पढ़ा रहे थे। यह दुर्भाग्य की बात है कि जिस व्यक्ति ने अंहिसा का पाठ पढ़ाया, वही गोली का शिकार हुआ। वे साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने के लिए अत्यंत उत्सुक रहते थे। इस उच्च कार्य में वे अपनी जान तक की बाजी लगा देते थे। उनकी अचानक मृत्यु का कारण साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने की चेष्टा ही थी। ऐसे सभी व्यक्ति जो साम्प्रदायिक एकता स्थापित करना चाहते हैं, गांधी के त्याग का सदा स्मरण करेंगे। उनकी मृत्यु से भारत को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो

सकती। हम आशा करते हैं जो काम उनके जीवित रहते पूरा न हो सका वह अब पूरा हो जाएगा।'' इस वक्तव्य के पश्चात श्री जिन्ना ने भी तटस्थता से कहा कि मैं प्रधान मंत्री के कथन से सहमत हूँ और भारत को सहानुभूति का सन्देश भेजा जाएगा। स्पष्ट है कि नीतिगत मतभेद होने के बावजूद, सभी लोग बापू के लिए अपार श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे। लेकिन ब्रिटेन का शासन तंत्र जहाँ बापू की आलोचना करता था, वहां के बुद्धिजीवियों ने उनके प्रति अपार श्रद्धा व्यक्त की थी। तब सुप्रसिद्ध लेखक बर्नाड शाह की तरफ से बयान आया था कि अच्छा होना भी इतना खतरनाक हो सकता है, मैंने कभी सोचा नहीं था। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने जिन शब्दों में जो कहा था, वह सदैव सबके मन -मस्तिष्क पर अंकित है, ''आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास करेंगी कि गांधी जैसा हाड़ -मांस का पुतला भी इस धरती पर कभी अवतरित हुआ था।''

अंतत: यधपि इस तिथि के अंचल में बहुत सी हृदय विदारक स्मृतियाँ छिपी हैं, जो प्रत्येक वर्ष दिल में लगे घाव को हरा कर देती है। क्योंकि राष्ट्र के हृदय का यह घाव कभी भरता नहीं है और युग-युगांतर तक भर नहीं पायेगा। किन्तु गांधी हत्या जहाँ दुखदायी थी, वहां उसका एक उज्जवल पहलू भी रहा। इससे पूर्व स्वतन्त्रता के लिए देश विभाजन की कड़वी घूँट हमने पी थी, जिसके साथ मानव रक्त की ऐसी होली शुरू हुई कि मनुष्य मनुष्य के खून का प्यासा हो गया था। और आजादी के पश्चात दंगों और उपद्रवों ने आम लोगों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया था, जिससे उनके मन में कडुवाहट भरी हुई थी। गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के लिए बहुत कठिन वक्त था, उन्हें देशभर में शांति कायम रखने का भार संभालना था। क्योंकि बँटवारे की आग अभी पूर्णतया ठंडी नहीं हुई थी एवं बापू की हत्या की प्रतिक्रिया स्वरूप दंगे भड़कने की पूरी संभावना बनी हुई थी। इसीलिए लौह पुरुष सरदार पटेल कई मोर्चों को एकसाथ संभाल रहे थे, जिससे इस दु:ख की घड़ी में देश में कानून व्यवस्था बनी रहे। इसलिए अतिरिक्त रियासतों के रूप में हमारे देश का बड़ा भाग सैंकड़ों छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटा था, किन्तु भारत की स्वतंत्रता ने नयी स्थिति और कल्पना उत्पन्न की। जिसके अंतर्गत यह विचार किया जाने लगा कि ये भाग शेष भारत में समावेश हो जाएँ। इन विभक्त रियासतों और उनका स्वतंत्र भारत में विलय ऐसा असंभव कार्य था, जिसे संभव करना सरदार पटेल के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। क्योंकि कुछ राजाओं का आकर्षण ब्रिटिश हुकूमत से था, लेकिन कुछ देश भक्त रियासतें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारत के साथ थी। ऐसे में स्वतंत्र भारत में बापू की हत्या से उपजी विकट स्थितियों में, विपरीत परिस्थितियां पैदा होने की आशंका भी बनी हुई थी। परन्तु उनकी हत्या के बाद देश में हवा का रुख एकदम बदल गया। जगह-जगह हो रहे साम्प्रदायिक नरसंहार को ऐसा धक्का लगा कि हिन्दू - मुस्लिम भाईचारे के दृश्य दृष्टिगोचर होने लगे। यही नहीं, राष्ट्रीय एकीकरण को भी उससे प्रोत्साहन मिला और रियासतों की समस्या जटिल नहीं रही। विभाजन के बाद बचे हुए देश में रियासतों का ऐसा योग हो गया कि ब्रिटिश भारत से स्वतंत्र भारत किसी प्रकार कम न रहा। इस प्रकार बापू की मृत्यु ने उस काल और इतिहास पर ऐसी छाप छोड़ी, जिस ने देश-दुनिया को नयी दिशा दी।

नीतिगत मतभेद होने के बावजूद, सभी लोग बापू के लिए अपार श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे। लेकिन ब्रिटेन का शासन तंत्र जहाँ बापू की आलोचना करता था, वहां के बुद्धिजीवियों ने उनके प्रति अपार श्रद्धा व्यक्त की थी। तब सुप्रसिद्ध लेखक बर्नाड शाह की तरफ से बयान आया था कि अच्छा होना भी इतना खतरनाक हो सकता है, मैंने कभी सोचा नहीं था। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने जिन शब्दों में जो कहा था, वह सदैव सबके मन -मस्तिष्क पर अंकित है ''आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास करेंगी कि गांधी जैसा हाड़ -मांस का पुतला भी इस धरती पर कभी अवतरित हुआ था।''

संपर्क

ए 1/7 मिआनवाली नगर,
पश्चिम विहार दिल्ली - 110087
मो. 8860022613

मनोवृत्ति को बदलें

''गांधी जी के सम्पूर्ण जीवनकाल में उनके विश्वसनीय सहयोगियों की संख्या सौ से भी कम थी। लेकिन इन्हीं विश्वसनीय महानुभावों ने अपने लाखों करोड़ों अनुयायियों के सहारे सम्पूर्ण विश्व में गांधीवाद के परचम को सफलतापूर्वक लहराया''

सुबोध कुमार वर्मा

हे राम! जिस महान विभूति ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी राम के स्मरण को नही भुलाया और इन शब्दों के सहारे जीवन के सार तत्व को बड़ी सरलता से त्याग दिया वह कोई और नहीं हमारे ही देश में जन्में सन्त स्वभाव महात्म्य भाव से युक्त सत्य अहिंसा और न्याय के पर्याय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी थे। सत्यता यही है कि पवित्र लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ईश्वर कर्मठ और कर्म प्रधान लोगों को ही माध्यम बनाते हैं। ईश्वरीय कृपा से ऐसे महापुरुष सादगीपूर्ण सरल और संयमित जीवनशैली के सहारे साहस और आत्मबल का संबल बनकर विषम से विषम परिस्थितियों में भी समाज के मंगल और कल्याण के लिए नि:स्वार्थ भाव से बिना किसी लालच के निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। उनका चिन्तन और मनन सब कुछ लोक कल्याण के लिए होता है। सन्तों और महापुरूषों की भावनाओं में स्वयं के लिए कुछ नही होता उनका जीवन तो लोकमंगल के लिए, पीड़ितों और वंचितों की सेवा, भटके हुए लोगों को सही दिशा तथा सही गलत का बोध कराना तथा सामाजिक समरसता के साथ वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जाग्रत करने वाला होता है। ऐसे लोगों को सम्मान और भौतिक सुख साधनों सुविधाओं की कोई इच्छा नहीं रहती है। मान-अपमान, उपेक्षा-तिरस्कार, हार-जीत की चिन्ता के बिना लोक कल्याणकारी चिन्तन और मनन के साथ सादा सरल और पवित्र जीवन के साथ प्रवाह मान रहना इनका विशेष गुण हैं। ऐसे महान सन्तों और महापुरूषों के कार्यों को आगे बढ़ाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है। उनको किसी सम्मान की चाह न तो पहले थी और न मरणोपरांत इसकी कोई अभिलाषा थी। वकालत के बाद 1915 में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से हमेशा के लिए भारत आ गये तथा कोचरब अहमदाबाद में किराये के मकान में सत्याग्रह आश्रम की शुरूआत की फिर अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में 1917 से 1930 तक राष्ट्र व्यापी आन्दोलन चलाया अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्य के प्रयोग लिखी और नमक सत्याग्रह के लिए अपनी इस तपस्थली से कूच किया।

सन्तों और महापुरूषों की भावनाओं में स्वयं के लिए कुछ नही होता उनका जीवन तो लोकमंगल के लिए, पीड़ितों और वंचितों की सेवा, भटके हुए लोगों को सही दिशा तथा सही गलत का बोध कराना तथा सामाजिक समरसता के साथ वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जाग्रत करने वाला होता है। ऐसे लोगों को सम्मान और भौतिक सुख साधनों सुविधाओं की कोई इच्छा नहीं रहती है। मान-अपमान, उपेक्षा-तिरस्कार, हार-जीत की चिन्ता के बिना लोक कल्याणकारी चिन्तन और मनन के साथ सादा सरल और पवित्र जीवन के साथ प्रवाह मान रहना इनका विशेष गुण हैं।

इस आश्रम से गांधी जी ने कई महत्वपूर्ण सत्याग्रह चलाये। इस आश्रम में गांधी जी के साथ गुरूदेव विनोबा जी भी कुटिया में रहते थे। इसके बाद सेवाग्राम से सामाजिक बदलाव के प्रयास निरन्तर जारी रखे। साथ में गुरूदेव विनोबा जी भी गीता की आध्यात्मिक गंगा के प्रवाह के साथ सामाजिक बदलाव के लिए निरन्तर प्रयास करते रहे। सेवाग्राम से पवनार के बह्म विद्या मंदिर में गुरूदेव ने तीन श्लोकों के छत्तीस शब्दो में गीता के सार तत्व को दैनिक प्रार्थना में व्यक्त कर दिया। गांधी जी, विनोबा जी और पूज्य गुरूदेव श्री सुन्दर लाल बहुगुणा जी के जीवन में प्रार्थना का विशेष महत्व था। सामाजिक समरसता तथा भावनाओं की बलिष्ठता के लिए गांधी जी के भजन और प्रार्थना में राम का नाम प्रमुख था। उनकी प्रार्थना में सभी धर्मों का सार समाहित है। ऐसे महान दार्शनिक के रूप में गांधी जी ने भविष्य के खतरों को अपनी दूरदृष्टि से बहुत पहले ही महसूस कर लिया था भांप लिया था। पर्यावरण और शिक्षा की दुर्दशा वर्तमान समय में समस्त विश्व के सामने है, ये दोनों विषय गांधी के चिन्तन के मुख्य बिन्दु थे। क्योंकि प्राणी मात्र का भविष्य तथा जीवन इन्हीं दोनों विषयों के द्वारा सुख समृद्धि और खुशहाली से परिपूर्ण रह सकता है। इन पर मंडराते खतरों को अनुभव करते हुए गांधी जी ने राम को तथा विनोबा जी ने गीता को आत्मसात करते हुए एक आदर्श समाज और राष्ट्र के निर्माण की दिशा में जीवनपर्यंत अपने संघर्ष को अनवरत प्रवाहित रखा। एक ओर पर्यावरण मनुष्य के जीवन तथा वातावरण को स्वस्थ रखने के साथ साथ समाज को स्थायी सुख, समृद्धि और खुशहाली दे सकता है वहीं राष्ट्र की समृद्धि के लिए हरित पूंजी का निर्माण भी करता है। इसके साथ ही स्वस्थ पर्यावरण मनुष्य के चिन्तन मनन की शक्ति को बढ़ाकर उसमें अथाह विश्वास भर देता है, स्वस्थ और पवित्र वातारण में भाव के साथ ईश्वरीय शक्ति को आसानी से अनुभव किया जा सकता है इस प्रकार की साधना से मनुष्य के साहस और आत्मबल में अतुलनीय वृद्धि स्वत: ही उत्पन्न हो जाती है। ऐसा मनुष्य स्व प्रेरणा से बिना किसी बाहरी दबाव के सभी प्रकार के व्यसनों दुर्गुणों को तिलांजलि देकर लोक कल्याण और लोक मंगल के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील और विश्वसनीय कर्म योगियों ने गांधी के पर्यावरण चिन्तन को वैश्विक कल्याणकारी भावनाओं के साथ आगे बढ़ाया जिनमें सबसे प्रमुख और विश्वसनीय हिमालय में गांधी जी के सच्चे सिपाही के रूप में विख्यात पर्यावरणविद और चिपको आन्दोलन के प्रणेता पद्मविभूषित पूज्य गुरूदेव श्री सुन्दर लाल बहुगुणा जी थे। जिन्होंने हिमालय के क्षेत्रों में जल, जंगल और जमीन की मुहिम को अनवरत जारी रखते हुए चिपको आन्दोलन को वैश्विक ख्याति दिलाने में कामयाबी हासिल की। उन्होने पहाड़ की आवाज बनकर पहाड़ के पानी और पहाड़ की जवानी तथा सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षों को जीवन के अन्तिम क्षण तक अनवरत जारी रखा। यह सच्चाई है कि गांधी जी के सम्पूर्ण जीवनकाल में उनके विश्वसनीय सहयोगियों की संख्या सौ से भी कम थी। लेकिन इन्हीं विश्वसनीय महानुभावों ने अपने लाखों करोड़ों अनुयायियों के सहारे सम्पूर्ण विश्व में गांधीवाद के परचम को सफलतापूर्वक लहराया।

प्रभु श्री राम ने सत्य अहिंसा और न्याय के मार्ग पर चलकर राम राज का आदर्श स्थापित किया था। यही सिद्धांत गांधी जी और उनके अनुयायियों के अचूक अस्त्र थे जिनके बल पर विपरीत परिस्थितियों के बावजूद देश को आजादी मिली और अन्तत: अंग्रेजों के क्रूर राज से देश को मुक्ति मिली। हम आजाद तो हो गये। लेकिन विपरीत परिस्थतियों से देश कभी उबर न पाये इसके लिए अँग्रेजों ने अपने विद्वान शासक मैकाले की सलाह पर हिन्दुस्तानियों के सोचने समझने की शक्ति पर ताला लगाकर कागज और कलम तक सीमित करने के उद्देश्य से हमारी सभ्यता और संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था को चौपट करने का काम भी कर दिया।

देश में आश्रम पद्धति पर आधारित शैक्षिक ढांचा ध्वस्त करने के उद्देश्य से कान्वेंट शिक्षा पद्धति को बढ़ावा दिया गया जिसके दुष्परिणामों को भी गांधी जी भलीभांति जानते थे इसलिए उन्होंने स्वावलंबन से युक्त संस्कारों पर आधारित बुनियादी शिक्षा पर बिशेष बल दिया था। ताकि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गुण हमारी शिक्षा प्रणाली को मजबूती प्रदान करें और ग्राम स्वराज की संकल्पना के

साथ हमारे ग्रामीण अंचल सशक्त हों सकें। गांधी जी के दर्शन में विकास की बयार गांवों से बहती है शहरों की तरफ। समाज के अन्तिम व्यक्ति के सुख समृद्धि और खुशहाली गांधी के विकास का पैमाना था। लेकिन हुआ इसका एकदम उल्टा शहरों के विकास के चक्कर में प्राकृतिक जंगल कटते चले गये और शहर कंक्रीट के जंगल बनते चले गये। परिणामस्वरूप गांवों से पलायन शहरों पर बढ़ती आबादी का संकट बन गया। यह सच है कि हमारे राष्ट्र के निर्माण और विकास में ऋषि और कृषि का हमेशा ही मुख्य योगदान रहा है।

आज ऋषि तो रहे नहीं कृषि भी दूषित हो चुकी है। ऐसी स्थिति में भविष्य कितना सुखद और समृद्ध होगा यह चिन्तन का विषय है। वास्तव में विकास की गाथा को परिवेश की भाषा में ही लिखा जाना चाहिए ताकि जिनके लिए विकास किया जाना है उनको आसानी से समझ आ सके वरना भाषा की समझ के अभाव में विकास अधूरा ही रह जायेगा। आज शिक्षा और विकास से जो जितना अछूता है वास्तव में वही सुखी है। क्योंकि ये दोनों ही मुद्दे आज भटके हुए हैं।

प्रकृति से स्वयं को अलग करके मनुष्य कभी भी सुखी और सन्तुष्ट नहीं हो सकता है। उसका जीवन सुखद और समृद्ध कदापि नहीं हो सकता चाहें वह स्वयं को झूठी तसल्ली देते हुए कितने ही विकास की दुहायी दे। गांधी जी ने गांव के विकास के लिए पंचायतीराज की मांग की थी जिससे हमारे गांव आत्मनिर्भर बन सकें। लेकिन आज उल्टा हो चला है पंचायतीराज तो अपना विकास कर रहा है और विकास की मांग हो रही है। जबकि सत्यता यही है कि गांव के विकास और आत्मनिर्भर बनने से ही राष्ट्र का विकास होगा और वह स्वत: ही आत्मनिर्भर बन जायेगा। पंचायतीराज के बावजूद आज गांव का विकास भटका हुआ है। बुनियादी शिक्षा का ढांचा अस्त व्यस्त हो गया। संस्कार विहीन शिक्षा किसी काम की नही इससे किसी का भला नहीं हो सकता है।

संस्कारों के अभाव में शिक्षा दो कौड़ी की है। पाश्चात्य संस्कृति के अन्धा अनुसरण करने के चक्कर में हमारी सभ्यता और संस्कार शिक्षा व्यवस्था से अलग हो गये और सामाजिक ताना बाना छिन्न-भिन्न होता गया। बढ़ते शहरीकरण के कारण पाश्चात्य संस्कृति और खानपान ने सोने पर सुहागे का काम कर दिया विकृत मानसिकता ने संयुक्त परिवार परिपाटी का ढांचा भी गिरा दिया और लोगों को एकल परिवार की परिपाटी के साथ एकाकी जीवन पसन्द आने लगा। वर्तमान समय में तेजी से गहराती मानसिक बीमारियों का यह प्रमुख कारण है। पर्यावरण पहले ही दूषित हो गया न पीने लायक शुद्ध जल बचा और न सांस लेने के लिए शुद्ध वायु रासायनिक खादों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से धरती नशेबाज हो गयी। मिट्टी की जगह धूल ने ले ली। जल जंगल और जमीन जीवन की समृद्धि और खुशहाली का मूल हैं ये सब संकटग्रस्त हो गये हैं सोचिए क्या इनके बिना जीवन सम्भव है। इनको समृद्धि प्रदान करने वाले वृक्ष ही धरा पर नहीं रहेंगे तो सब धरा रह जायेगा। वृक्षों के बिना तो जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मनुष्य

को इतना अवश्य समझ लेना चाहिए कि प्रकृति को अपना संतुलन बनाना आता है। वैश्विक महामारी का भयावह दौर सदैव स्मरण रखिये। जिससे जीवन में सबसे ज्यादा प्रेम था उससे ही सबसे ज्यादा दूर रहा जाता था। बर्षों से कमायी गाढ़ी कमायी जिस तिजोरी में रखी थी उसको भी छूने से डर लगता था। जीवन का सच्चा पाठ सिखा दिया था कुदरत ने।

समय न मिलने की दुहायी देने वाला इन्सान अपनी ही गाढ़ी कमायी से बनाये बेशकीमती घरों में अपनों के बीच रहकर भी इन्सान बेचैन हो गया था। खुद जीवन बचाने के लिए आक्सीजन के एक एक कण का महत्व समझ आ गया था। अरबपति लोग भी अस्पतालों के बाहर सड़कों पर आक्सीजन के लिए मुंहमांगी कीमत देने को तैयार थे। लेकिन इन्सानी फितरत है सबकुछ भुलाकर अपने पुराने गणित में बेपरवाह होकर फिर से उलझ गया है। लेकिन सच्चाई यही है कि ऊपर वाले की लाठी में आवाज नहीं होती। इसलिए इन्सान को प्रकृति के साथ खिलवाड़ का खेल बन्द करते हुए उसके प्रति सम्वेदनशीलता बरतनी होगी जल जंगल और जमीन की सुरक्षा और संरक्षण में सुखद और समृद्ध भविष्य छिपा हुआ है। सच्चाई ठीक वैसी ही कड़वी होती है जैसे नीम चढ़ी गिलोय एक तो खुद कड़वी फिर जिस पर लिपटी है वह और भी कड़वा लेकिन असाध्य रोगों का अचूक इलाज की दवा यही है। गम्भीर से गम्भीर बीमारियों को जड़ से समाप्त करने की सामर्थ्य है प्रारम्भिक तौर पर यदि इसका सेवन कर लिया जाये तो काफी हद तक बीमारी को पनपने ही नहीं देती। कोरोना काल में आजमायी गयी रामबाण औषधि है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर कोई गम्भीर से गम्भीर बीमारी भी है तो उसका इलाज भी है लेकिन उसको समाप्त करने की शर्त यही है कि समय पर इलाज हो और स्वयं पर विश्वास हो।

शान्ति और न्याय की स्थापना में सत्य और अहिंसा को अचूक अस्त्र बनाने वाले गांधी जी ने अपने सरल सादगीपूर्ण जीवन में प्रभु श्रीराम के आदर्शों को उतारकर महात्मा के रूप में वैश्विक शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान समय में हमारे लिए सुखद अनुभूति है कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र के प्रति प्रेम और अविस्मरणीय योगदान के कारण जी 20 शिखर सम्मेलन में प्रतिभाग करने वाले प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष के मन में भारत के प्रति सम्मान और विश्वास की भावना बलिष्ठ हुयी है।

हमेशा याद रखिये विश्वास मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है। किसी भी स्तर पर पर्यावरण और शिक्षा से सम्बन्धित कार्य सेवा भाव के साथ धरातल पर होने चाहिए क्योंकि इन पर हमारे नौनिहालों का जीवन टिका हुआ है। यदि सही समय पर इनको सही मार्गदर्शन मिल गया तो यही नौनिहाल हमारे राष्ट्र के उत्थान में मील का पत्थर साबित होंगे। हमारे ग्रामीण अंचलों में अथाह प्रतिभा छिपी हुई है। गांधी जी का पर्यावरण और शिक्षा के प्रति चिन्तन सीधे तौर पर सामाजिक व्यवस्था, जनसाधारण के साथ न सिर्फ राष्ट्र के प्रति शुभ था बल्कि समस्त विश्व के लिए शुभ एवं कल्याणकारी था।

शान्ति और न्याय की स्थापना में सत्य और अहिंसा को अचूक अस्त्र बनाने वाले गांधी जी ने अपने सरल सादगीपूर्ण जीवन में प्रभु श्रीराम के आदर्शों को उतारकर महात्मा के रूप में वैश्विक शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। वर्तमान समय में हमारे लिए सुखद अनुभूति है कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र के प्रति प्रेम और अविस्मरणीय योगदान के कारण जी 20 शिखर सम्मेलन में प्रतिभाग करने वाले प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष के मन में भारत के प्रति सम्मान और विश्वास की भावना बलिष्ठ हुयी है। उनके आतिथ्य में राजघाट नई दिल्ली पर महात्मा गांधी जी की समाधि पर सभी राष्ट्राध्यक्षों द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को सम्मान जनक श्रद्धांजलि अर्पित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सत्य न्याय और अहिंसा के पुजारी के समाधी स्थल, राजघाट पर आकर एक साथ राष्ट्राध्यक्षों के समूह ने इस प्रकार बापू को कभी नमन नहीं किया है। प्रधानमंत्री जी के प्रयास से यह भी सम्भव हो गया है। वैश्विक स्तर पर बापू की विचारधारा को सम्मान सहित सभी ने अंगीकृत किया है, स्वीकार किया है। यह हम सभी

के लिए गौरव की बात है। गर्व का विषय है। गांधी जी ने वैश्विक कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करते हुए समस्त विश्व को एक नया दर्शन दिया है।

सत्य तो यही है कि भावनाओं में पवित्रता और लक्ष्य के प्रति समर्पण का भाव मनुष्य की राह को आसान कर देता है। वैश्विक कल्याणकारी मार्ग तभी प्रशस्त होता है जब पवित्र भावनाओं के साथ लक्ष्य के प्रति समर्पित कोई सन्त स्वभाव महानुभाव अपने आत्मबल व दृढ़ विश्वास और इच्छाशक्ति के साथ आगे कदम बढ़ाता है, चलता है। आज वैश्विक स्तर पर भगवान श्री राम जी के सन्देश के व्यापक प्रसार से आध्यात्मिक जगत में सभी को आनन्द की अनुभूति हो रही है। भगवान श्री रामजी के जीवन आदर्शों तथा मूल्यों को अपनाकर वैश्विक कल्याणकारी भावनाओं के व्यापक प्रसार से आज भारत समस्त विश्व का नेतृत्व करने की शक्ति का प्रतीक बन चुका है। राम राज की संकल्पना को दृढ़ करते हुए का मूलमंत्र सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास अब सम्पूर्ण विश्व के सामने सार्थक और चरितार्थ हो रहा है। मनुष्य जीवन में संस्कारों का प्रवाह सदैव बना रहना चाहिए इससे जीवन का वास्तविक सुख और आनन्द मिलता है साथ ही जीवन उन्नतिशील भी रहता है। मनुष्य जीवन में संस्कारों का प्रवाह सदैव बना रहना चाहिए इससे जीवन का वास्तविक सुख और आनन्द मिलता है साथ ही जीवन उन्नतिशील भी रहता है।

मनुष्य को निराशाजनक परिस्थितियों में भी स्वयं को चिन्ता रूपी विकृति से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए वरना इसी निराशा से उसके मस्तिष्क की सजीवता धीरे धीरे नष्ट होने लगेगी। मस्तिष्क की सजीवता बनाये रखने के लिए संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए संस्कारों के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। संस्कारों का प्रवाह सदैव आगे की ओर एक ही दिशा में होना चाहिए। यदि वह आते गये और मिटते गये तो कुछ फायदा नहीं होगा। जैसे पहाड़ पर गिरा पानी दसों दिशाओं में गिर जाएगा तो उससे नदी नहीं बन सकती है। उसको अपने मार्ग पर बहना होता है। ज्ञान, भक्ति और कर्म मनुष्य जीवन के तीन पांव हैं। इनको हमेशा ही मजबूत करने का प्रयास करते हुये मनुष्य को जीवन के वास्तविक आनंद के साथ आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य को ध्यान रखना चाहिए कि पूर्व की बातों को निरन्तर स्मरण करने से विकार बढ़ते हैं। इसलिए वर्तमान में जीने का प्रयास करना चाहिए। उसको सकारात्मक विचारों और अच्छे भावों के साथ आगे बढ़ते हुए भविष्य को समृद्ध बनाने की दिशा में प्रगतिशील रहना चाहिए। अच्छे विचारों के लिए गुरू व संतों महापुरूषों के सान्ध्यि में रहते हुए उनके सद्विचारों को शान्त स्वभाव से आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। शांताकारम भुजंगशयनम परमेश्वर हजार फनों के शेषनाग की शैय्या पर सोते हुए भी शांत हैं। इसी प्रकार संत कर्म करते हुए रत्ती भर क्षोभ तरंग अपने मानस सरोवर में नहीं उठने देते हैं। जीवन में सन्तो और महापुरूषों के अनुभवों आदर्शों और सद्विचारों को उतारने का प्रयास करना चाहिए ताकि विचारों में पवित्रता बनी रहे।

भटकाव के कारण मनुष्य के व्यक्तित्व की बहुमूल्य ऊर्जाएं विभिन्न दिशाओं में बिखर जाती हैं इसलिए इससे बचने का प्रयास करना चाहिए। आज हमारे माननीय प्रधानमंत्री के भावयुक्त प्रयास समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी साबित हो रहे हैं। अयोध्या जी में भगवान श्रीराम का भव्य मन्दिर और उसमें प्रभु श्री राम जी की भव्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का परचम समस्त विश्व में लहराया है राम राज की बात भी अच्छी है इसमें कोई संदेह नहीं लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को यह बात हमेशा स्मरण रखनी चाहिए कि प्रभु श्रीराम ने जीवनपर्यंत कभी अपने अधिकारों को कर्तव्यों से ऊपर नहीं माना उन्होंने केवल कर्तव्यों को महत्व दिया था।

सत्य, अहिंसा और न्याय के बल पर इतिहास लिखने वाला राष्ट्र आज वैश्विक लोकमंगल का पर्याय बन चुका है।

(सहयोगी विश्वविख्यात पर्यावरणविद और चिपको आन्दोलन के प्रणेता पद्मविभूषित श्री सुन्दर लाल बहुगुणा जी।)

संपर्कः

मो.- 8279642241

खादी और गांधी

डॉ. योगिता जोशी

खादी के बारे में गांधीजी की यह पंक्ति बेहद मशहूर है कि खादी वस्त्र नहीं विचार है। इस देश में इन दिनों ब्रांडेड कपड़ों का दौर है, लेकिन खादी एक ऐसा वस्त्र है, जिसने आजादी के समय एक वैचारिक हथियार के रूप में अपनी विशेष भूमिका अदा की। उस समय आजादी के परवाने खादी पहनकर भारत माता की जय बोलते थे और अंग्रेजो के खिलाफ लड़ाई करते हुए जेल जाते थे। खादी केवल वस्त्र नहीं है, वह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का भी परिचायक है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसे समाज में रहते हुए अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान बनाए रखना होता है। इसी क्रम में सबसे पहले आता है तन ढकने के लिए कपड़ा, इसके लिए मनुष्य विभिन्न प्रकार के परिधानों का निर्माण करता है।यह कहना गलत नहीं होगा कि मनुष्य ने आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में कपड़े का उपयोग किया है।फर्क इतना ही है कि उस समय कपड़े का निर्माण स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर ही होता था। खादी दूसरे वस्तुओं की तरह तन ढकने का काम तो करती ही है लेकिन यह इस ग्रामीण भारत की आत्मा भी है।

औद्योगिकरण के फलस्वरुप भारत में स्थानीय स्तर पर कपड़ा बनाने का काम समाप्त हो गया था। देश सिर्फ रुई उत्पादक बन कर रह गया और यह भी पाश्चात्य देशों में निर्यात कर दी जाती। चरखा, करघा लुप्त एवं स्थानीय कारोबार ठप हो गया था। नतीजा, हम अंग्रेजी शासन के कपड़ों पर ही आने को विवश हो गए। गांधी जी ने जब भारतीयों की यह स्थिति देखी तो उन्होंने महसूस किया कि इस देश का कुटीर उद्योग नष्ट होता जा रहा है। तब उन्होंने प्रेरणा जाग्रत की कि हमें स्वदेशी आंदोलन को तेज करना है। हालांकि महात्मा गांधी के पहले से ही देश में स्वदेशी आंदोलन चल रहा था। स्वदेशी चीजों को स्वीकार करना और विदेशी चीजों का बायकाट करना। इसके लिए वैचारिक लेख भी लिखे जा रहे थे। इस तरह के लेखन करने वालों में एक अग्रणी नाम है पंडित माधव राव सप्रे का, जिन्होंने गांधी जी के आने के वर्षों पहले 'स्वदेशी और बायकाट' नामक एक निबंध लिखा था। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी 'केसरी' के माध्यम से स्वदेशी का प्रचार कर रहे थे। यह वो दौर था, जब गांव में खादी के कपड़े तैयार होते थे। गांधी जी 1915 में जब दोबारा भारत आए, तो उन्होंने खादी की ताकत को पहचाना और उसका इतना प्रचार किया कि खादी आजादी के लिए लड़ने वाले हर सेनानी के शरीर का अनिवार्य हिस्सा बन गई।

गांधी जी ने जब भारतीयों की यह स्थिति देखी तो उन्होंने महसूस किया कि इस देश का कुटीर उद्योग नष्ट होता जा रहा है। तब उन्होंने प्रेरणा जाग्रत की कि हमें स्वदेशी आंदोलन को तेज करना है। हालांकि महात्मा गांधी के पहले से ही देश में स्वदेशी आंदोलन चल रहा था। स्वदेशी चीजों को स्वीकार करना और विदेशी चीजों का बायकाट करना।

दक्षिण अफ्रीका से जब गांधी अपने देश लौटे तो एक साल तक वे थर्ड क्लास ट्रेन में सफर करके पूरे भारत को देखा। समझा। यहाँ के रहन-सहन को देखा। गरीबी को देखा। तभी उन्होंने यह तय कर लिया था कि इस देश के ग्रामीण जीवन का उन्नयन करना है और विदेशी वस्तुओं पर निर्भर रहने की मानसिकता से मुक्ति दिलानी है। इसलिए उन्होंने खादी का प्रचार शुरू किया। स्वतंत्रता एवं स्वदेशी दोनों की प्रतीक बनी खादी इसकी भी बड़ी रोचक कथा है। बरसों से लुप्त हुई तकनीक, औजार, यंत्र आदि के लिए चिंताग्रस्त गांधी को भारत भ्रमण के दौरान गुजरात में गंगाबाई के पास बाँस का चरखा देखने को मिला, जिसे देख कर उनकी खुशी का ठिकाना ना रहा। उसी दिन उसी समय उस बाँस के छोटे से चरखे में भारत के कपड़ा उत्पादन के भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर दिया। यहाँ से खादी का जन्म हुआ।

गांधीजी खुद चरखा चलाते और सूत तैयार करके अपने पहनने बुनने के लिए देते थे । वह कहते थे ''जो काते सो पहने, जो पहने सो काते''। इसलिए गांधीजी का अनुसरण करते हुए देश भर में चरखा आंदोलन चल पड़ा । चरखा संघ का गठन हुआ। जगह-जगह लोग चरखा और तकली चलाकर सूत कातने लगे। गांव-गांव में खादी के वस्त्र तैयार होने लगे । तब लोग खादी पहनकर गर्व का अनुभव भी किया करते थे । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी ने सभी राष्ट्रीय नेताओं एवं समाज सुधारकों को खादीमय बना दिया। लोग यह समझ गए थे कि जो खादी में हैं वे भारतीय हैं, देशभक्त हैं। स्वतंत्रता प्रेमी एवं ब्रिटिश सरकार विरोधी हैं। तब खादी आजादी एवं देशभक्ति की प्रतीक बन गई थी एवं खादी और गांधी एक-दूसरे के पूरक हो गए थे। आज भी जो खादी पहनता है, उसे गांधीवादी नेता ही कहा जाता है। गांधी जी का नारा था, ''विदेशी वस्त्र जलाओ और स्वदेशी पहनोष। इस नारे ने अंग्रेजों को हिला कर रख दिया था। स्वदेशी चिंतन स्वतंत्रता का आंदोलन का हिस्सा बन गया। बड़े-बड़े धनपति देशभक्त दिखने के लिए खादी पहनने लगे। धीरे-धीरे व खादी उनके जीवन का हिस्सा बन गई।

खादी में सूती, रेशमी एवं ऊनी वस्त्रों को शामिल किया गया। उस समय गांधी जी ने ये सुनिश्चित किया कि खादी का काम करने वाले को पूरा पारिश्रमिक मिले। खादी को महत्व समझते हुए ही आचार्य जेबी कृपलानी के नेतृत्व में देश भर में खादी भंडारों की शुरुआत की गई । अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने खादी भंडारो में काम करना शुरू किया। आजादी के पहले जो लोग खादी भंडारों में अपनी सेवाएं दे रहे थे और क्रांतिकारी थे, उन्हें भी स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा दिया गया। तब हालत यह थी कि खादी कार्यकर्ताओं को दूसरे सरकारी कर्मचारियों से अधिक वेतन मिला करता था, क्योंकि वे खादी के उन्नयन का काम कर रहे थे। दुर्भाग्य की बात है कि धीरे-धीरे गांधी की खादी हाशिये पर चली गई और आज हालत यह है कि खादी की बिक्री निरंतर घटती जा रही है। खादी की दैनिक स्थिति देखकर गांधी जी की आत्मा रोती होगी। अगर आज भी हमें स्वदेशी परंपरा का अनुपालन करना है, तो खादी के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान देना होगा । ऐसा करके हम उन्हें लाखों-करोड़ों बुनकरों का भला कर सकेंगे, जो आज भी सूत कातते हैं और खादी वस्त्रों का निर्माण करते हैं। पहले खादी पहनना देश प्रेम एवं स्वंतंत्रता की पहचान थी। आज भी वह बनी हुई है। भविष्य में भी बनी रहे। यही तो चाहते थे बापू। खादी का महत्व सिर्फ कपड़े के रूप में न होकर हमारी अस्मिता और भारतीयता की पहचान भी है। और इस पहचान को कायम रखना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। इस कर्तव्य की पूर्ति हम तभी कर सकेंगे, जब हर घर में खादी का सम्मान हो। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान हर भारतीय को यह संकल्प करना चाहिए कि वह अन्य दूसरी वस्तुओं या वस्त्रों के साथ भी कोई न कोई वस्त्र खादी का जरूर पहने या उपयोग में लाए। चाहे वह खादी की चादर हो, साड़ी हो, कुर्ता-पायजामा, धोती हो। अब तो खादी भी धीरे धीरे काफी परिष्कृत रूप में आ रही है। ऐसी खादी, जिसे पहनकर व्यक्ति का व्यक्तित्व द्विगुणित हो जाता है। गांधी बनना तो बहुत कठिन है। हम गांधीवादी भी शायद न बन सकें, लेकिन गांधीजी के रास्ते पर चलकर खादीवादी तो बन ही सकते हैं ।

संपर्कः
प्लॉट नं.-06, हनुमान नगर, ग्रीन पार्क,
दादी का फाटक, झोटवाड़ा, जयपुर,
राजस्थान-302012

भारत के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण जरूरी

रंजना मिश्र

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, वे सदा से समाज की प्रेरणा स्रोत रही हैं, किंतु विदेशियों के आक्रमण के बाद हमारे देश और समाज में अनेक कुरीतियां व्याप्त होती रहीं, इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय होती चली गई। उनकी शिक्षा पर ध्यान कम दिया जाने लगा और उन्हें घरेलू कामकाजों के लिए ही उपयुक्त बताया गया। उन्हें घूंघट में कैद कर दिया गया तथा विवाह पश्चात घर-गृहस्थी और बच्चे संभालना ही उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी बन गई। समाज में महिलाओं का उत्पीड़न होता रहा और सतीप्रथा, बालविवाह जैसी अनेक कुरीतियों ने भारत में महिलाओं का जीवन अत्यंत दुरूह बना दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाएं धीरे-धीरे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ती रहीं और वर्तमान तक आते-आते उन्होंने समाज में अपनी एक महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित जगह बना ली है। उनके सशक्तिकरण में दशकों लग गए, लेकिन अब महिलाएं समाज में अपना मुकाम बनाने में सफल हो रही हैं। भारतीय महिलाओं में ईमानदारी और उत्साह के साथ कार्य करने की क्षमता, दूरदर्शिता, जीवंतता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता जैसे गुण प्राकृतिक रूप से उनके स्वभाव में निहित रहते हैं। वे सभी चुनौतियों का सामना अपनी शारीरिक व मानसिक ऊर्जा के द्वारा आसानी से कर लेती हैं। आज भारतीय महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे जितनी कुशलता के साथ घर-परिवार संभाल सकती हैं, उतनी ही कुशलता से हर क्षेत्र में बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर सकती हैं। महिलाओं में नेतृत्व करने की क्षमता सहज रूप से विद्यमान होती है। भारत अब प्रगति के पथ पर अग्रसर है, ऐसे में अगर वो अपनी आधी आबादी के सशक्तिकरण व विकास पर धयान नहीं देगा तो सफलता उससे कोसों दूर रहेगी। इसीलिए अब लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देते हुए, लगभग सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है और उन्हें अपनी क्षमता अनुसार महत्वपूर्ण पद और जिम्मेदारियां संभालने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। महिलाएं समाज में

भारतीय महिलाओं में ईमानदारी और उत्साह के साथ कार्य करने की क्षमता, दूरदर्शिता, जीवंतता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता जैसे गुण प्राकृतिक रूप से उनके स्वभाव में निहित रहते हैं। वे सभी चुनौतियों का सामना अपनी शारीरिक व मानसिक ऊर्जा के द्वारा आसानी से कर लेती हैं। आज भारतीय महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे जितनी कुशलता के साथ घर-परिवार संभाल सकती हैं, उतनी ही कुशलता से हर क्षेत्र में बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर सकती हैं।

बदलाव लाने की क्षमता रखती हैं। इसलिए पूरी उम्मीद के साथ कहा जा सकता है कि भारत की महिलाएं अपनी कार्यक्षमता व द्रढ़ इच्छाशक्ति से देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने में पूर्ण रूप से कामयाब होंगी।

जहां आधी आबादी को उनके अधिकार नहीं मिलते, उन्हें दबाया या कुचला जाता है, वो देश या समाज कभी विकास नहीं कर पाता। कोई देश तभी उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है, जब उसके समाज में लैंगिक समानता हो। अर्थात समाज में महिलाओं तथा पुरुषों को समान रूप से दायित्व, अधिकार और रोजगार प्राप्त हों। समाज में भेदभाव की स्थितियां देश व समाज के विकास में बाधा पहुंचाती हैं। भारत की महिलाएं वर्षों से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रही हैं। वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है, किंतु आज भी उन्हें कई पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अधिकतर कार्यस्थल पर महिलाएं शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना झेलती हैं और विरोध करने पर उल्टा उन्हें ही दोषी ठहराया जाता है। वे किसी से इसकी शिकायत न करें, इसके लिए उन्हें कई तरह से परेशान किया जाता है। आज भी कुछ समाज महिलाओं को पर्दे में रखने के पक्षधर हैं। बहुत सी बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर नहीं मिल पाते। उनका छोटी उम्र में विवाह कर दिया जाता है और उन्हें घर गृहस्थी के बोझ तले दबने को मजबूर कर दिया जाता है। कम उम्र में ही मां बन जाने के कारण वे कई रोगों का शिकार हो जाती हैं और कभी-कभी इस कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है। पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को दबा दिया जाता है और उनके व्यक्तित्व को विकसित होने का अवसर नहीं मिल पाता। कई घरों में महिलाओं को घर से बाहर निकल कर नौकरी करने की अनुमति नहीं दी जाती और यदि वे नौकरी करती भी हैं तो उन पर घर और ऑफिस का इतना अधिक बोझ बढ़ जाता है कि मजबूर होकर उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ती है, अर्थात घर के सदस्य घरेलू कामों में उनका हाथ भी नहीं बंटाते। जो महिलाएं घरों में खाना बनाने, झाड़ू पोंछा, बर्तन धोने आदि का काम

करके आजीविका प्राप्त करती हैं, उन्हें भी उनकी मेहनत के अनुसार वेतन प्राप्त नहीं हो पाता। गृहिणियों के कामों को अवैतनिक माना जाता है और उन्हें अपने खर्चे के लिए पति या घर के अन्य सदस्यों पर निर्भर होना पड़ता है।

महिलाओं की तस्करी, घरेलू हिंसा तथा यौन शोषण को रोकने के लिए कई कानून बनाए गए हैं। इसके बावजूद महिलाओं की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हो सका। शायद इसका कारण यह भी है कि महिलाएं कुछ पारिवारिक-सामाजिक विवशताओं के चलते इन कानूनों का अपने पक्ष में उपयोग करने में भी असमर्थ होती हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी है कि अगर वे अपनी समस्या किसी से बताती भी हैं तो वह उसे गंभीरता से नहीं लेता। इसलिए वे चुपचाप अत्याचार सहती रहती हैं या फिर उनसे हारकर अपनी जान दे देती हैं। देश की महिलाएं अब कला, खेल, विज्ञान, तकनीक और रक्षा क्षेत्र जैसे सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। अक्सर देखा जाता है कि जो महिलाएं खेती किसानी के कामों में, मिल और फैक्ट्रियों में बतौर श्रमिक पुरुषों के समान काम करती हैं, उनका पारिश्रमिक पुरुषों से कम होता है। यह भेदभाव अत्यंत चिंताजनक है और इसे दूर किया जाना चाहिए। भारत के संविधान के अनुसार देश में काम करने वाला प्रत्येक नागरिक बिना किसी लैंगिक भेदभाव के समान वेतन पाने का अधिकारी है, तो फिर महिलाओं को उनके हक से वंचित क्यों रखा जाता है? आज 21वीं सदी के पढ़े-लिखे समाज में भी महिलाओं को लेकर पुरुषों के नजरिए में भी कोई ज्यादा बदलाव नहीं आया है। मां-बहन की गालियां और अश्लील जोक्स इसके उदाहरण हैं। कुछ विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति महिलाओं का शारीरिक और मानसिक शोषण करते हैं, जो समाज के लिए बहुत ही चिंताजनक व भयानक स्थिति है। महिलाओं को परेशान करने का एक नया माध्यम अब सोशल मीडिया भी बन चुका है, जहां अश्लील वीडियो, अश्लील मैसेजों द्वारा उनका मानसिक उत्पीड़न किया जाता है। महिलाओं को सम्मान और स्वाभिमान के साथ एक हिंसा मुक्त समाज में जीने के लिए उनकी सामाजिक व कानूनी सुरक्षा बहुत जरूरी है। इसके लिए सामाजिक सहयोग भी बहुत अपेक्षित है, क्योंकि जब तक हमारा समाज महिलाओं के अधिकारों तथा उनकी सुरक्षा को लेकर जागरूक नहीं होगा, तब तक कुछ भी बदलने वाला नहीं है।

सरकार की ओर से महिलाओं की हिंसा तथा यौन शोषण को रोकने और उनके विकास के लिए बहुत से उपाय किए जा रहे हैं। वित्तपोषण सेवाओं के साथ-साथ महिलाओं की दक्षता और रोजगार कार्यक्रम देश की ग्रामीण महिलाओं तक पहुंच रहे हैं। यौन शोषण, घरेलू हिंसा और असमान पारिश्रमिक से संबंधित कानूनों को मजबूती दी जा रही है। इसके अलावा सरकार का 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान भी सफल होता दिख रहा है। आज बेटियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। खेल जगत से लेकर मनोरंजन तक तथा राजनीति से लेकर रक्षा क्षेत्र तक में वे अपना परचम लहरा रही हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं और अपनी सशक्त भूमिका हर क्षेत्र में बखूबी निभा रही हैं। अब वह केवल घर की चहारदीवारी तक ही सीमित नहीं रहीं, बल्कि बाहर निकल कर वो अपने उत्क्रष्ट कार्यों द्वारा परिवार, समाज व देश का नाम रोशन कर रही हैं। इस तरह हम देखते हैं कि महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हो रहा है, लेकिन लिंग भेद अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इस ओर मजबूती से कदम बढ़ाने की जरूरत है। जब तक महिलाओं को बराबरी के अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, उनका जीवन स्तर नहीं सुधरेगा। इसलिए सरकार, नीति निर्माताओं व पूरे समाज को महिलाओं के प्रति जागरूक होना पड़ेगा, उनकी सुरक्षा करनी होगी और हर क्षेत्र में उन्हें समान अवसर प्रदान करने होंगे, तभी हम नए युग में भेदभाव रहित एक नए समाज का गठन करने में सक्षम हो पाएंगे।

सम्पर्क

कानपुर, उत्तर प्रदेश

मो. 9336111418

misraranjana80@gmail-com

नित्यानंद तिवारी की कविताएं

मानव

हम मानव हैं औजार नहीं,
जो जब चाहें परिवर्तित हों
आविष्कृत हों इच्छानुरूप,
संरक्षित हों संवर्धित हों
विस्मृत कर सारे दंभ बुद्धि के,
परम पिता का ध्यान धरो
ले समस सृष्टि संकल्प हृदय,
मानव अस्तित्व प्रदर्शित हो
ईश्वर की हो तुम श्रेष्ठ कृति,
ऋण मुक्ति हेतु परमार्थ करो
सहचरता का शुभ प्रकृति निमित,
तुममे लक्षण परिलक्षित हों
है बुरा नहीं विज्ञान बुद्धि,
या कभी तर्क वैज्ञानिकता
यदि मान सको तज दंभ सकल,
निज अंध चक्षु संशोधित हो
जब–जब मानवता भटकी है,
प्रकृति ने क्रुद्ध प्रहार किया
मानव कुबुद्धि को बतलाओ,
तुम काल हस्त संचालित हो
सब जीव जंतु ईश्वर कृत हैं,
सब हैं प्रकृति के अधिकारी
बचना प्रकोप से संभव है,
यदि सोच प्रकृति अनुमोदित हो

सब तंत्र किल हो जाते हैं,
सब तर्क विकास विवश दिखते
बस आह सुनाई देती है,
जब सहज ज्ञान अवरोधित हो
रावण, कंस, मुगल, डायर या डेंगू,
प्लेग, कोरोना हो
सबका संहार सुनिश्चित है,
जब साथ आपका का मन से हो
आओ मिलकर संकल्प करें,
चलना अब सन्मार्गी बनकर
पुरुषार्थ दिखाना है ऐसा,
सबका कल्याण सुनिश्चित हो

कवि

कवि कुछ ऐसे भाव जगाओ
शब्द व्यर्थ ना जाने पायें
श्रोता–पाठक मगन हृदय से
तेरी जय जयकार लगायें
बहुत हुई प्रियतम की बातें
मिलन, विरह, सौंदर्य की बातें
कलुष, आसुरी मानव मन से
जन–जन को भयमुक्त बनायें
जाति धर्म के मलिन खिलाड़ी
करते राष्ट्रधर्म की बातें
लोकतंत्र को बना मदारी
लाशों पर सरकार बनायें
भूख से मरते बच्चे हर दिन
कृषक गले में फंदा डालें
जनता के बड़बोला मुखिया
अच्छे दिन के स्वप्न दिखायें
संस्कार से शिक्षा वंचित
अस्पताल धनराग सुनायें
ज्ञानसुधा व्हाट्सएप से आकर
तथाकथित विद्वान बनायें

होरी, धनिया, शहर आ गए
स्टार्ट अप ग्यान पा गये
छूटा गांव शहर ना पाये
बैठ अकेले अश्रु बहायें
जागो कवि अब बारी तेरी
रचना को उन्मुक्त बनायें
कर कविता जनमानस की
परिवर्तन का जयघोष सुनायें

पुस्तकें

हर मुश्किलों के हल देती हैं पुस्तकें
हार में जीतने का सबक देती हैं पुस्तकें
तमन्ना है, बनी रहें सहचर यूँ ही पुस्तकें
जिंदगी स्वर्णिम बना देती हैं पुस्तकें
ज़िन्दगी में कठिन दौर आये कभी
और समझ में ना आये कोई रास्ता
जब निराशा सताने लगे हर कदम
हौसला आफ़जाई करें पुस्तकें
हार भी ग़र गये तुम कभी राह में
गिर गये ग़र कभी मंजिले दौड़ में
उठ के फिर से संभलना सिखाया हमें
जीतने का सबक दे गयी पुस्तकें
ग़र हुए ज़िन्दगी में अकेले कभी
छोड़ भागे हमारे हमें प्यार से
प्यार बढ़ता गया शब्द से दिन ब दिन
मुझको लिखना सिखा के गई पुस्तकें
मोह माया में उलझा रहा इस क़दर
ना समझता कभी ज़िंदगी का सफ़र
मुझको समझा गयी मायने ज़िंदगी
मंत्र खुशियों के यूँ दे गयी पुस्तकें

संपर्क:
मो. 8010207580

फोटो में गांधी

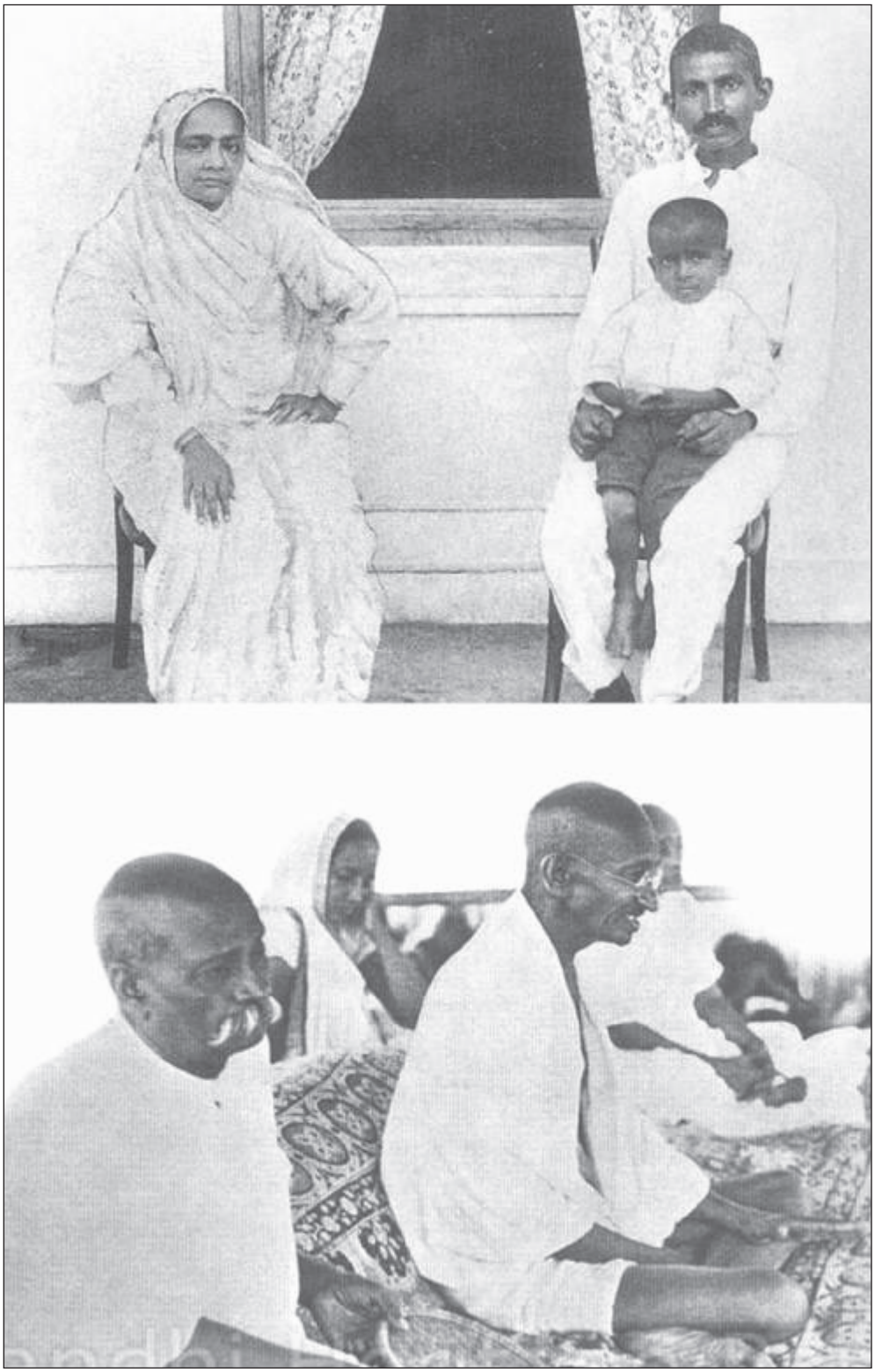

चित्रकारी

नाम - मोनिशा अग्रवाल
कक्षा - 9 वीं
स्कूल - बाल भारती स्कूल,
दिल्ली

नाम - रोशिता कोंनगारिया कक्षा - 8 वीं
स्कूल - ए॰ ई॰ एस॰ डॉ॰ के॰ आर॰ बी एम, स्कूल,
पुष्प विहार, दिल्ली

बाल कविता

बंदर की चल पड़ी दुकान

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

कालू बन्दर ने जंगल में,
किया बड़ा ऐलान।
उछल कूद अब बंद करूँगा,
खोलूँगा दूकान।

सुनते हैं धंधे हैं होता,
सचमुच भारी लाभ।
इस कारण से धंधा करने,
को थे वे बेताब।

लेकिन पास नहीं है पैसा,
कैसे खुले दुकान।
हाथी से उधार ले आये,
धन थोड़ा श्रीमान।

वादा था बस एक माह में,
किये बिना ही देर।
सारा धन वापस कर देंगे,
होगी नहीं अबेर।

खुली दूकान धड़ाधड़ बंदर,
लगा बेचने मॉल।
लेकिन बढ़ने लगी उधारी,
बिगड़े सब सुर ताल।

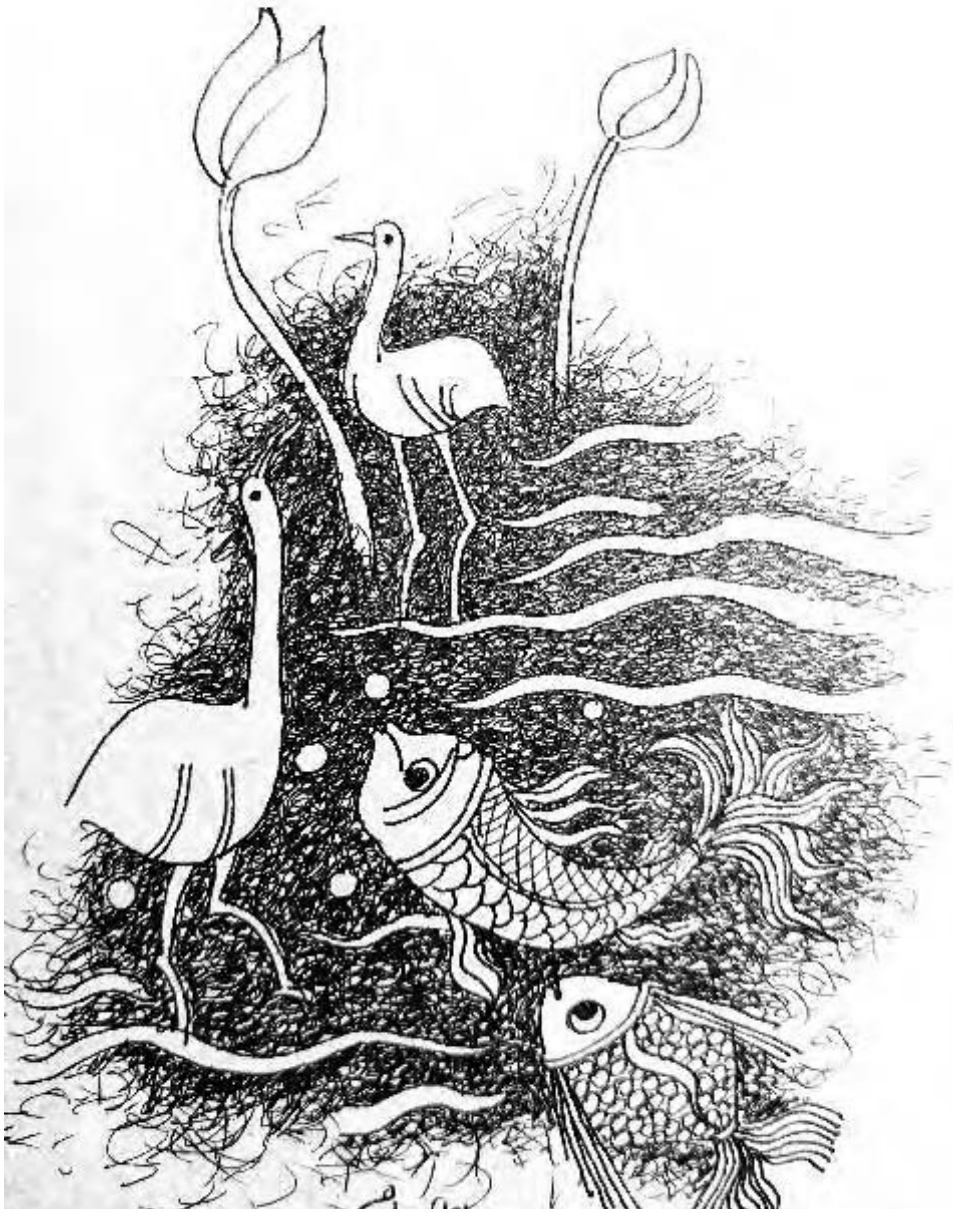

यथा समय हाथी दादा ने,
वापस माँगा कर्ज।
उन्हें देखकर हुआ भयंकर,
कालू को सिर दर्द।

रो-रोकर हाथी दादा से,
किस्सा किया बखान।
हाथी बोला महा गधे हो,
तुम, मूरख नादान।

माल धड़ाधड़ बेचो लेकिन,
करना नहीं उधार।
तुरत वसूली करने से ही,
चल पाता व्यापार।

हाथी दादा की सलाह से,
चलने लगी दुकान।
कालूजी धनवान हो गए,
बढ़ी धरा पर शान।

कर्ज मिला हाथी को वापस,
हाथी जी हैं मस्त।
कालू बन्दर भी दूकान में,
रहते हैं अब व्यस्त।

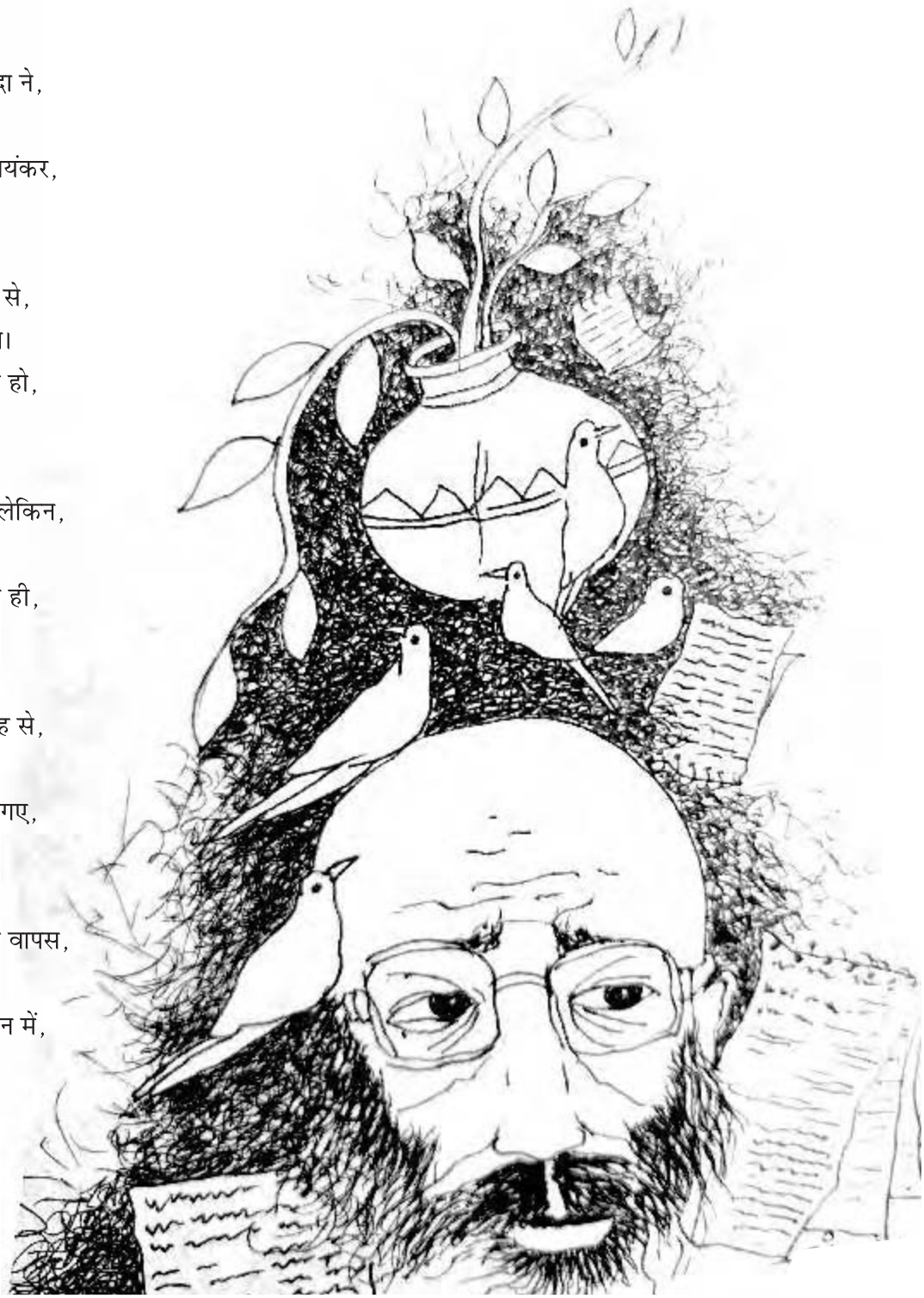

सम्पर्कः
ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर,
जिला-बस्ती (उ.प्र.)- 272124
मो. 7355309428

रजनीकांत शुक्ल के पहेली गीत

(1) मनमोहक पक्षी

खुले वनों में पाया जाता
यह पक्षी शर्मीला,
रंगबिरंगे हैं पर इसके
और रंग है नीला,

बोलो वो है कौन? जो अपने
सिर 'पर' इसे सजाए,
मुरली मधुर बजाता है जो
गोपालक कहलाए,

झूम झूम नाचे, जब बजता
बादल वाला बाजा,
मुकुट सजा है सिर पर इसके
जैसे कोई राजा,

दीमक, चूहे, साँप, छिपकली
फल, अनाज यह खाए,
भोजन की तलाश में घुस
आबादी तक आ जाए,

सोच रहे हो क्या बतलाओ
नहीं कोई वह और,
सुन्दर मनमोहक पर जिसके
राष्ट्रीय पक्षी मोर,

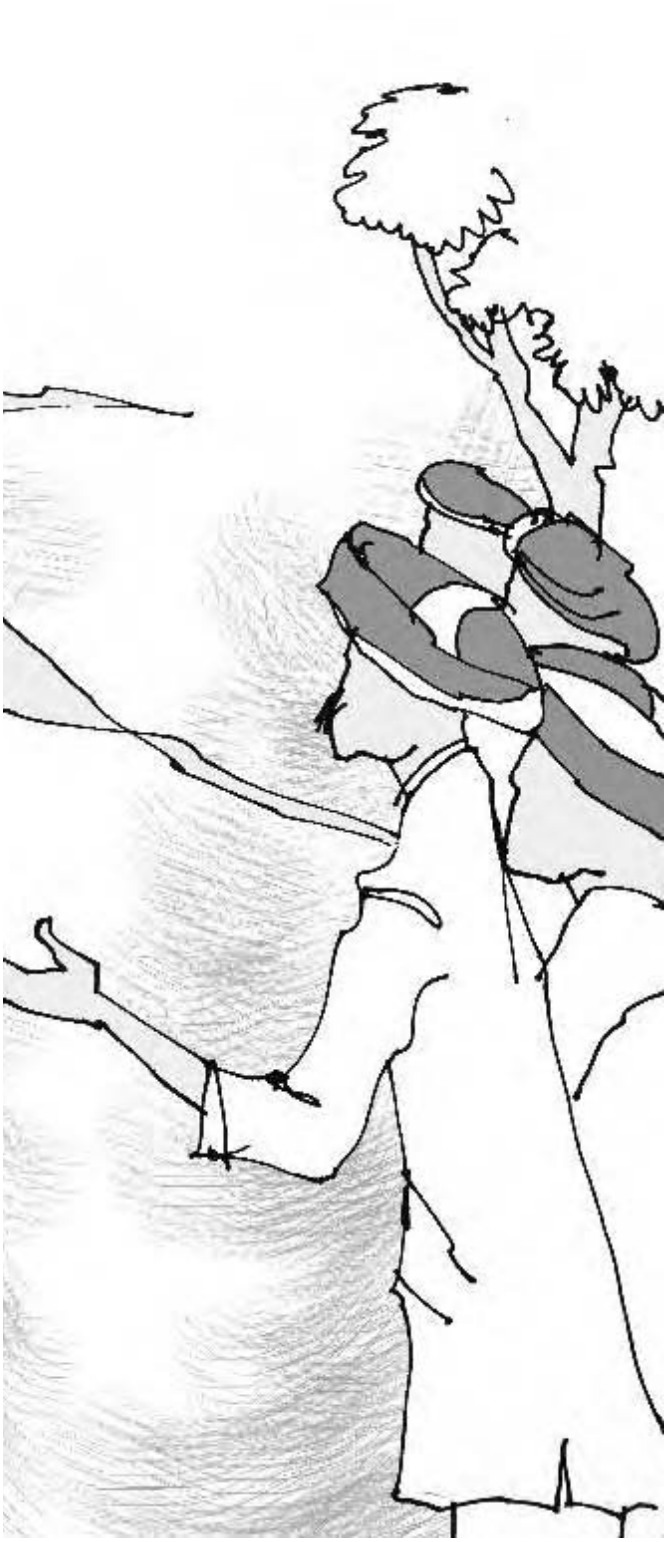

(2) सब्जी नहीं फल

लाते हैं सब्जी बाजार से
फल न जाए ये बाँटे,
इसके सारे ही शरीर पर
उगे हुए हैं काँटे,

मादा फूल बने फल,
नर जो फूल गिरे मुरझाए,
वैसे सब्जी बने,
पके जो खूब तो खाया जाए,

फाइबर खनिज विटामिन का
इसमें भरपूर खजाना,
अच्छा है पर नहीं इसे खा
सकते तुम रोजाना,

तमिलनाडु केरल का इससे
राज्य फल का नाता,
बांग्लादेश श्रीलंका में यह
राष्ट्रीय फल कहलाता,

फल देखो बाजार के सारे
सबसे बड़ा है ये फल,
हारी मानो तो बतलाऊँ
नाम है इसका कटहल,

(3) नहीं झुंड में रहे

बिल्ली का वंशज है पर
यह नहीं झुंड में रहे,
सिर पर मुकुट न कोई
सारा जंगल राजा कहे,

चीखें चिड़ियाँ और बन्दर ये
निकल जिधर जाए,
करे शिकार जीव का
रोटी दाल नहीं भाए,

मारे जो दहाड़ तो समझो
साँसें ठहर गई,
नदिया की लहरों के जैसी
आती लहर नहीं,

इस धरती के लिए हमें है
इनको बचाना,
इतनी कहीं खासियत क्या
तुमने है पहचाना?

छुपकर करे शिकार, शिकारी
है पक्का यह घाघ,
समझे गए या नाम बताऊँ
यह राष्ट्रीय पशु बाघ।

सम्पर्क:
ए-363, सेक्टर-12, प्रताप विहार,
गाजियाबाद, पिन-201009,
मो. 9868815635

जिज्ञासा

भगवती प्रसाद द्विवेदी

बंटी अपने कमरे में एकाग्रचित्त होकर अंकगणित के प्रश्न हल कर रहा था।टीचर ने होमटास्क के लिए पन्द्रह सवाल दे रखे थे।

बंटी अभी चौथे सवाल पर भिड़ा ही था कि पापा की आवाज सुनाई पड़ी, ''बंटी बेटे! जरा इधर तो आना!''

बंटी मन-ही-मन भुनभुनाते लगा।जब भी वह पढ़ रहा होता है, पापा उसे अक्सर बुला लेते हैं।कभी सिगरेट लाने के लिए बाहर भेज देते हैं तो कभी पान लाने के लिए।पापा तो अपने मित्रों के साथ बगल वाले कमरे में चाय पीते हुए ठहाके लगा रहे होते हैं, पर उन्हें क्या पता कि उसकी पढ़ाई में कितना खलल पड़ता है! कभी शोर-शराबा झेलो तो कभी पान-सिगरेट लाने के लिए दौड़ो। आखिर पापा समझते क्यों नहीं कि मुझे कितनी बाधा पहुँचती है पढ़ाई में। और यह किसी एक दिन की बात नहीं है। प्राय: रोज की ही दिनचर्या है।

जब पापा ने दोबारा आवाज लगाई तो बंटी सवाल को जहाँ-का-तहाँ छोड़ उठ खड़ा हुआ। वह तेजी से बगल के ड्राइंग रूम में जा पहुँचा। आज भी चार दोस्त बातें करते हुए चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे।बंटी ने हाथ जोड़कर सबको 'नमस्ते' किया। फिर पापा की ओर मुखातिब हुआ।

पापा ने जेब में हाथ डालकर पचास का एक नोट निकाला। उन्होंने इशारे से अपनी मनपसंद सिगरेट लाने को कहा।

नोट लेकर बंटी बाहर निकला। वह गली से होकर तेज कदमों से पान की गुमटी की ओर बढ़ा। मन-ही-मन वह सोच रहा था कि आखिर लोग सिगरेट पीते क्यों हैं? उसने टोटे पर वैधानिक चेतावनी भी तो पढ़ी थी-'सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।' फिर भी जान-बूझकर पैसे और सेहत की बर्बादी क्या अच्छी बात है? इन बड़ों की बातें भी बड़ी विचित्र हुआ करती हैं।हमें तो तमाम बुराइयों से दूर रहने की सलाह देंगे, किन्तु स्वयं उन्हीं में लिप्त दिखेंगे। अजब विरोधाभास है यह!

बंटी मुस्कुराता हुआ पान की गुमटी के सामने जा पहुँचा। फटाफट सिगरेट खरीदकर वह वापस लौटने लगा। गली में घुसते ही उसने सिगरेट के टोटे को सूँघा। वाह, कितनी अच्छी खुशबू है!तभी तो मम्मी ने जब एक दिन पापा के सिगरेट पीने पर नाराजगी जाहिर की थी, तो उन्होंने कहा था, ''देखो डार्लिंग, सिगरेट ही तो है,जो मन-मस्तिष्क में ताजगी-ही-ताजगी भर देती है!''

बंटी का दोस्त सोनू भी तो कभी-कभी सिगरेट पीता है। उसने तो एक दिन बंटी से भी कहा था, ष्यार, एक कश तो लेकर देखो! मजा आ जाएगा।''

''छि:! यह भी कोई पीने की चीज है! पिलाना ही है तो लस्सी पिलाओ'', बंटी ने जवाब दिया था।

मगर सोनू ने ऐसा मुँह बनाया था, जैसे उसने कोई फालतू बात कह दी हो।

आज बंटी की इच्छा हो रही थी कि कम-से-कम एक बार सिगरेट पीकर देखना चाहिए। आखिर कैसा महसूस होता है इसे पीने से? क्या सचमुच ताजगी लाती है यह?

कुछ सोचते हुए बंटी फिर गुमटी के पास लौटा और छुट्टे पैसे निकाल एक सिगरेट और ले ली। उसे जेब में छिपाकर वह घर की ओर दौड़ा।

ड्राइंग रूम में कदम रखते ही बंटी के दिल की

धड़कन तेज हो गयी। पापा ने यदि पैसे के बारे में पूछा, तब? मगर जब उन्होंने बगैर गिने ही छुट्टे पैसे जेब में रख लिए तो उसने राहत की साँस ली।

उन्होंने महज इतना पूछा,''इतनी देर कहाँ लगा दी?'' ''दुकान में बड़ी भीड़ थी, पापा!'' कहता हुआ बंटी अपने कमरे की ओर बढ़ा।

ज्योंही वह फिर सवाल हल करने बैठा, सबसे पहले उसका ध्यान जेब की ओर गया। सिगरेट को टटोलकर वह आश्वस्त हुआ। सवाल हल करने में अब उसका मन रमा नहीं। बार-बार गलतियाँ हो जाती थीं। अंततः उसने पढ़ाई का कार्य अब सुबह पर टाल दिया और चुपचाप लेट गया। झपकी आते ही वह सपने के संसार में विचरने लगा। उसने सिगरेट पी है और बादलों की तरह हवा में तैर रहा है। हर काम वह कितनी तेजी के साथ करने लगा है। कैसा जादुई करिश्मा है सिगरेट का! सचमुच मजा आ गया---

तभी मम्मी ने उसे झकझोरकर जगा दिया और भोजन करने के लिए कहा। बंटी जमुहाई लेता हुआ उठ बैठा।

खाना खाने के बाद उसने चुपके से किचन से दियासलाई लेकर जेब में रखी और टहलने के बहाने गली में निकल गया। पापा भी तो भोजन करने के बाद सिगरेट जरूर पीते हैं। आखिर मैं भी तो जानूँ कि क्यों लोग इसके पीछे इतने दीवाने हो जाते हैं?

एकान्त पाते ही उसने सिगरेट को मुँह से लगाकर सुलगाते हुए एक जोरदार कश लिया। मगर धुआँ अंदर जाते ही उसे जोरों की खाँसी आई। खाँसते-खाँसते उसका बुरा हाल होने लगा। आँखों में पानी भर आया।

छाती सहलाते हुए जब उसने कुछ राहत की साँस ली तो फिर दूसरा कश लिया। सिगरेट पीते हुए छल्ले बनाकर नाक-मुँह से धुआँ उगलने में कितना मजा आता है!

तभी अचानक पड़ोस के चाचाजी को बगल से गुजरते हुए देखकर बंटी हक्का-बक्का रह गया। डर के मारे उसका बुरा हाल था। हड़बड़ी में सिगरेट को छिपाने की असफल कोशिश में उसके हाथ की दो उँगलियाँ जल गयीं। फिर उसने घबराकर जलती हुई सिगरेट ही जेब में रख ली। मगर ज्योंही चाचाजी मुस्कुराते हुए आगे बढ़े, उसके मुँह से एक हल्की चीत्कार गूँजी। पैन्ट की जेब बुरी तरह जल गयी थी, साथ ही जाँघ के पास की चमड़ी भी।

सिसकते हुए उसने सिगरेट को बाहर निकाला, फिर उसे पैर से रगड़कर बुझाया।

जलन से बंटी की परेशानी काफी बढ़ गयी थी। मगर उससे भी अधिक परेशान था वह पड़ोस के चाचाजी को लेकर। उन्होंने पापा से जरूर सिगरेट पीने की बात कही होगी। फिर पापा की लाल-पीली आँखों का सामना वह कैसे कर सकेगा? पैन्ट जलने के संबंध में जब मम्मी पूछेंगी तो वह क्या जवाब देगा? अभी घर जाने पर मुँह से आती सिगरेट की गंध को वह किस प्रकार छिपा सकेगा?

बंटी ने भयाक्रांत होकर मन-ही-मन सिसकते हुए घर में प्रवेश किया। अपने कमरे में जाकर वह चादर ओढ़ चुपचाप लेट गया। थोड़ी देर के बाद मम्मी आयीं और उसे सोता जान, बिस्तर ठीक-ठाक कर अपने कमरे में चली गयीं। मगर बंटी को तो काफी देर तक नींद ही नहीं आयी। वह आने वाली सुबह के प्रति चिंतित था कि पता नहीं, क्या बीते! मार पड़ने के साथ ही कितनी बदनामी होगी उसकी! सबकी नजरों में गिर जाएगा वह। अब तक पढ़ाई में सदा प्रथम स्थान लाने वाला वह सीधा-सादा होनहार लड़का माना जाता था। मगर कल से सिगरेट पीने वाले बुरे लड़कों में उसकी गिनती होगी। क्या वह बर्दाश्त कर पाएगा?

अगले दिन सुबह बीती, शाम बीती। मगर किसी ने उस संबंध में कोई चर्चा नहीं की।

लेकिन उँगली और पाँव के फफोले उसे बुरी लत की बुराई से आगाह करते रहे। लगता है, चाचाजी ने पापा को कुछ भी नहीं बताया था। हो सकता है, चाचाजी ने भी उसके सिगरेट पीने पर गौर न किया हो। अगर उन्होंने कुछ कहा होता तो पापा अब तक चुप थोड़े ही बैठे रहते! पापा के गुस्सैल स्वभाव से भला कौन अपरिचित है?

आज पापा के दोस्त भी नहीं आए। बंटी होमटास्क बनाने में व्यस्त हो गया।

तभी पापा ने उसके कमरे में प्रवेश किया,

''क्यों बेटे!क्या हो रहा है?''

''होमटास्क बना रहा हूँ,पापा!'' बंटी ने जवाब दिया।

पापा कुर्सी खींचकर बैठ गए। फिर स्कूल की पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछताछ करने लगे।

''बंटी, ड्राइंग रूम से जरा सिगरेट की पैकेट और माचिस लाना तो!'' पापा ने कहा।

बंटी ने दौड़कर उनके आदेश का पालन किया।

उन्होंने दो सिगरेटें बाहर निकालीं और एक स्वयं सुलगाकर पीते हुए, दूसरी बंटी की ओर बढ़ा दी।

''यह क्या,पापा?'' बंटी को काटो तो खून नहीं।

''बंटी, अब तो तुम कुछ बड़े हो गए हो न! बेटा जब कुछ बड़ा हो जाता है तो उसके साथ छोटे भाई के समान बर्ताव करना चाहिए'', फिर उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, ''जब तुमने सिगरेट पीनी शुरू कर ही दी है, तो फिर लुकाव-छिपाव क्यों? हम दोनों बाप-बेटे साथ-साथ पिएँगे।''

''नहीं पापा, ऐसा न कहें। कल रात सिगरेट के प्रति मेरी जिज्ञासा ने मुझे गलत काम करने के लिए प्रेरित कर दिया था। मगर उँगली और जाँघ के पास की जलन ने मुझे सबक दे दिया कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है'', बंटी की आँखों से टप-टप आँसू टपक पड़े, ''पापा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जीवन में फिर दोबारा मैं सिगरेट पीने की बात सोच भी नहीं सकता।''

''इसके लिए मूलतः मैं ही जिम्मेदार हूँ, बेटे!

मैंने ही तुमसे बार-बार सिगरेट मँगाकर इस नशे के प्रति तुम्हारे मन में जिज्ञासा पैदा की। मगर आज से मैं भी तुम्हारे साथ ही सिगरेट को कभी हाथ न लगाने की शपथ लेता हूँ। अभिभावक की बुरी लत का असर तो बच्चों पर होगा ही'', कहते हुए पापा ने सिगरेट को फर्श पर फेंककर पैरों से मसल दिया।

''तो मुझे आपने माफ कर दिया न,पापा?'' बंटी उनके पैरों की ओर झुकने जा ही रहा था कि उन्होंने उसे बाँहों में भर लिया और पीठ थपथपाकर मुस्कान बिखेरते हुए सिर हिलाने लगे।

सम्पर्कः
सर्जना, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
मगध आईटीआई के निकट,
नासरीगंज, दानापुर, पटना-801503(बिहार)
मो. 9304693031

कुक्कू और अप्पू

डॉ सुधा जगदीश गुप्त

कुक्कू हाथी, हाथियों का सरदार था। वह बहुत तेज तर्रार और नियम अनुशासन को मानने वाला था। लेकिन, वह सब का ख्याल भी खूब रखता था।

एक बार नन्हे हाथियों ने कहा– दादा हमें भी कहीं घूमने चलना हैं। सब लोग गर्मी की छुट्टियों में एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं।

कुक्कू ने कहा– ठीक है, ठीक है। हम सब भी साथ–साथ समूह में चलेंगे। रास्ते में कोई ऊधम या शरारत नहीं करेगा। कहीं भी कोई गंदगी नहीं करेगा।

सबने कहा –हमें आपकी शर्त मंजूर है।

नन्हे हाथियों में एक शरारती बच्चा था डम्पी। वह तो बहुत खुश हो रहा था।मन ही मन कहने लगा– मस्ती करेंगे भई, मस्ती।

कुक्कू ने कहा– महाराष्ट्र राज्य कैसा रहेगा क्यों सिल्की, उसने अपनी सलाहकार से पूछा।

सिल्की ने कहा– विचार तो अच्छा है । अच्छी खासी पिकनिक भी हो जाएगी और सैर सपाटा भी हो जाएगा। सभी ने नदी में स्नान किया। अपनी सूंड़ में पानी भरा और जंगल से केले, गन्ने के गट्ठे लाद लिये और चल पड़े एक साथ----।

शरारती डम्पू ने गाना शुरू किया ---'जाने वाले जरा होशियार यहां के हम हैं राजकुमार----- कुक्कू------ सारे हाथियों ने एक स्वर में कहा –कुक्कू----

सभी झुंड में झूमते नाचते गाते चले जा रहे थे।

अचानक डम्पी को लघु शंका लगी। उसने सोचा कुक्कू दादा ने कहा था कहीं भी गंदगी नहीं करना अत: वह रास्ते के जंगल में चला गया, बिना बताए।

झुंड आगे बढ़ गया। जब बाहर निकला तो उसे कोई ना दिखा। वह जंगल में रास्ता भटक गया।

उसने जोर से चिंघाड़ लगाई। कुक्कू ने कहा –अरे, यह तो डम्पी की आवाज है! कहां है यह नटखट !!

सारे हाथी एक साथ चिंघाड़े। लेकिन, बड़ी मुश्किल से डम्पी को जंगल में खोज पाए।

कुक्कू ने फटकार लगाई– कहा था ना, शैतानी नहीं करोगे ।

कुक्कू ने कहा –वो––दादा––मुझे––लघु शंका ––।

चुप रहो, अब चलो। लगता है हम रास्ता भटक चुके हैं। तभी कुछ जंगली हाथियों की आवाज सुनाई दी।

कुक्कू ने भी आवाज लगाई। दोनों दल आवाज के सहारे एक दूसरे के नजदीक आ गए।

कुक्क ने उनके सरदार से हाथ मिलाया। परिचय हुआ। सामने वाले दल के सरदार ने कहा– मेरा नाम अप्पू है। हम झारखंड से चले आ रहे हैं। यह सारे मेरे मित्र हैं।

कुक्क ने भी अपना परिचय दिया– मैं कुक्कू हूं। हम छत्तीसगढ़ से आ रहे हैं। यह हमारे मित्र हैं और इनमें एक शैतान बच्चा भी है डम्पू। यह मेरी सलाहकार सिल्की है।

सबने एक दूसरे से नमस्ते की, गले मिले और फिर बोले चलो।

अप्पू ने कहा–कहां ?

कुक्कू ने कहा– महाराष्ट्र। वहां जंगली हाथी नहीं है। सब हमें देखकर खुश होंगे। लेकिन, हम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।

अप्पू और कुक्कू ने मोर्चा संभाला।

आगे-आगे कुक्कू और पीछे-पीछे अप्पू। बीच में दोनों दल चल रहे थे। चलते-चलते रास्ते में नदी मिली।

कुक्कू ने कहा- यह गोदावरी नदी है। गर्मी बहुत हो रही है। चलो, स्नान किया जाए। यह गंगा नदी के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी नदी है।

तभी डम्पू उछलकर बोला- -आई कहां से इतनी बड़ी नदी?

यह नदी नासिक जिले के त्रयंबक पहाड़ी से निकलती है।

डम्पू फिर उछला- तो फिर चलें हम वहां देखें तो कैसे निकलती है नदी?

कुक्कू और सिल्की ने आंख दिखाई -अभी अपनी मंजिल वह नहीं है।

सॉरी दादा अब नहीं बोलूंगा। उसने अपने बड़े-बड़े कान पड़कर कहा।

अप्पू ने कहा- डम्पू, तुमने अच्छे प्रश्न किये। बच्चों को प्रश्न पूछना चाहिए।

तो फिर यहां कितनी नदियां है अप्पू दादा? और सबसे बड़ी नदी कौन सी है?

अप्पू दादा ने कहा -वैसे तो महाराष्ट्र में १०३ नदियां हैं। डम्पू। लेकिन, बड़ी नदियां गोदावरी ताप्ती और कृष्णा हैं।

डम्पू ने फिर प्रश्न किया-अरे, इनमें भी सबसे बड़ी नदी कौन सी है दादा?

अप्पू ने बताया -इनमें भी सबसे बड़ी गोदावरी नदी है।

वाह! सैर सपाटे के बहाने अच्छी जानकारी हो गई हमें क्यों साथियो?

सभी ने स्वीकार करते हुए एक साथ अपनी सूंड ऊपर उठाई।

कुक्कू दादा ने कहा- हां, हां, यात्रा करने के कई फायदे होते हैं।

अब चलो, स्नान करो। फिर, भोजन करें।

सबने गोदावरी में डुबकी लगाई ।

सूंड से फुहारे छोड़े। बाहर निकलकर गणेश भगवान का स्मरण किया -'देवा हो देवा गणपति देवा तुमसे बढ़कर कौन--- स्वामी तुमसे बढ़कर कौन---।

फिर सबने छककर केले खाए और फिर चले झूमते गाते ----'चल चल मेरे साथी ओ मेरे हाथी------।'

अप्पू और कुक्कू के दल अब शहर में आ गए थे।

शहर में भगदड़ मच गई------

'हाथी दादा आए हैं, केले गन्ने लाए हैं।

कोई छोटे कोई बड़े, सूंड है लंबी कान बड़े।

खंबे जैसे पांव है उनके, कोई झूमते कोई खड़े।

खटर-पटर बजते हैं दांत, छोटी-छोटी उनकी आंख।

लगता जैसे पर्वत झूमे, झूम झूम कर धरती चूमे।

लगते बादल छाए हैं बड़ी मूड़ मटकाए हैं।

हाथी दादा आए हैं, केले गन्ने लाए हैं।'

हाथियों के आने की खबर बिजली की तरह पूरे शहर में फैल गई । वन विभाग के अधिकारी चौकन्ने हो गए। उन्होंने समझा यह हाथी रास्ता भटक गए हैं।

अप्पू और कुक्कू दोनों सूंड मिलाते हुए मुस्कुराए- अरे, इंसानों, हमें पहचानो हम तो आए हैं पिकनिक मनाने।

महाराष्ट्र के वन विभाग ने इन हाथियों के लिए दो एलिफेंट सफारी बनाने का फैसला ले लिया ताकि यह फसलों को या किसी भी प्रकार से लोगों को नुकसान ना पहुंचाएं। कुक्कू और अप्पू के साथी मजे से बिहार करने लगे। पर्यटकों की भीड़ इन्हें देखने आने लगी।

सभी कह रहे थे- देश में हाथियों की संख्या बहुत कम बची है। इसीलिए सरकार इनका संरक्षण कर रही है।

डम्पू ने उछलते हुए कहा- यह हुई ना कोई बात !! अगले बरस फिर हम कहीं भ्रमण का प्रोग्राम बनाएंगे।

संपर्क:

मो. 9424914474

गतिविधियाँ

गांधीवादी मूल्यों को एकीकृत करने हेतु उन्मुखीकरण कार्यशाला

गांधी को समझने की पहल के हिस्से के रूप में, गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने 5 जनवरी, 2024 को कक्षा प्रबंधन प्रथाओं में गांधीवादी मूल्यों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। जीएसडीएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू द्वारा संचालित कार्यशाला में बीएड के लगभग 70 छात्रों ने भाग लिया।

सत्य, अहिंसा, आत्म-अनुशासन, सम्मान, आत्म-संयम, करुणा और सहानुभूति जैसे गांधीवादी सिद्धांतों को आत्मसात करके कक्षा प्रबंधन प्रथाओं को कैसे बेहतर बनाया जाए, इस पर गहन बातचीत हुई। इस अवसर पर गांधी प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधी पर संगोष्ठी का आयोजन

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने 12 जनवरी, 2024 को स्वामी विवेकानन्द की 161वीं जयंती के अवसर पर गांधी दर्शन, राजघाट में ''राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करने के विषय पर स्वयंसेवकवाद पर स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी पर संगोष्ठी'' का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में दो प्रतिष्ठित शख्सियतों, स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी के मूल्यों और विचारधाराओं को स्थापित करना और उन्हें राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करना है। संगोष्ठी में प्रख्यात वक्ता, रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली के स्वामी रुद्रेश्वरानंद महाराज शामिल हुए, जो इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अधयक्षता निदेशक

जीएसडीएस डॉ. ज्वाला प्रसाद ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों जैसे स्कूल, कॉलेज, एनजीओ से लगभग 100 युवाओं ने हिस्सा लिया।

डॉ. ज्वाला प्रसाद ने आगे कहा कि कैसे सच्चाई, ईमानदारी, आत्म-निरीक्षण और निस्वार्थ सेवा का संयोजन परिवर्तनकारी परिवर्तन ला सकता है। दूसरों के उत्थान की सच्ची इच्छा से प्रेरित सेवा कार्यों में संलग्न होकर, व्यक्ति न केवल समाज की बेहतरी में योगदान देते हैं बल्कि गहन आंतरिक परिवर्तन से भी गुजरते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा, यह न केवल व्यक्तिगत जीवन बल्कि राष्ट्र की नियति को भी आकार देने की कुंजी है।

नेताजी का जन्मदिन के अवसर पर

पराक्रम दिवस के अवसर पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा संवाद का आयोजन कर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती मनाई गयी। इस अवसर पर नेताजी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस विषय पर विद्या भारती के डॉ. किशनवीर शाक्य ने व्याख्यान दिया। साथ ही इस अवसर पर समिति के माननीय निदेशक डॉ. ज्वाला प्रसाद जी ने भी अपने विचार साझा किये। जबकि, डॉ. शाक्य के प्रवचन ने उपस्थित लोगों को भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम को आकार देने में दूरदर्शी नेता के प्रभाव की गहरी समझ प्रदान की, डॉ. प्रसाद की टिप्पणियों ने भारत की स्वतंत्रता की खोज में नेताजी के बलिदान और रणनीतिक प्रतिभा के लिए सामूहिक प्रशंसा को जोड़ा। यह उत्सव नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा किए गए बलिदान और स्वतंत्रता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता की मार्मिक याद दिलाता है।

पेंटिंग प्रतियोगिता में 5000 स्कूली बच्चों ने हिस्सा लिया

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने आज 28 जनवरी 2024 को शहीद दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। राजघाट स्थित गांधी दर्शन परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली के विभिन्न इलाकों से 5000 बच्चों ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि गांधी दर्शन के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने कहा कि गांधी जी के विचार 21वीं सदी में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। श्री गोयल ने कहा कि गांधीजी के विचारों को यदि क्रियान्वित किया जाए तो उन अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है जिनका आज विश्व सामना कर रहा है। यह खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गांधी जी के विचारों को बखूबी आगे बढ़ा रहे हैं। इस अवसर पर गांधी दर्शन के निदेशक डॉ. ज्वाला प्रसाद ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा उन्हें सम्मानित भी किया। समिति की पहल और बच्चों की भागीदारी के बारे में बोलते हुए, डॉ. ज्वाला प्रसाद ने कहा, 'रचनात्मकता की शक्ति की कोई सीमा नहीं है, और जब हम देखते हैं कि ये युवा दिमाग अपने विचारों और भावनाओं को कैनवास पर उतारते हैं, तो हमें इसके महत्व की याद आती है। कल्पना और कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना''।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

हमारे आकर्षण

गांधी स्मृति म्यूजियम (तीस जनवरी मार्ग)

* गांधी स्मृति म्यूजियम
* डॉल म्यूजियम
* शहीद स्तंभ
* मल्टीमीडिया प्रदर्शनी
* महात्मा गांधी के पदचिन्ह
* महात्मा गांधी का कक्ष
* महात्मा गांधी की प्रतिमा
* वर्ल्ड पीस गॉंग

गांधी दर्शन (राजघाट)

* गांधी दर्शन म्यूजियम
* चरखे मॉडल प्रदर्शनी
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री (200 लोगों के लिये)
* सेमीनार हॉल (150 लोगों के लिये)
* कॉन्फ्रेंस हॉल (300 लोगों के लिये)
* प्रशिक्षण हॉल : (80 लोगों के लिये)
* ओपन थियेटर
* राष्ट्रीय स्वच्छता केन्द्र
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री

(डॉ. ज्वाला प्रसाद)
निदेशक

प्रवेश निःशुल्क (प्रातः 10 बजे से सायः 6.30 बजे तक), सोमवार अवकाश
हॉल व कमरों की बुकिंग के लिये संपर्क करें– ईमेलः 2010gsds@gmail.com, 011-23392796

gdsnewdelhi www.gandhismriti.gov.in

RNI NO. DELHIN/2018/76242

''आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे
कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं
दे रहा हूँ। मुझे तो यही जता देना है कि
आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून
द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना
नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े
कानून से-अर्थात अन्तरात्मा की आवाज को
स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही
मेरा उद्देश्य है।''

(मोहनदास करमचंद गांधी)

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
(एक स्वायत्त निकाय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक - मुद्रक : स्वामी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092
से मुद्रित तथा गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110092 से प्रकाशित।